



کلیاتِ بانی

پروفیسر گویند پرشاد



کلیات بانی कुल्लियाते बानी

مرتب
گوبند پر ساد
مورقرب
گوبند پر ساد



بورقرب نسلانلار ء فرور ارور بنانلار

وزارت ترقئ انسانئ وسائل، حكومت هند

فرور ارور بون الفب س، 33/9، لشنئ نئوسل، ارورا، جسولا، نئ وقل۔ 110025

© قومی کونسل برائے فروغ اردو زبان، نئی دہلی

2017	:	پہلی اشاعت
550	:	تعداد
180/- روپے	:	قیمت
1964	:	سلسلہ مطبوعات

Kulliyat-e-Bani

By: Gobind Prasad

ISBN :978-93-87510-00-5

ناشر: ڈائریکٹر قومی کونسل برائے فروغ اردو زبان، فروغ اردو بھون، FC-33/9، انسٹی ٹیوٹل ایریا،
جسولہ نئی دہلی 110025 فون نمبر: 49539000 فیکس: 49539099
شعبہ فروخت: ویسٹ بلاک-8، آر کے۔ پورم، نئی دہلی۔ 110066 فون نمبر: 26109746
فیکس: 26108159 ای۔ میل: ncpulsaleunit@gmail.com
ای۔ میل: urducouncil@gmail.com، ویب سائٹ: www.urducouncil.nic.in
طالع: جے۔ کے۔ آئی سی ٹی پرنٹرز، بازار شیاگل، جامع مسجد، دہلی۔ 110006
اس کتاب کی چھپائی ٹی۔ سی۔ 70 GSM، TNPL Maplitho کا نفاذ استعمال کیا گیا ہے۔

کلیات بانی
कुल्लियाते-बानी

پیش لفظ

قومی کونسل برائے فروغ اردو زبان ایک قومی مقتدرہ کی حیثیت سے کام کر رہی ہے۔ اس کی کارگزاریوں میں اردو کی ان علمی و ادبی کتابوں کی مکرر اشاعت بھی شامل ہے، جو اردو زبان و ادب کے ارتقا میں سنگ میل کی حیثیت رکھتی ہیں، اور اب دھیرے دھیرے نایاب ہوتی جا رہی ہیں۔ ہمارا یہ ادبی سرمایہ محض ماضی کا قیمتی ورثہ ہی نہیں، بلکہ یہ حال کی تعمیر اور مستقبل کی منصوبہ بندی میں ہماری رہنمائی بھی کرتا ہے، اور اس لیے اس سے واقفیت بھی نئی نسلوں کے لیے ضروری ہے۔ قومی اردو کونسل ایک منضبط منصوبے کے تحت عہد قدیم کے شاعروں اور نثر نگاروں کی بھی تصنیفات شائع کرنے کی خواہاں ہے، تاکہ اردو کے اس قیمتی سرمائے کو نہ صرف آنے والی نسلوں تک پہنچایا جاسکے، بلکہ زمانے کی دستبرد سے بھی اسے محفوظ کیا جاسکے۔

عہد حاضر میں اردو کے مستند کلاسیکی متون کی حصولیابی، نیز ان کی کمپوزنگ اور پروف ریڈنگ ایک بہت بڑا مسئلہ ہے، لیکن قومی اردو کونسل نے حتی الوسع اس مسئلے پر قابو پانے کی کوشش کی ہے۔ کلیات بانی اسی سلسلے کی ایک کڑی ہے، جسے کونسل ایک ساتھ اردو اور دیوناگری رسم الخط میں شائع کر رہی ہے تاکہ اس کی رسائی قارئین کے اس وسیع حلقے تک بھی ہو سکے، جو اردو شعرو ادب کو دیوناگری رسم الخط کے توسط سے پڑھتے ہیں۔

اہل علم سے گزارش ہے کہ کتاب میں اگر انھیں کوئی خامی نظر آئے تو ہمیں ضرور مطلع کریں تاکہ اگلی اشاعت میں اسے دور کیا جاسکے۔

پروفیسر سید علی کریم

(ارتقائی کریم)

ڈائریکٹر

पेश लफ्ज

कौमी काउंसिल बराए फ़रोग-ए-उर्दू ज़बान एक कौमी मुक्त्तदिरा की हैसियत से काम कर रही है। इसकी कारगुज़ारियों में उर्दू की उन इल्मी व अदबी किताबों की मुकरर इशाअत भी शामिल है, जो उर्दू ज़बानो अदब के इर्तेका में संगे-मील की हैसियत रखती हैं, और अब धीरे धीरे नायाब होती जा रही हैं। हमारा ये अदबी सरमाया महज़ माज़ी का विरसा ही नहीं, बल्कि ये हाल की तामीर और मुस्तफ़बिल की मंसूबाबंदी में हामरी रहनुमाई भी करता है, और इसलिए इससे वाकफ़ियत भी नई नस्तों के लिए ज़रूरी है। कौमी उर्दू काउंसिल एक मुंज़बित मंसूबे के तहत अहदे कदीम के शायरों और नस्रनिगारों की भी तस्नीफ़ात शाए करने की ख़्वाहां है, ताकि उर्दू के इस कीमती सरमाए को न सिर्फ़ आने वाली नस्तों तक पहुंचाया जा सके, बल्कि ज़माने की दस्तबुर्द से भी इसे महफूज़ किया जा सके।

अहदे हाज़िर में उर्दू के मुस्तनद क्लासिकी मुतून की हुसूलयाबी, नीज़ उनकी कम्पोज़िंग और प्रूफ़रीडिंग एक बहुत बड़ा मस्अला है, लेकिन कौमी उर्दू काउंसिल ने हत्तलवसा इस मस्अले पर काबू पाने की कोशिश की है। कुल्लियाते बानी इसी सिलसिले की एक कड़ी है, जिसे काउंसिल एक साथ उर्दू और देवनागरी रस्मुलख़त में शाए कर रही है ताकि इसकी रसाई कारिडन के उस वसीअ हल्के तक भी हो सके, जो उर्दू शैरो अदब को देवनागरी रस्मुलख़त के तवस्सुत से पढ़ते हैं।

अहले इल्म से गुज़ारिश है कि किताब में अगर उन्हें कोई ख़ामी नज़र आए तो हमें ज़रूर मुत्तेला करें, ताकि अगली इशाअत में उसे दूर किया जा सके।

प्रो. सैयद अली करीम
(इर्तेज़ा करीम)
डायरेक्टर

فہرست

1	لنگھوں کے لشکر میں اکیلا: ہانی
34	حرفِ محبر
37	غزلیں
38	1- زماں مکاں تھے مرے سامنے بکھرتے ہوئے
40	2- پتہ پتہ بھرتے شجر پر ابر برستادیکھو تم
44	3- برے بدن میں کھلتا ہوا سا کچھ تو ہے
48	4- نہ منزلیں تھیں، نہ کچھ دل میں تھا، نہ سر میں تھا
52	5- اک گل تر بھی شر سے نکلا
54	6- سیاہ خانہ امید راگماں سے نکل
56	7- تھی اپنی اک نگاہ کہ جس سے ہلاک تھے
58	8- میں اس کی بات کی تردید کرنے والا تھا
60	9- میں ایک بے برگ و بار منظر..... کمر برہند..... میں سننا ہٹ تمام رخ پوش.....
62	10- چاند سے - سارا آسماں خالی
64	11- پی چکے تھے زہر ٹم..... خستہ جاں پڑے تھے ہم..... چھین تھا
66	12- میں پُچپ کھڑا تھا تعلق میں اختصار جو تھا
68	13- سر بر ایک چمکتی ہوئی کلوار تھا میں
70	14- شب، چاند تھا جہاں..... وہیں آفتاب ہے
70	15- قطعہ ادھر ادھر..... کبھی سایا یہیں کہیں
72	16- تھا تھا - مثل آئینہ - تارہ، سر اُلق
74	17- منالینا اُس کو ہنر ہے مرا
76	18- سفر ہے ہر اپنے ڈر کی طرف

फ़ेहरिस्त

लफ़्ज़ों के लश्कर में अकेला: बानी	1
हर्फ़े-मोतबर	34
गज़लें	37
1. ज़माँ मकाँ थे मेरे सामने बिखरते हुए	39
2. पत्ते पत्ते भरते शजर पर अब्र बरसता देखो तुम	41
3. मेरे बदन में पिघलता हुआ सा कुछ तो है	45
4. न मज़िलें थीं, न कुछ दिल में था, न सर में था	49
5. इक गुले-तर भी शरर से निकला	53
6. सियाहख़ानए-उम्मीदे-रायगाँ से निकल	55
7. थी अपनी इक निगाह के जिससे हलाक थे	57
8. मैं इसकी बात की तरदीद करने वाला था	59
9. मैं एक बेबंगों-बार मंज़र... कमर बरहना...	61
मैं सनसनाहट तमाम यख़पोश...	
10. चाँद से सारा आसमाँ ख़ाली	63
11. पी चुके थे ज़हरे-ग़म... ख़स्ता जाँ पड़े थे हम... चैन था	65
12. मैं चुप खड़ा था तअल्लुक में इख़्तिसार जो था	67
13. सर-बसर एक चमकती हुई तलवार था मैं	69
14. शब, चाँद था जहाँ... वहीं आफ़ताब है	71
15. शौला इधर उधर... कभी साया यहीं कहीं	71
16. तन्हा था मिस्ले-आईना तारा, सरे-उफुक	73
17. मना लेना उसको हुनर है मेरा	75
18. सफ़र है मेरा अपने डर की तरह	77

- 78 -19- وہ ستم گرتو بڑا دشمن جاں ہے..... سب کا
- 80 -20- دن کو دفتر میں اکیلا، شب..... بھرے گھر میں اکیلا
- 82 -21- ہر طرف سامنا کوتاہ کمالی کا ہے
- 84 -22- مجھے پتہ تھا کہ یہ حادثہ بھی ہوتا تھا
- 86 -23- گذر رہا ہوں سیہ اندھے فاصلوں سے میں
- 88 -24- مجھ سے اک اک قدم پر پھپھرتا ہوا کون تھا
- 90 -25- عجیب تجربہ تھا بھیڑ سے گزرنے کا
- 94 -26- وہاں سے اب کوئی آئے گا لوٹ کر بھی کیا
- 100 -27- اک دُھواں ہلکا ہلکا سا پھیلا ہوا ہے اُفت تا اُفت
- 102 -28- قدم زمیں پہ نہ تھے..... راہ ہم بدلنے لیتے کیا
- 104 -29- جواز ہر ہے مرے اندر وہ دیکھنا چاہوں
- 106 -30- آج تو رونے کو جی ہو چیسے
- 110 -31- بجائے ہم سفری اتنا رابطہ ہے بہت
- 112 -32- شب وہاں تذکرہ کم ہنراں تھا کتنا
- 114 -33- نہ حریفانہ مرے سامنے آ، میں کیا ہوں
- 116 -34- اگر ہاتی کوئی رشتہ رہے گا،
- 118 -35- ٹنٹھی ہے تجھ میں کوئی شے، اسے نہ غارت کر
- 120 -36- ہوائیں زور سے چلتی تھیں، ہنگامہ بلا کا تھا
- 124 -37- آج کیا لوٹنے لگات میرے آئے!
- 126 -38- وہ، جسے اب تک سمجھتا تھا میں پھر، سامنے تھا
- 128 -39- تمام راستہ پھولوں بھرا ہے میرے لیے
- 130 -40- ادھر کی آئے گی اک زد ادھر کی آئے گی
- 132 -41- وہ مناظر ہیں یہاں، جن میں کوئی رنگ نہ ہو..... بھاگ چلو

19. वो सितमगर तो बड़ा दुश्मने-जाँ है... सब का	79
20. दिन को दफ़्तर में अकेला, शब... भरे घर में अकेला	81
21. हर तरफ़ सामना कोताह कमाली का है	83
22. मुझे पता था कि यह हादसा भी होना था	85
23. गुज़र रहा हूँ सियाह, अंधे फ़ासलों से मैं	87
24. मुझसे इक इक क़दम पर बिछड़ता हुआ कौन था	89
25. अजीब तज़बा था भीड़ से गुज़रने का	91
26. वहाँ से अब कोई आएगा लौट कर भी क्या	95
27. इक धुआँ हल्का हल्का सा फैला हुआ है उफुक़ ता उफुक़	101
28. क़दम ज़मीं पर न थे... राह हम बदलते क्या	103
29. जो ज़हर है मेरे अंदर वो देखना चाहूँ	105
30. आज तो रोने को जी हो जैसे	107
31. बजाए हमसफ़री इतना राब्ता है बहुत	111
32. शब वहाँ तज़िकरए-कमहुनरौं था कितना	113
33. न हरीफ़ाना मेरे सामने आ, मैं क्या हूँ	115
34. अगर बाकी कोई रिश्ता रहेगा,	117
35. छुपी है तुझमें कोई शै, इसे न ग़ारत कर	119
36. हवाएँ ज़ोर से चलती थी, हंगामा बला का था	121
37. आज क्या लौटते लम्हात मयस्सर आये!	125
38. वो, जिसे अब तक समझता था मैं पत्थर, सामने था	127
39. तमाम रास्ता फूलों भरा है मेरे लिए	129
40. इधर की आएँगी इक रौ उधर की आएगी	131
41. वो मनाज़िर हैं यहां, जिनमें कोई रंग न बू... भाग चलो	133

- 134 42- رنگ، لپک سے عاری..... جسم ادا سے خالی
 136 43- جادوگری اس پر کسی صورت نہ چلے گی
 138 44- تیرگی تباہی ہے میں کوئی صدا لگاؤں
 140 45- گرد میرے نہ فصلیں ترے کام آئیں گی

تعلیمیں

- 142
 144 1. پناہ کہیں ملے!
 146 2. آج..... سب ایک جگہ پر
 146 3. معمول
 148 4. دی برتھ آف کرائیسٹ
 150 5. حرف غیر
 152 6. رقص
 154 7. ہر چادر ہشمر
 156 8. کہیں کوئی.....
 160 9. عورت، کتا اور پڑوس
 162 10. لذت
 164 11. سڑھنصر
 164 12. آخری بس
 166 13. بسا اظہار
 168 14. جینا ہے مجھے.....
 168 15. روایت
 170 16. آخری موسم

42. रंग, लपक से आरी... जिस्म अदा से खाली	135
43. जादूगरी इस पर किसी सूरत न चलेगी	137
44. तीरगी बला की है मैं कोई सदा लगाऊँ	139
45. गिर्द मेरे न फसीलें तेरे काम आएँगी	141
नज़्में	143
1. पनाह कहीं मिले!	145
2. आज... सब एक जगह पर	147
3. मामूल	147
4. दी बर्थ ऑफ़ क्राइस्ट	149
5. हर्फ़े-नैर	151
6. रक्स	153
7. हर जादए-शहर	155
8. कहीं कोई...	157
9. औरत, कुत्ता और पड़ोस	161
10. अबद्दीयत	163
11. सफ़रे-मुख़ासर	165
12. आखिरी बस	165
13. बिसाते-इज़हार	167
14. जीना है मुझे...	169
15. रिवायत	169
16. आखिरी मौसम	171

174	حساب رنگ
	دیباچہ *
178	حج
182	غزلیں
184	1- بیگم موج امکانی میں
186	2- فضا کہ پھر آسمان پھر تھی
188	3- خاک و خوں کی دستوں سے باخبر کرتی ہوئی
190	4- اے لحوہ میں کیوں لحوہ لرزاں ہوں بتاؤ
192	5- عجیب رونا سسکتا نواح جاں میں ہے
194	6- ہم ہیں، منظر سیر آسمانوں کا ہے
196	7- کچھ نہ کچھ ساتھ اپنے یہ اندھ حاسن لے جائے گا
198	8- آج اک لہر بھی پانی میں نہ تھی
202	9- اہن بخند نیاسی کے پھلنے کی خبر دے
204	10- سیر فطرت لامکاں اور میں
206	11- دکھ رہا تھا بہت یوں تو میرا بن اُس کا
208	12- کہا نہ تھا کہ انکشاف حال کر نہ پاؤ گے
210	13- کیا زہند تھو میں ہے کہ تو چپ ہے، اُداس بھی
212	14- مخراب نہ قدیل، نہ اسرار نہ جیشیل

हिसाबे-रंग	175
दीबाचा*	
हम्द	179
गज़लें	183
1. पैहम मौजे-इमकानी में	185
2. फ़ज़ा के फिर आसमान भर थी	187
3. खाको-खूँ की वुसअलों से बाख़बर करती हुई	189
4. ऐ लम्हो, क्यों लम्हए तरज़ाँ हूँ बताओ	191
5. अजीब रोना सिसकना नवाहे-जाँ में है	193
6. हम हैं, मंज़र सियह आसमानों का है	195
7. कुछ न कुछ साथ अपने ये अंधा सफ़र ले जाएगा	197
8. आज इक लहर भी पानी में न थी	199
9. इस तुन्द सियाही के पिघलने की ख़बर दे	203
10. सैरे-शबे लामकाँ और मैं	205
11. दमक रहा था बहुत यूँ तो पैरहन उसका	207
12. कहा न था के इकिशाफ़े-हाल कर न पाओगे	209
13. क्या धुंध तुझमें है के तू चुप है, उदास भी	211
14. मेहराब न कंदील, न असरार न तम्सील	213

* मूल पुस्तक 'हिसाबे-रंग' में जनाब अतीकुल्लाह की भूमिका शामिल थी जो प्रस्तुत संकलन में नहीं दी जा रही है।

- 214 -15- نہ جانے کل ہوں کہاں، ساتھ اب ہوا کے ہیں
- 216 -16- عکس کوئی کسی منظر میں نہ تھا
- 222 -17- دل میں خوشبوی اتر جاتی ہے، سینے میں نور ڈھل جاتا ہے
- 224 -18- لباس اُس کا علامت کی طرح تھا
- 226 -19- اِس طرح نارسائی بھی کب تھی، یہ کیا امتحاں ہے
- 228 -20- خود چاک، باطن خبر ایک لمحہ
- 230 -21- کوئی بھولی ہوئی شے طاق ہر منظر پر رکھی تھی
- 232 -22- وہی درد مسلسل، وہی صرف دعا میں
- 234 -23- ہاتھ تھے روشنائی میں ڈوبے ہوئے اور لکھنے کو کوئی عبارت نہ تھی
- 236 -24- آسماں کا سرد سناٹا پگھلتا جائے گا
- 238 -25- اسے دست میں خاموش کسی ڈر سے نہیں تھا
- 238 -26- یہ ذرا سا کچھ اور ایک دم بے حساب سا کچھ
- 242 -27- خطائے بسیار ہوں، ہر زادے
- 244 -28- بہت کچھ منتظر اک بات کا تھا
- 246 -29- کیا گزشتہ وامکاں کے ہے درمیاں دیکھتے جائیں ہم
- 248 -30- اک ڈھیر راکھ میں سے شرر رخن رہا ہوں میں
- 250 -31- آج گھلا، آنکھ میں نغمہ سراہوں کا تھا
- 252 -32- وہ بات بات پہ جی بھر کے بولنے والا
- 254 -33- صدائے دل عبادت کی طرح تھی
- 256 -34- اپنے سینے میں کہیں میری وفا، محفوظ کر لے
- 258 -35- کیا کہوں کیا تھی اُڑان خود میں خبر میں نہ تھا
- 260 -36- مست اُڑتے پرعدوں کو آواز مست دو کہ ڈر جائیں گے
- 262 -37- دیکھیے کیا کیا ستم موسم کی من مانی کے ہیں

15. न जाने कल हों कहाँ, साथ अब हवा के हैं	215
16. अक्स कोई किसी मंज़र में न था	217
17. दिल में खुशबू सी उतर जाती है, सीने में नूर ढल जाता है	223
18. लिबास उस का अलामत की तरह था	225
19. इस तरह नारसाई भी कब थी, ये क्या इम्तिहाँ है	227
20. खुद चाक, नातिन ख़बर एक लम्हा	229
21. कोई भूली हुई शय ताक़े-हर मंज़र पे रखी थी	231
22. वही दर्दे-मुसलसल, वही सर्फ़े-दुआ में	233
23. हाथ थे रौशनाई में डूबे हुए और लिखने को कोई इबारत न थी	235
24. आसमाँ का सर्द सन्नाटा पिघलता जाएगा	237
25. ए दोस्त मैं ख़ामोश किसी डर से नहीं था	239
26. यह ज़रा सा कुछ और एकदम बेहिसाब सा कुछ	239
27. ख़ताए बिसयार हूँ, सज़ा दे	243
28. बहुत कुछ मुंताज़िर इस बात का था	245
29. क्या गुज़िश्ता ओ इम्काँ के है दरमियाँ देखते जाएँ हम	247
30. इक ढेर राख में से शरर चुन रहा हूँ मैं	249
31. आज खुला, आँख में नशशा सराबों का था	251
32. वो बात बात प' जी भर के बोलने वाला	253
33. सदाए-दिल इबादत की तरह थी	255
34. अपने सीने में कहीं मेरी वफ़ा, महफूज़ कर ले	257
35. क्या कहूँ क्या थी उड़ान खुद मैं ख़बर में न था	259
36. मस्त उड़ते परिन्दों को आवाज़ मत दो कि डर जाएँगे	261
37. देखिए क्या क्या सितम मौसम की मनमानी के हैं	263

- 264 -38- ہمیں، لگتی ہوا پر سوار، لے آئی
 266 -39- دیکھتا تھا میں پلٹ کر ہر آن
 268 -40- پھر وہی تو ساتھ میرے، پھر وہی ہستی پرانی
 270 -41- ہر خلش اور خواب کو ایک علامت کہوں
 272 -42- اب آ رہا وہ حیاں کی مشعل کہاں ہے زیب
 274 -43- جانے وہ کون تھا اور کس کو صدا دیتا تھا
 278 -44- حال سنا تھا وہ ایک زمانے کا
 280 -45- صبح کے برہم سی ہوا کس کی تھی

282

تفہیمیں

- 284 -1- 31 دسمبر
 286 -2- کوئی خواب خواب سا قاصد
 290 -3- ادھر کی آواز اس طرف ہے
 292 -4- نہ قائل ہوتے ہیں، نہ زائل
 296 -5- ایک شب رقص: خانہ بدوشوں کے درمیان
 300 -6- نفی سارے حسابوں کی
 302 -7- کیا زمینوں کا اپنا سفر کچھ نہیں
 310 -8- گزشتہ و گزراں، گزشتہ
 320 -9- ن ہم داشتہ کے انتقال پر

38. हमें, लपकती हवा पर सवार, ले आई	265
39. देखता था मैं पलट कर हर आन	267
40. फिर वही तू साथ मेरे, फिर वही बस्ती पुरानी	269
41. हर खलिश और ख़्वाब को एक अलामत कहूँ	271
42. अब आर-पार ध्यान की मिश्रुअल कहाँ है ज़ैब	273
43. जाने वो कौन था और किसको सदा देता था	275
44. हाल सुनाता था वो एक ज़माने का	279
45. सुब्ह के सब्ज़ नम सी नवा किसकी थी	281

नज़्में	283
---------	-----

1. 31 दिसम्बर	285
2. कोई ख़्वाब ख़्वाब सा फ़ासला	287
3. इधर की आवाज़ इस तरफ़ है	291
4. न कायल होते हैं, न जायल	293
5. एक शबे-रक्स, ख़ानाबदोशों के दरमियान	297
6. नफी सारे हिसाबों की	301
7. क्या ज़मीनों का अपना सफ़र कुछ नहीं	303
8. गुज़श्ता व गुज़राँ, गुज़श्ता	311
9. नून. मीम. राशिद के इतिक़ाल पर	321

322	شوقِ شجر
326	یہ غزلیں
330	1- ہری، سنہری خاک اُڑانے والا نہیں
332	2- چلی ڈگر پر، کبھی نہ چلے والا نہیں
334	3- تجھے ذرا ڈکھ: اور سسکنے والا نہیں
336	4- گھٹی گھنیری رات سے ڈرنے والا نہیں
338	5- موڑ تھا کیسا، تجھے تھا کھونے والا نہیں
340	6- کہاں تلاش کروں اب اُفقِ کہانی کا
342	7- دوستو کیا ہے تکلف مجھے مردِ پینے میں
342	8- سرسبز موسموں کا نشہ بھی مرے لیے
344	9- چاند کی اُؤل کرن منظر بہ منظر آئے گی
346	10- شوقِ شجر موسموں کے زیور، نئے نئے سے
348	11- تمام راستہ بھولوں بھرا ہے میرے لیے
350	12- کہاں گئے وہ نگرِ کشادہ
352	13- بسلسلہ روشنِ جنتس کا ادھر میرا بھی ہے
354	14- علی بنِ متقی رویا
356	15- ادھر آ اور ان خیموں کے اندر دیکھ
358	16- صد سوغات، سکوں فردوسِ تبر آ
360	17- غائب ہر منظر میرا
362	18- منظر گیرِ نظرتیری
364	19- وہی ملاقاتِ زُرد بڑو کی

शफ़क़ शजर	323
गज़लें	327
1. हरी सुनहरी ख़ाक उड़ाने वाला मैं	331
2. चली डगर पर, कभी न चलने वाला मैं	333
3. तुझे ज़रा दुःख : और सिसकने वाला मैं	335
4. घनी घनेरी रात से डरने वाला मैं	337
5. मोड़ था कैसा, तुझे था खोने वाला मैं	339
6. कहाँ तलाश करूँ अब उफ़ुक़ कहानी का	341
7. दोस्तो क्या है तकल्लुफ़ मुझे सर देने में	343
8. सर सब्ज़ मौसमों का नशा भी मेरे लिए	343
9. चाँद की अब्बल किरन मंज़र-ब-मंज़र आएगी	345
10. शफ़क़ शजर मौसमों के ज़ेवर, नये नये से	347
11. तमाम रास्ता फूलों भरा है मेरे लिए	349
12. कहाँ गए वो नगर कुशादा	351
13. सिलसिला रौशन तजस्सुस का उधर मेरा भी है	353
14. अली बिन मुत्तक़ी रोया	355
15. इधर आ और इन ख़ेमों के अंदर देख	357
16. सद सीगात, सुकूँ फिरदौस सितम्बर आ	359
17. ग़ायब हर मंज़र मेरा	361
18. मंज़रगीर नज़र तेरी	363
19. वही मुलाक़ात रू-ब-रू की	365

- 366 -20- اک زیاں فردا بہ فردا ہے، یہاں کیا جاگے
- 366 -21- وہی محورے اسے
- 368 -22- بدن بیدار اس کا
- 372 -23- دلوں میں خاک سی اڑتی ہے کیا، نہ جانے کیا
- 374 -24- خواب میں کوئی خبر دکھ دینا
- 376 -25- اے تجھے رنگوں کی شام، اب تک دُھواں ایسا نہ تھا
- 378 -26- عجب تھا ذائقہ اس ایک لس لرزاں آ
- 380 -27- خط کوئی پار پھر الکھ دینا

20. इक जियौं फर्दा-ब-फर्दा है, यहाँ क्या जागिए	367
21. वही मिहवर पुराने	367
22. बदन बेदार उसका	369
23. दिलों में खाक सी उड़ती है क्या, न जाने क्या	373
24. ख़्वाब में कोई ख़बर रख देना	375
25. ऐ बुझे रंगों की शाम, अब तक धुआँ ऐसा न था	377
26. अजब था ज़ायका उस एक लम्से-लरज़ों का	379
27. ख़त कोई प्यार भरा लिख देना	381

لفظوں کے لشکر میں اکیلا: بانی

لفظوں کے لشکر میں اکیلا: بانی

لفظوں کے لشکر میں اکیلا: بانی

حالی اردو کے پہلے نقاد ہیں جنہوں نے اردو شاعری کا باضابطہ تنقیدگی کے ساتھ مطالعہ کیا اور شاعری کے اچھے بُرے پہلوؤں پر مختلف جہات سے روشنی ڈالی۔ اپنے مقدمے میں انہوں نے اردو شاعری کی مختلف اصناف پر عملی تنقید کرتے ہوئے جس صنف سخن کو سب سے زیادہ تنقید کا نشانہ بنایا وہ غزل تھی۔ غزل جیسی مرکزی صنف کو حالی نے ”مخرب اخلاق“ کہہ کر اس کی چلی آرہی پرانی روایت کو ناکافی قرار دیا۔ دراصل گل و بلبل کے ترانے اور حسن و عشق کے فسانے کے محدود اور تنگ دائرے سے نکال کر وہ غزل کے دامن کو سماجی اور اخلاقی سر و کار سے جوڑ کر وسیع بنانا چاہتے تھے۔ اسی لئے انہوں نے کہا کہ ”غزل کی حالت فی زمانہ نہایت ابتر ہے۔ وہ محض ایک بے سود اور دور از کار صنف معلوم ہوتی ہے۔“¹ اور انہوں نے یہ تجویز پیش کی کہ ”غزل کی اصلاح تمام اصناف سخن میں سب سے زیادہ اہم اور ضروری ہے۔“² نہ صرف انہوں نے غزل کی اصلاح کے اصول پیش کئے بلکہ اپنی شاعری کے ذریعہ اسے عملی صورت بھی عطا کی۔ بطور نمونہ چند شعر دیکھئے:

1. مقدمہ شعر و شاعری : خوبصورت حنین حالی ص 178، ایجوکیشنل بک ہاؤس، علی گڑھ۔

2. اصناف ص 179۔

लफ्जों के लश्कर में अकेला: बानी

हाली उर्दू के प्रहले नक्काद हैं जिन्होंने उर्दू शायरी का बाज़ाब्ता संजीदगी के साथ मुताला किया और शायरी के अच्छे बुरे पहलुओं पर मुख्तलिफ जिहात से रीशनी डाली। अपने मुकद्दमे में उन्होंने उर्दू शायरी के मुख्तलिफ असनाफ पर अमली तनकीद करते हुए जिस सिन्फे-सुखन को सबसे ज़्यादा तनकीद का निशाना बनाया वो ग़ज़ल थी। ग़ज़ल जैसी मरकज़ी सिन्फ को हाली ने 'मुख्रिबे-अख़्लाक' कहकर उसकी चली आ रही पुरानी रिवायत को नाकाफी करार दिया। दरअस्ल गुलो-बुलदुल के तराने और हुस्नो इश्क के फसाने के महदूद और तंग दायरे से निकालकर वो ग़ज़ल के दामन को समाजी और अख़्लाकी सरोकार से जोड़कर वसीअ बनाना चाहते थे। इसीलिए उन्होंने कहा कि "ग़ज़ल की हालत फी ज़माना निहायत अबतर है। वो महज़ एक बेसूद और दूर अज़कार सिन्फ मालूम होती है।"¹ और उन्होंने ये तजवीज़ पेश की कि "ग़ज़ल की इस्लाह तमाम अस्नाफे-सुखन में सबसे ज़्यादा अहम और ज़रूरी है।"² न सिर्फ़ उन्होंने ग़ज़ल की इस्लाह के उसूल पेश किए बल्कि अपनी शायरी के ज़रिये उसे अमली सूरत भी अता की। बतौर नमना चन्द शेर देखिए :

1. मुकद्दमाए-शेरो-शायरी: ख़ान्जा अलताफ हुसैन हवली, पृ.178, एजुकेशनल बुक इन्डस, अलीगढ़
2. वही, पृ.179

فرشتے سے بہتر ہے انسان بننا
مگر اس میں پڑتی ہے محنت زیادہ

کاٹئے دن زندگی کے ان یگانوں کی طرح
جو سدا رہتے ہیں چوکس پاسانوں کی طرح

اے عشق تو نے اکثر قوموں کو کھا کے چھوڑا
جس گھر سے سر اٹھایا اس کو بٹھا کے چھوڑا

باپ کا ہے جیسی پسر وارث
ہو ہنر کا بھی اس کے گر وارث

یارب نگاہ بد سے چمن کو بچائیو
ہلہل بہت ہے دیکھ کے پھولوں کو باغ باغ

سلف کی دیکھ رکھو راستی اور راست اخلاقی
کہ اُن کے دیکھنے والے ابھی کچھ لوگ ہیں باقی

دل غنی رکھتے ہیں اے دولت دنیا جو لوگ
تیور اُن کے کبھی تو دیکھ کے شرمائی بھی

غزل سے متعلق حالی کے اس اصلاح پسند نظریہ سے سبھی متفق نہیں تھے۔
نتیجتاً اس کے برعکس حسرت موہانی، جگر مراد آبادی، فانی بدایونی اور اصغر گوٹھ دی جیسے

फ़रिश्ते से बेहतर है इन्सान बनना
मगर इसमें पड़ती है मेहनत ज़्यादा

काटिये दिन जिन्दगी के उन यगानों की तरह
जो सदा रहते हैं चौकस पासबानों की तरह

ऐ इश्क़ तूने अक्सर क़ौमों को खाके छोड़ा
जिस घर से सर उठाया उसको बिठा के छोड़ा

बाप का है जभी पिसर वारिस
हो हुनर का भी उसके गर वारिस

या रब निगाहे-बद से चमन को बचाईयो
बुलबुल बहुत है देखके फूलों को बाग़ बाग़

सलफ़ की देख रखो रास्ती और रास्त अख़्लाकी
कि उनके देखने वाले अभी कुछ लोग हैं बाकी

दिल ग़नी रखते हैं ऐ दीलते-दुनिया जो लोग
तेवर उनके कभी तू देखके शरमाई भी

गज़ल से मुताल्लिक़ हाली के इस इस्ताह पसन्द नज़रिये से
सभी मुत्तफ़िक़ नहीं थे। नतीजतन इसके बरअक्स हसरत मोहानी,
जिगर मुरादाबादी, फ़ानी बदायूनी और असगर गौंडवी जैसे
गज़लगोयों ने जदीद गज़ल का एक नया रंग पेश किया जिसमें

غزل گوئیوں نے جدید غزل کا ایک نیا رنگ پیش کیا جس میں تغزل کا تمام وکمال حسن موجود تھا۔ لیکن یہ رنگ زیادہ دنوں تک غزل کو اس نہ آسکا۔ یہ رنگ ابھی چڑھا ہی تھا کہ ترقی پسند تحریک نے ایک طرف غزل کو جاگیر دارانہ نظام کی پروردہ صنف، کہہ کر اس کی افادیت پر سوالیہ نشان لگا دیا اور دوسری طرف جدید کے پیچیدہ حقائق کو اظہار کرنے میں صنف غزل کو نا کافی اور قاصر مانا؛ ساتھ ہی دوسری طرف غزل میں سیاسی رنگ بھر کے اس کے حقیقی حسن کو اس قدر بدل ڈالا کہ اب اس میں درد کے تصوف، میر کے سوز و گداز، مومن کی نازک خیالی اور غالب کی فلسفہ طرازی کا تصور کرنا بھی محال ہو گیا۔

حسرت، جگر، فانی اور اصغر جیسے شاعروں نے غزل کی جوئی عمارت تیار کی تھی اس میں ترقی پسند تحریک نے دراڑ ڈال دی۔ ایسا شاید اس لئے ہوا کہ ترقی پسند تحریک مارکسی جمالیات کی بنیاد پر کھڑی تھی جس میں سارا زور سماج پر مرکوز تھا اور فرد کا وجود کا عدم ہو کر رہ گیا تھا۔ اس کے نتیجے میں ترقی پسند شاعری میں انفرادی اور داخلی احساسات کی باریک مصوری کے لئے جگہ نہ رہ گئی تھی۔ شاید اس کی ایک وجہ یہ بھی رہی کہ ترقی پسند تحریک میں تبدیلی اقتدار، بھوک، غریبی، استحصال اور انقلاب کا تصور اس قدر حاوی تھا کہ انسانی محبت، رومانس اور حسن فطرت کی طرف نگاہ اٹھا کر دیکھنا بھی کسی گناہ سے کم نہ تھا۔

ترقی پسند تحریک سے تعلق رکھنے والے تخلیق کار ادب اور زندگی کے تئیں ایک خاص نظریہ رکھتے تھے۔ غزل کی اصل دلکشی اور رعنائی اس کی اشاریت میں مضمر ہوتی ہے۔ وہ چاہتے تھے کہ اس اشاریت کو ہندوستانی تناظر میں ڈھال کر اس مخصوص نظریہ حیات کو منصفہ شہود پر لایا جائے جس کا تعلق مارکسی فلسفے سے رہا ہے۔ اس سلسلے میں

तगज़ुल का तमामो-कमाल हुस्न मौजूद था। लेकिन ये रंग ज़्यादा दिनों तक गज़ल को रास न आ सका। ये रंग अभी चढ़ा ही था कि तरक्कीपसंद तहरीक ने एक तरफ गज़ल को 'जागीरदाराना निज़ाम की परवरदा सिन्फ' कहकर उसकी इफ़ादीयत पर सवालिया निशान लगा दिया और दौरे-जदीद के पेचीदा हकाइक को इज़हार करने में सिन्फे-गज़ल को नाकाफी और कासिर माना; साथ ही दूसरी तरफ गज़ल में सियासी रंग भर के उसके हकीकी हुस्न को इस कदर बदल डाला कि अब इसमें दर्द के तसव्वुफ, मीर के सोज़ो-गुदाज़, मोमिन की नाज़ुक ख़याली और ग़ालिब की फ़लसफ़ातराज़ी का तसव्वुर करना भी मुहाल हो गया।

हसरत, जिगर, फ़ानी और असगर जैसे शायरों ने गज़ल की जो नई इमारत तैयार की थी उसमें तरक्कीपसन्द तहरीक ने दराड़ डाल दी। ऐसा शायद इसलिए हुआ कि तरक्कीपसन्द तहरीक मार्क्सि जमालियात की बुनियाद पर खड़ी थी जिसमें सारा ज़ोर समाज पर मरकूज़ था और फ़र्द का वजूद कलअदम होकर रह गया था। इसके नतीजे में तरक्कीपसन्द शायरी में इफ़िरादी और दाख़िली एहसासात की बारीक मुसव्वरी के लिए जगह न रह गयी थी। शायद इसकी एक वजह यह भी रही कि तरक्की पसन्द तहरीक में तब्दीलिए-इक्त्तदार, भूक, ग़रीबी, इस्तिहसाल और इन्क़लाब का तसव्वुर इस कदर हावी था कि इंसानी मुहब्बत, रोमांस और हुस्ने फ़ितरत की तरफ़ निगाह उठाकर देखना भी किसी गुनाह से कम न था।

तरक्कीपसन्द तहरीक से ताल्लुक रखने वाले तख़लीक़कार अदब और जिंदगी के तई एक खास नज़रिया रखते थे। गज़ल की अस्ल दिलकशी और रानाई उसकी इशारियत में मुज़्मर होती है। वो चाहते थे कि इस इशारियत को हिन्दुस्तानी तनाज़ुर में ढालकर उस

احساسات اور ان کے اظہار کے لئے فکر و فن کے جس امتزاج و اتحاد کی ضرورت تھی، ایک عرصے کی جدوجہد کے بعد بھی وہ اظہار کی سطح پر اسے حاصل نہ کر سکے۔ ترقی پسند تحریک سے متعلق زیادہ تر غزل گو غزل کے میدان میں اسی وجہ سے ایک حد تک ناکام رہے۔ ترقی پسند شاعروں میں فیض اور مخدوم کے نام بطور استثنا لئے جا سکتے ہیں جنہوں نے ترقی پسند غزل کو فکری عمق کے ساتھ ساتھ فنی حسن بھی عطا کیا۔ فیض اور مخدوم نے اپنی تخلیقی صلاحیتوں کا استعمال کرتے ہوئے غزل کے روایتی تشبیہات و استعارات اور رموز و علامات کے ساتھ اس طرح کا برتاؤ کیا کہ معنی کی نئی جہات اور شعری اظہار کے نئے دروازے وا ہو گئے۔

آزادی کے ساتھ ہی ملک کو تقسیم کا المیہ بھی تجھے میں ملا۔ ملک دو حصوں میں بٹ گیا۔ تہذیب کے بھی دو ٹکڑے ہو گئے۔ دھرتی اور آسمان بھی بٹ گئے اور اسی کے ساتھ انسان کو بھی بانٹا گیا۔ آزادی سے پہلے عوام نے ملک کی سالمیت کے جو خواب دیکھے تھے، اچانک وہ چور ہو گئے۔ ایک بھائی دوسرے بھائی کو شک و شبہ کی نظروں سے دیکھنے لگا۔ ہندو مسلم جوکل تک ایک تہذیب کے لاینفک جزو تھے ان کے درمیان دین و مذہب کی دیوار کھڑی کر کے ایک تہذیب کے دو ٹکڑے کر دئے گئے۔

ایک طرف تقسیم کا المیہ تھا، دوسری طرف آزادی ملنے کے بعد دیکھے گئے سپنوں کے ٹوٹنے کا سلسلہ۔ سپنوں کے ٹوٹنے کے اس سلسلے نے آدی کو اکیلا اور اجنبی بنا دیا۔ اگرچہ اس اکیلے پن اور اجنبیت کے پس پشت یورپ میں ہوئی دو جنگ عظیم کی تباہ کاریوں کا کچھ کم حصہ نہ تھا۔ یہی وجہ ہے کہ اکیلا پن، اجنبیت، بے چہرگی، شخصیت کا زوال و انحطاط اور شکست و ریخت جیسے رجحانات

मख्सूस नज़रियए-हयात को मनस्सए-शहूद पर लाया जाए जिसका ताल्लुक मावर्सी फ़लसफ़े से रहा है। इस सिलसिले में एहसासात और उनके इज़हार के लिए फ़िक्रो-फ़न के जिस इम्तिज़ाजो-इत्तिहाद की ज़रूरत थी, एक अरसे की जद्दो-जहद के बाद भी वो इज़हार की सतह पर उसे हासिल न कर सके। तरक्कीपसन्द तहरीक से मुताल्लिक ज़्यादातर ग़ज़लगो ग़ज़ल के मैदान में इसी वजह से एक हद तक नाकाम रहे। तरक्कीपसन्द शायरों में फ़ैज़ और मख़दूम के नाम बतौर इस्तिस्ना लिए जा सकते हैं जिन्होंने तरक्कीपसन्द ग़ज़ल को फ़िक्री उमुक के साथ साथ फ़न्नी हुस्न भी अता किया। फ़ैज़ और मख़दूम ने अपनी तख़लीकी सलाहियतों का इस्तेमाल करते हुए ग़ज़ल के रिवायती तश्बीहातो-इस्तिआरात और रमूज़ो-अलामात के साथ इस तरह का बरताव किया कि मानी की नई जिहात और शेरी इज़हार के नये दरवाज़े वा हो गए।

आज़ादी के साथ ही मुल्क को तक़सीम का अलमीया भी तोहफ़े में मिला। मुल्क दो हिस्सों में बँट गए। तहज़ीब के भी दो टुकड़े हो गए। धरती और आसमान भी बँट गए और इसी के साथ इंसान को भी बाँटा गया। आज़ादी से पहले अवाम ने मुल्क की सालमीयत के जो ख़ाब देखे थे, अचानक वो चूर हो गए। एक भाई दूसरे भाई को शको-शुबहा की नज़रों से देखने लगा। हिन्दू-मुस्लिम जो कल तक एक तहज़ीब के लायनफ़क जुच्च थे उनके दरमियान दीनो-मज़हब की दीवार खड़ी करके एक तहज़ीब के दो टुकड़े कर दिये गए।

एक तरफ़ तक़सीम का अलमीया था, दूसरी तरफ़ आज़ादी मिलने के बाद देखे गए सपनों के टूटने का सिलसिला। सपनों के टूटने के इस सिलसिले ने आदमी को अकेला और अजनबी बना

نئی غزل کے خمیر میں شامل ہیں۔ ان سب کے ساتھ نئی غزل میں صنعتی اور مشینی تہذیب سے پیدا ہونے والے سماجی مسائل اور رشتوں کے ریت ہوتے جانے کی السنا کیوں کو بھی فرد اور سماج کے نئے باہمی رشتوں کی صورت میں نشان زد کیا گیا۔ یہی وجہ ہے کہ نئی غزل کا ایک بڑا حصہ ثقافتی انحطاط اور تہذیبی زوال کی کہانی کہتا ہوا سنائی دیتا ہے تو دوسرا وجود اور اپنائیت کے تئیں اصرار کے سبب اظہار کے نئے طریقہ کار کی راہ دکھاتا ہے۔ اس ضمن میں جدیدیت کے علم بردار شمس الرحمن فاروقی کا یہ اقتباس نقل کرنا ناموزوں نہ ہوگا:

”داخلی اور معنوی حیثیت سے میں اس شاعری کو جدید سمجھتا ہوں جو ہمارے دور کے احساس جرم، خوف تنہائی، کیفیت انتشار اور اس ذہنی بے چینی کا کسی نہ کسی نہج سے اظہار کرتی ہو۔ جدید صنعتی اور مشینی اور میکانیکی تہذیب کی لائی ہوئی مادی خوش حالی، ذہنی کھوکھلا پن، روحانی دیوالیہ پن اور احساس بیچارگی کا عطیہ ہے۔ جدید ادب گرتی ہوئی چھتوں، لڑکھڑاتے ہوئے سہاروں اور لا تعداد بھول بھلیوں کے خوف ناک احساس گم کردہ راہی سے عبارت ہے۔“

(لفظ و معنی، ص. 126)

نئی غزل نے جن رجحانات کی پیروی کی کم و بیش ان کا تعلق جدیدیت سے رہا ہے۔ اس لئے نئی غزل کو بالواسطہ طور سے جدیدیت کا بدل بھی مانا جا سکتا ہے۔ ناصر کاظمی سے پہلے بھی یوں تو غزل میں کہیں کہیں نئی غزل کے آثار دکھلائی

दिया। अगरचे इस अकेलेपन और अजनबीयत के पसे-पुश्त यूरोप में हुई दो जंगे-अज़ीम की तबाहकारियों का कुछ कम हिस्सा न था। यही वजह है कि अकेलापन, अजनबियत, बेचेहरगी, शख़्सियत का ज़वालो-इन्हितात और शिकस्तो-रेख़्त जैसे रूजहानात नई ग़ज़ल के ख़मीर में शामिल हैं। इन सबके साथ नई ग़ज़ल में सनअती और मशीनी तहज़ीब से पैदा होने वाले समाजी मसाइल और रिश्तों के रेत होते जाने की अलमनाकियों को भी फ़र्द और समाज के नए बाहमी रिश्तों की सूरत में निशानज़द किया गया। यही वजह है कि नई ग़ज़ल का एक बड़ा हिस्सा सकाफ़ती इन्हितात और तहज़ीबी ज़वाल की कहानी कहता हुआ सुनाई देता है तो दूसरा वजूद और अपनाइयत के तई इसरार के सबब इज़हार के नए तरीक़ए-कार की राह वा करता है। इस ज़िम्न में जदीदियत के अलमबरदार शमसुर्रहमान फ़ारूकी का ये इक्तिबास नक्ल करना नामौज़ूँ न होगा:

“दाख़िली और मानवी हैसियत से मैं उस शायरी को जदीद समझता हूँ जो हमारे दौर के एहसासे-जुर्म, ख़ौफ़े-तन्हाई, कैफ़ीयते-इन्तिशार और उस ज़हनी बेचैनी का किसी न किसी नहज से इज़हार करती हो। जदीद सनअती और मशीनी और मिकानीकी तहज़ीब की लाई हुई माददी खुशहाली, ज़हनी खोखलापन, रूहानी दीवालीयापन और एहसासे बेचारगी का अतिया है। जदीद अदब गिरती हुई छतों, लड़खड़ाते हुए सहारों और लातादाद भूल-भुल्लइयों के ख़ौफ़नाक एहसासे-गुमकर्दा राही से इबारत है।”

(लफ़ज़ो-मानी, पृ.126)

नई ग़ज़ल ने जिन रूजहानात की पैरवी की कमोबेश उनका ताल्लुक़ जदीदियत से रहा है। इसलिए नई ग़ज़ल को बिलवास्ता तौर

پڑتے ہیں، لیکن نئی غزل کا باضابطہ آغاز ناصر کاظمی سے مانا گیا ہے۔ ناصر کاظمی کے ساتھ شکیب جلالی، ابن انشا غلیل الرحمن اعظمی، وحید اختر، ظفر اقبال، منیر نیازی، احمد مشتاق، حسن نعیم، مظہر امام، شہر یار اور سلطان اختر وغیرہ کی غزلوں میں جہاں ایک طرف جدید حسیّت کی حدیں وسیع ہوتی گئیں وہیں دوسری طرف طرز تکلم اور حسن ادا کی سطح پر جُدا ہونے کے باوجود ان کی غزلوں میں روایت کا رنگ و آہنگ بھی دکھائی دیتا ہے۔ ناصر کاظمی جنہیں نئی غزل کا علم بردار مانا گیا ہے، ان کے بارے میں اکثر نقاد یہ قبول کرتے ہیں کہ وہ میر و فراق سے متاثر تھے۔ ناصر کاظمی ہی نہیں بلکہ ان کے معاصر شعرا کسی نہ کسی سطح پر غزل کی چلی آرہی روایت سے رشتہ بنائے ہوئے دکھائی پڑتے ہیں۔ اس سے صاف ظاہر ہوتا ہے کہ جدیدیت کا چہرہ روایت کے اندر ہی تشکیل پاتا ہے۔

بہر حال، نئی غزل کے منظر نامے میں جن شاعروں کو اپنے قابل ذکر تخلیقی کارناموں کی وجہ سے اہم مانا گیا ہے، بانی ان میں سے ایک ہیں۔ یوں تو ہر زمانے کی ادبی تحریکات میں احساس کی زمین اور اظہار کے طریقہ کار ایک جیسے نہیں رہتے، لہذا بانی کی شعری حسیّت کی ساخت اپنے معاصر شعرا سے بہت کچھ الگ رہی۔ ساتھ ہی اس شعری حسیّت کے اظہار اور ترسیل کا مخصوص ڈھنگ بھی انہیں اپنے معاصرین میں ایک الگ شناخت عطا کرتا ہے۔ بانی ان جدید شاعروں میں ہیں جنہوں نے روایت کے لباس کو لایعنی سمجھ کر اتار نہیں پھینکا اور نہ ہی آنکھ موہ کر جدیدیت کو فیشن کی طرح اوڑھ لیا۔ بلکہ انہوں نے روایت اور جدیدیت میں توازن قائم رکھا۔ اس توازن میں نئے اور پرانے کے درمیان ایک عجیب کشش اور تناؤ بھرا رشتہ ہے۔ بانی کی شاعری

से जदीदियत का बदल भी माना जा सकता है। नासिर काज़मी से पहले भी यूँ तो ग़ज़ल में कहीं कहीं नई ग़ज़ल के आसार दिखाई पड़ते हैं, लेकिन नई ग़ज़ल का बाज़ाब्ता आगाज़ नासिर काज़मी से माना गया है। नासिर काज़मी के साथ शकेब जलाली, इब्ने इंशा, ख़लीलुर्रहमान आज़मी, वहीद अख़्तर, ज़फ़र इक़बाल, मुनीर नियाज़ी, अहमद मुश्ताक़, हसन नईम, मज़हर इमाम, शहरयार और सुलतान अख़्तर वगैरह की ग़ज़लों में जहाँ एक तरफ़ जदीद हिस्सियत की हदें वसीअ होती गई वहीं दूसरी तरफ़ तर्ज़े-तकल्लुम और हुस्ने-अदा की सतह पर जुदा होने के बावजूद उनकी ग़ज़लों में रिवायत का रंगो-आहंग भी दिखाई देता है। नासिर काज़मी जिन्हें नई ग़ज़ल का अलमबरदार माना गया है, उनके बारे में अक्सर नक्क़ाद ये कबूल करते हैं कि वो मीरो-फ़िराक़ से मुतास्सिर थे। नासिर काज़मी ही नहीं बल्कि उनके मआसिर शोरा किसी न किसी सतह पर ग़ज़ल की चली आ रही रिवायत से रिश्ता बनाए हुए दिखलाई पड़ते हैं। इससे साफ़ ज़ाहिर होता है कि जदीदियत का चेहरा रिवायत के अंदर ही तश्कील पाता है।

बहरहाल, नई ग़ज़ल के मंज़रनामे में जिन शायरों को अपने काबिले-ज़िक्र तख़लीक़ी कारनामों की वजह से अहम माना गया है, बानी उनमें से एक हैं। यूँ तो हर ज़माने की अदबी तहरीकात में एहसास की ज़मीन और इज़हार के तरीक़ए-कार एक जैसे नहीं रहते, लिहाज़ा बानी की शेरी हिस्सियत की साख़्त अपने मुआसिर शोरा से बहुत कुछ अलग रही। साथ ही इस शेरी हिस्सियत के इज़हार और तरसील का मख़्सूस ढंग भी इन्हें अपने मआसिरीन में एक अलग शिनाख़्त अता करता है। बानी उन जदीद शायरों में है

میں دراصل اس تناؤ کا تعلق اس جمالیاتی احساس سے ہے جو دور جدید سے تعلق رکھنے والے فرد اور سماج، فطرت (nature) اور انسان اور لفظ و معنی کے درمیان تناؤ بھرے رشتوں کی نئی جہتوں کی تشریح کرتا ہے۔

بانی نے جس زمانے میں شاعری کی شروعات کی اس وقت جہاں ایک طرف شاعری احساس کو انوکھا رخ دینے کی جدوجہد چل رہی تھی وہیں دوسری طرف کلاسیکی شاعری سے بھی استفادہ کرنے کا رجحان کم نہ تھا۔ جیسا کہ پہلے ذکر کیا گیا ہے کہ ناصر کاظمی کی شاعری پر میر اور فراق کا اثر تھا اور خود ناصر کاظمی نے بھی اپنے ایک مضمون میں اس کا اعتراف کیا ہے، بانی بھی اپنے دور کے اس رجحان سے خود کو محفوظ نہیں رکھ سکے۔ دراصل بانی روایت کو ایک سلسلے کی شکل میں قبول کرتے ہیں۔

تو بھی زنجیر بہ زنجیر بڑھا ہے مری سمت

ساتھ میرے بھی روایت ہے، نیا میں کیا ہوں

بانی کی غزلوں میں روایت کے اس اعتراف کو کبھی موضوعات کی سطح پر تو کبھی بندش الفاظ کی شکل میں دیکھا جاسکتا ہے۔ بطور نمونہ میر اور بانی کے دو شعر پیش خدمت ہیں۔ پہلے میر کا یہ شعر دیکھئے:

مرگ اک ماندگی کا پتہ ہے

یعنی آگے چلیں گے دم لے کر

خیال کی یکسانیت کے لحاظ سے اب بانی کا یہ شعر دیکھئے:

ابھی ہونا ہے مجھے اور کہیں جا کے طلوع

ڈو بے مہر کے ہمراہ بجھا میں کیا ہوں

जिन्होंने रिवायत के लिबास को लायानी समझकर उतार नहीं फेंका और न ही आँख मूँद कर जदीदयत को फैशन की तरह ओढ़ लिया। बल्कि उन्होंने रिवायत और जदीदयत में तवाजुन कायम रखा। इस तवाजुन में नए और पुराने के दरमियान एक अजीब कशमकश और तनाव भरा रिश्ता है। बानी की शायरी में दर अस्ल इस तनाव का तअल्लुक उस जमालियाती अहसास से है जो दौर-जदीद से तअल्लुक रखने वाले फर्द और समाज, फितरत और इंसान और लफ़्जो-भानी के दरमियान तनाव भरे रिश्तों की नई जहतों की तशरीह करता है।

बानी ने जिस ज़माने में शायरी की शुरूआत की उस वक़्त जहाँ एक तरफ़ शेरी अहसास को अनोखा रुख़ देने की जद्दो-जहद चल रही थी वहीं दूसरी तरफ़ क्लासीकी शायरी से भी इस्तिफ़ादा करने का रुजहान कम न था। जैसा कि पहले ज़िक्र किया गया है कि नासिर काज़मी की शायरी पर मीर और फिराक़ का असर था और खुद नासिर काज़मी ने भी अपने एक मज़्मून में इसका ऐतराफ़ किया है, बानी भी अपने दौर के इस रुजहान से खुद को महफूज़ नहीं रख सके। दरअस्ल बानी रिवायत को एक सिलसिले की शक्ल में कबूल करते हैं।

तू भी जंजीर-ब-जंजीर बढ़ा है मेरी सप्त
साथ मेरे भी रिवायत है, नया मैं क्या हूँ

बानी की गज़लों में रिवायत के इस ऐतराफ़ को कभी मौजूआत की सतह पर तो कभी बँदिशे-अल्फ़ाज़ की शक्ल में देखा जा सकता है। बतौर नमूना मीर और बानी के दो-दो शेर पेशे-ख़िदमत हैं। पहले मीर का ये शेर देखिये:

میر اور بانی کے یہ دونوں شعر ہمارا دھیان اس فلسفے کی طرف مبذول کرتے ہیں جس میں حیات کو کبھی نہ ختم ہونے والے سلسلے کے روپ میں دیکھا گیا ہے۔ اب میر صاحب کا یہ دوسرا شعر دیکھئے:

آوارگانِ عشق کا پوچھا جو میں نشاں
مشیتِ غبار لے کے صبا نے اڑا دیا
میر کے شعر کو دھیان میں رکھ کر اب بانی کا یہ شعر دیکھئے:
رُخ ہوا کا کوئی جب پوچھتا اس سے بانی
مٹھی بھر خاکِ خلا میں وہ اڑا دیتا تھا

دونوں شعر پڑھنے کے بعد یہ واضح ہو جاتا ہے کہ موضوع کے اعتبار سے دونوں میں دور تک کوئی یکسانیت نہیں ہے، پھر بھی بانی کا شعر پڑھتے ہی اچانک دھیان میر کے شعر کی طرف چلا جاتا ہے۔ دھیان جانے کا سبب شعری احساس یا شعری تجربے کی یکسانیت نہیں ہے تو کیا چیز ہے جس سے بانی کے شعر میں میر کے شعر کی بازگشت محسوس ہوتی ہے۔ 'مشیتِ غبار' کے برعکس 'مٹھی بھر خاک' اور 'صبا نے اڑا دیا' کے برعکس 'خلا میں وہ اڑا دیتا تھا' اور 'پوچھا جو میں نشاں' کے برعکس 'کوئی جب پوچھتا اس سے بانی' جیسے کلموں کو رکھ کر پڑھنے سے یکبارگی یہ بھرم ہونے لگتا ہے کہ بانی نے میر کے شعر کو سامنے رکھ کر یہ شعر کہا ہے۔

احساسِ ذات اور مسئلہ وجود جدید ادب کے اہم رجحانات میں سے ایک ہے۔ اسی سے پیدا ہونے والے تناؤ، ٹوٹن، اجنبی پن اور احساسِ لامعنیت نے جدید انسان کو تشکیک اور اکیلے پن کے نجر ویرانے میں لاکھڑا کیا۔ آزادی

मर्ग इक माँदगी का वक्फ़ा है
यानी आगे चलेंगे दम ले कर

खयाल की यकसानियत के लिहाज़ से अब बानी का ये शेर
देखिये:

अभी होना है मुझे और कहीं जा के तुलूअ
डूबते मेहर के हमराह बुझा मैं क्या हूँ

मीर और बानी के ये दोनों शेर हमारा ध्यान उस फलसफ़े
की तरफ़ मब्ज़ूल करते हैं जिसमें हयात को कभी न ख़त्म होने वाले
सिलसिले के रूप में देखा गया है। अब मीर साहब का ये दूसरा शेर
देखिये:

आवारगाने-इश्क़ का पूछा जो मैं निशाँ
मुश्ते-गुबार लेके सबा ने उड़ा दिया
मीर के शेर को ध्यान में रख कर अब बानी का ये शेर
देखिये:

रुख़ हवा का कोई जब पूछता उससे बानी
मुट्ठी भर खाक़ ख़ला में वो उड़ा देता था

दोनों शेर पढ़ने के बाद ये वाज़ेह हो जाता है के मौज़ू के
एतबार से दोनों में दूर तक कोई यकसानियत नहीं है, फिर भी बानी
का शेर पढ़ते ही अचानक ध्यान मीर के शेर की तरफ़ चला जाता

کے بعد، خاص طور سے چھٹی دہائی کے ختم ہوتے ہوتے نئی رشتوں سے لے کر سماجی رشتوں تک میں شکست و ریخت کا عمل بہت صاف دکھائی دیتا ہے۔ شکست و ریخت کے اس عمل کا سب سے زیادہ اثر انسان کے روحانی و جذباتی رشتوں پر پڑا۔ نئی غزل کا ایک بڑا حصہ ان نئے رشتوں کا اظہار ہے جس میں رشتوں کی روحانی و جذباتی وسعت کی جگہ تناؤ بھرے رشتوں نے لے لی۔ بانی کی شاعری میں بھی ٹوٹے بکھرنے اور وجود کے مٹنے جانے اور شخصیت کے نابود ہوتے جانے کو جگہ جگہ دیکھا جاسکتا ہے۔ اس ضمن میں بانی کے چند اشعار ملاحظہ ہوں:

اک بکھرتی ہوئی ترتیب بدن ہو تم بھی
راکھ ہوتے ہوئے منظر کے سوا میں کیا ہوں

زماں مکاں تھے مرے سامنے بکھرتے ہوئے
میں ڈھیر ہو گیا طول سفر سے ڈرتے ہوئے

ٹوٹ بکھری : کوئی شے تھی ایسی
جس نے قائم کی ہماری پہچان

ذرا چھوا تھا کہ بس پیڑ آگرا مجھ پر
کہاں خبر تھی کہ اندر سے کھوکھلا ہے بہت

اسی کے ساتھ تقسیم کے لیے سے پیدا ہونے والی در بدری اور ہجرت نے درد کوئی زمین اور عشق کوئی فضا عطا کی۔ نتیجتاً نئی غزل میں ایک طرف گہری انسانی

है। ध्यान जाने का सबब शोरी एहसास या शोरी तज़बे की यकसानियत नहीं है तो क्या चीज़ है जिस से बानी के शेर में भीर के शेर की बाज़ग़शत महसूस होती है। 'मुश्ते-गुबार' के बरअक्स 'मुट्ठी भर खाक' और 'सबा ने उड़ा दिया' के बरअक्स 'ख़ला में वो उड़ा देता था' और 'पूछा जो मैं निशों' के बरअक्स 'कोई जब पूछता उससे बानी' जैसे टुकड़ों को रखकर पढ़ने से यकबारगी ये भ्रम होने लगता है कि बानी ने भीर के शेर को सामने रख कर ये शेर कहा है।

एहसासे-ज़ात और मसअलए-वजूद जदीद अदब के अहम रुजहानात में से एक है। इसी से पैदा होने वाले तनाव, टूटन, अजनबीपन और एहसासे-लायानियत ने जदीद इंसान को तश्कीक और अकेलेपन के बंजर वीराने में ला खड़ा किया। आज़ादी के बाद, खास तौर से छटी दहाई के ख़त्म होते होते निजी रिश्तों से लेकर समाजी रिश्तों तक में शिकस्तो-रेख़्त का अमल बहुत साफ़ दिखाई देता है। शिकस्तो-रेख़्त के इस अमल का सबसे ज़्यादा असर इंसान के रूहानी-ओ-जज़्बाती रिश्तों पर पड़ा। नई ग़ज़ल का एक बड़ा हिस्सा उन नए रिश्तों का इज़हार है जिसमें रिश्तों की रूहानी-ओ-जज़्बाती वुसअत की जगह तनाव भरे रिश्तों ने ले लीया। बानी की शायरी में भी टूटने बिखरने और वजूद के मिटते जाने और शख़्सीयत के नाबूद होते जाने को जगह जगह देखा जा सकता है। इस ज़िम्न में बानी के चन्द अशआर मुलाहिज़ा हों :

इक बिखरती हुई तरतीबे-बदन हो तुम भी
राख़ होते हुए मंज़र के सिवा मैं क्या हूँ

ہمدردی کی شمولیت ہوئی تو دوسری طرف رشتوں کی تلخی نے طنز کی شکل اختیار کر لی۔ اس سلسلے میں ایک غزل کے تین شعر دیکھئے:

وہ ٹوٹتے ہوئے رشتوں کا حسنِ آخر تھا
کہ چپ سی لگ گئی دونوں کو بات کرتے ہوئے

عجب نظارہ تھا بہتی کا اس کنارے پر
سبھی مچھڑ گئے دریا سے پار اترتے ہوئے

میں ایک حادثہ بن کر کھڑا تھا رستے میں
عجب زمانے مرے سر سے تھے گزرتے ہوئے

نئی غزل کو پڑھنے کے بعد ذہن میں جس کردار کی تصویر ابھرتی ہے اس میں ایک احساس لامحدید دکھائی پڑتی ہے۔ اس کے اندر ایک خالی پن ہے۔ اپنے گھر خاندان میں رہ کر بھی وہ اپنے آپ کو اکیلا اور انجمنی پاتا ہے۔ وہ سر سے پاؤں تک ہمیشہ ایک احساس بے گناہی میں گھرا ہوا لگتا ہے۔ اس کا دل تشکیک میں مبتلا ہے۔ اس بدلتی ہوئی تصویر کے پیچھے صدیوں سے چلے آ رہے دستور حیات اور روایتی سماج کا اچانک سرے سے بدل جانا ہے۔ بانی کی غزلوں میں نئی غزل کے کردار کی تصویر آسانی کے ساتھ دیکھی جاسکتی ہے۔

जहाँ मक़ाँ थे मेरे सामने बिखरते हुए
मैं ढेर हो गया तूले-सफ़र से डरते हुए

टूट बिखारी कोई शाय थी ऐसी
जिसने क़ायम की हमारी पहचान

ज़रा छुआ था कि बस पेड़ आ गिरा मुझ पर
कहाँ ख़बर थी कि अंदर से खोखला है बहुत

इसी के साथ तक़सीम के अलमीये से पैदा होने वाली दर-बदरी और हिजरत ने दर्द को नई ज़मीन और इश्क़ को नई फज़ा अता की। नतीजतन नई ग़ज़ल में एक तरफ़ गहरी इंसानी हमदर्दी की शामिलियत हुई तो दूसरी तरफ़ रिश्तों की तल्ख़ी ने तंज़ की शक़ल इस्त्रियार कर ली। इस सिलसिले में एक ग़ज़ल के तीन शेर देखिए:

वो टूटते हुए रिश्तों का हुस्ने-आख़िर था
कि चुप सी लग गई दोनों को बात करते हुए

अजब नज़ारा था बस्ती का उस किनारे पर
सभी बिछड़ गए दरिया से पार उतरते हुए

मैं एक हादसा बनकर खड़ा था रस्ते में
अजब ज़माने मेरे सर से थे गुज़रते हुए

کوئی بھی گھر میں سمجھتا نہ تھا مرے دکھ سکھ
اک اجنبی کی طرح میں خود اپنے گھر میں تھا

اس قدر خالی ہوا بیٹھا ہوں اپنی ذات میں
کوئی جھونکا آئے گا جانے کدھر لے جائے گا

بھرے شہر میں اک بیاباں بھی تھا
اشارہ تھا اپنے ہی گھر کی طرف

ایک اک قصہ بے معنی کا
سلسلہ تیری نظر سے نکلا

اندر اندر یک بہ یک اٹھے گا طوفان نفی
سب نشاط نفع سب رنج ضرر لے جائے گا

وہی ہوا کہ تکلف کا حسن بیچ میں تھا
بدن تھے قرب جہی لس سے بکھرتے ہوئے

انداز گفتگو تو بڑے پر تپاک تھے
اندر سے قرب سرد سے دونوں ہلاک تھے

नई गज़ल को पढ़ने के बाद ज़हन में जिस किरदार की तसवीर उभरती है उस में एक एहसासे-लायानियत दिखाई पड़ती है। उसके अंदर एक ख़ालीपन है। अपने घर ख़ानदान में रहकर भी वो अपने आपको अकेला और अजनबी पाता है। वो सर से पाँव तक हमेशा एक एहसासे-बेगानगी में घिरा हुआ लगता है। उसका दिल तशकीक में मुब्तिला है। इस बदलती हुई तसवीर के पीछे सदियों से चले आ रहे दस्तूरे-हयात और रिवायती समाज का अचानक सिरे से बदल जाना है। बानी की गज़लों में नई गज़ल के किरदार की तसवीर आसानी के साथ देखी जा सकती है :

कोई भी घर में समझता न था मेरे दुख सुख
इक अजनबी की तरह मैं खुद अपने घर में था

इस कदर ख़ाली हुआ बैठा हूँ अपनी ज़ात में
कोई झोंका आएगा जाने किधर ले जाएगा
भरे शहर में इक बियाबाँ भी था
इशारा था अपने ही घर की तरफ़

एक इक कि स्सए-बे मानी का
सिलसिला तेरी नज़र से निकला

अंदर अंदर यक-ब-यक उट्टेगा तूफ़ाने-नफी
सब निशाते-नफ़अ सब रंजे-जरर ले जाएगा

رفاقت کیا ، کہاں کے مشترک خواب
کہ سارا سلسلہ شبہات کا تھا

نئی غزل دراصل نئے انسان کے پیدا ہونے کی تکلیف کا نام ہے۔ نئی غزل
کا شاعر اپنی ایک نئی دنیا رچنے کی تمنائے نئے افق کی تلاش میں سرگرم ہے۔
اڑ چلا وہ اک نیا خاکہ لئے میں سر اکیلا
صبح کا پہلا پرندہ آسماں بھر میں اکیلا

بانی شدید احساس اور جذبے کے شاعر ہیں۔ اس کے باوجود ان کی شاعری
میں ایسے حصے یا پہلو کم ہی ملیں گے جہاں وہ سٹیجی جذباتیت اور سستے رومان کی مہین
جال پٹے ہوں۔ دراصل ان کی شعری لفظیات عشق اور درد کے گہرے احساس کو
تجربیدیت کی انگلیوں سے چھو کر اظہار کو ایک نئی تخلیقی توانائی سے بھر دیتی ہے۔ لیکن
ان کی تجربیدیت محض مجرد پیکروں سے عبارت نہیں ہے بلکہ اس میں مختلف و متنوع
تصویری رنگ پائے جاتے ہیں جس کی وجہ سے موضوعات میں نئی جان اور حسن
ادا میں نئی دھڑکنیں پیدا ہو جاتی ہیں۔ اس تجربیدیت کی ایک خاص خوبی یہ بھی ہے
کہ اس میں نگر و فن کا معتدل و متوازن امتزاج بنا رہتا ہے۔

کس لمس کی تحریر ہوں محراب ہوا پر
کس لفظ کا مفہوم فرواں ہوں بتاؤ

वही हुआ कि तकल्लुफ का हुस्न बीच में था
बदन थे वरुबे-तहीलम्स से बिखरते हुए

अंदाजे-गुफतगू तो बड़े पुरतपाक थे
अंदर से वरुबे-सर्द से दोनों हलाक थे

रफ़ाक़त क्या, कहीं के मुश्तरक ख़वाब
कि सारा सिलसिला शुब्हात का था

नई ग़ज़ल दरअस्ल नए इंसान के पैदा होने की तकलीफ़ का नाम है। नयी ग़ज़ल का शायर अपनी एक नई दुनिया रचने की तमन्ना लिए नए उफ़ुक की तलाश में सरगर्म है।

उड़ चला वो इक नया ख़ाका लिए सर में अकेला
सुब्ह का पहला परिंदा आसमाँ भर में अकेला
बानी शदीद अहसास और जज़्बे के शायर हैं। इसके बावजूद उनकी शायरी में ऐसे हिस्से या पहलू कम ही मिलेंगे जहाँ वो सतही ज़ब्बातियत और सस्ते रूमान की महीन जाली बुनते हों। दरअस्ल उनकी शेरी लफ़िज़यात इश्क़ और दर्द के गहरे एहसास को तज़रीदियत की उंगलियों से छूकर इज़हार को एक नई तख़्तीकी तवानाई से भर देती है। लेकिन उनकी तज़रीदियत महज़ मुजरद पैकरो से इबारत नहीं है बल्कि उसमें मुख़्तलिफ़ो-मुतनव्वे तसवीरी रंग पाए जाते हैं जिसकी वजह से मौजूआत में नई जान और हुस्ने-अदा में नई धड़कनें पैदा हो जाती हैं। इस तज़रीदियत की एक

بدن وصال آہنگ ہوا سا
قبا عیب پریشانی میں

ادا موج تبسم کی طرح تھی
نفس خوشبو کی شہرت کی طرح تھا

شفق تحریر اس کی
ہوا اظہار اس کا

وہ تمام رنگ ہے اس سے بات کیا کروں
وہ تمام خواب ہے اس کو ہاتھ کیا لگاؤں

بانی کی شاعری پڑھتے وقت ایسے شعر بھی ہمارا دھیان اپنی طرف کھینچتے ہیں
جن میں اظہار کا یہ عمل یا پیٹرن پلٹ جاتا ہے۔ یعنی شعری حیثیت کے مجرد پہلوؤں کو
منصہ شہود پر لانے کے لئے شاعر شعری تجربے کو متشکل و مجسم کر کے اظہار میں ڈرامائی
کیفیت اور جذبے میں حرکی توانائی جگا دیتا ہے۔

یاد تری جیسے کہ سر شام
دھند اتر جائے پانی میں

खास खूबी ये भी है कि इसमें फ़िक्रो-फ़न का मोतदिलो-मुतवाज़िन इम्तिज़ाज बना रहता है।

किस लम्स की तहरीर हूँ मेहराबे-हवा पर
किस लफ़्ज़ का मफ़हूमे-फ़रावाँ हूँ बताओ

बदन विसाल आहंग हवा सा
क़बा अजीब परेशानी में

अदा मौजे-तबस्सुम की तरह थी
नफ़स ख़ुशबू की शोहरत की तरह था
शफ़क़ तहरीर उसकी
हवा इज़हार उसका

वो तमाम रंग है उससे बात क्या करूँ
वो तमाम ख़्वाब है उसको हाथ क्या लगाऊँ

बानी की शायरी पढ़ते वक़्त ऐसे शेर भी हमारा ध्यान अपनी तरफ़ खींचते हैं जिनमें इज़हार का ये अमल या पैटर्न पलट जाता है। यानी शेरी हिस्सियत के मुजरद पहलुओं को मनस्स-ए-शहूद पर लाने के लिए शायर शेरी तज़बे को मुतशक्किलो-मुतजस्सिम करके इज़हार में इ़माई कैफ़ियत और जज़्बे में हरकी तवानाई जग़ा देता है :

کس منظر اثبات کے ہونٹوں کی ضیا ہوں
 کس چپ کی میں آواز فروزاں ہوں بتاؤ
 تھی پاؤں کی کوئی زنجیر بچ میں ورنہ
 رم ہوا کا تماشہ یہاں رہا ہے بہت

بانی کے شعری منظر نامے کو دھیان سے دیکھنے پر یہ واضح ہو جاتا ہے کہ بانی کے اندر بیضا شاعر لفظی اقتدار کے تئیں کتنا حساس ہے۔ دراصل بانی ہی نہیں، نئی غزل کا پورا شعری رجحان لفظی اقتدار اور اس کے تخلیقی استعمال کے تئیں فکر مند اور حساس رہا ہے۔ اقتدار لفظی کے تئیں حساس ہونے کا ایک پہلو روایتی لفظیات میں نئے مفہوم بھرنے سے تعلق رکھتا ہے تو دوسرا پہلو شعر کے تخلیقی عمل سے بھی رشتہ بنانا ہوا دکھائی دیتا ہے۔ نئے شاعر کا سب سے اہم اور بنیادی مسئلہ اس لفظیات کا تجسس ہے جو نئے شعری احساسات کو قارئین تک مکمل طور سے ترسیل کرنے کی صلاحیت رکھتی ہو۔ اس کے لئے اسے نئے لفظوں کی تلاش سے لے کر نئی تشبیہ سازی، نئی علامت نگاری اور لفظوں کی نئی بندش اور پھر لفظوں کے نئے معنی تک کا سفر کرنا پڑتا ہے۔

وہ جتے کھیلتے اک لفظ کہہ گیا بانی
 مگر مرے لئے دفتر کھلا معانی کا

بولتی تصویر میں اک نقش لیکن کچھ ہٹا سا
 ایک حرف معتبر لفظوں کے لشکر میں اکیلا

याद तेरी जैसे कि सरे-शाम
धुंद उतर जाए पानी में

किस मंजरे-इसबात के होठों की ज़िया हूँ
किस चुप की मैं आवाज़े-फ़रोज़ा हूँ बताओ

थी पाँव की कोई जंजीर बीच में वरना
रमे-हवा का तमाशा यहाँ रहा है बहुत

बानी के शेरी मंज़रनामे को ध्यान से देखने पर ये वाज़ेह हो जाता है कि बानी के अंदर बैठा शायर लफ़्ज़ी इक्त्तदार के तई कितना हस्सास है। दरअस्ल बानी ही नहीं, नई ग़ज़ल का पूरा शेरी रुजहान लफ़्ज़ी इक्त्तदार और उसके तख़लीकी इस्तेमाल के तई फ़िक्रमंद और हस्सास रहा है। इक्त्तदारे-लफ़्ज़ी के तई हस्सास होने का एक पहलू रिवायती लफ़्ज़ियात में नए मफहूम भरने से तअल्लुक रखता है तो दूसरा पहलू शेर के तख़लीकी अमल से भी रिश्ता बनाता हुआ दिखाई देता है। नए शायर का सब से अहम और बुनियादी मसअला उस लफ़्ज़ियात का तजस्सुस है जो नए शेरी अहसासात को कारईन तक मुकम्मल तौर से तरसील करने की सलाहियत रखती हो। इस के लिए उसे नए लफ़्ज़ों की तलाश से लेकर नई तशबीहसाज़ी, नयी अलामतनिगारी और लफ़्ज़ों की नई बंदिश और फिर लफ़्ज़ों के नए मानी तक का सफ़र करना पड़ता है:

वो हैंसते खेलते इक लफ़्ज़ कह गया बानी
मगर मेरे लिए दफ़्तर खुला मानी का

ہر آن صداؤں کو نئے راگ عطا کر
ہر لمحہ مناظر کے بدلنے کی خبر دے

کبھی کبھی نئی شعری صنعت سے بھی کام نہیں چلتا ہے تو وسیع اور شدید شعری
احساس کے اظہار نو کے لئے وہ لفظ سے ماورا ہونا چاہتا ہے۔ لفظ کی دنیا سے ناکافی
محسوس ہوتی ہے کیونکہ اس کا تجربہ اتنا نیا، وسیع، گنگلک اور وسیع ہے کہ لفظ میں اس کا سا
پانا ممکن نہیں ہو پاتا اور نئے احساسات اور انوکھے تجربات کو نمون (Silence) کے
ذریعہ ادا کرنے کی طرف مائل ہوتا ہے (اگرچہ لفظوں کے وسیلے سے ہی سہی)۔
غالب نے بھی کہا ہے ”خاموشی ہی سے نکلے ہے جو بات چاہئے“۔

بانی کی شاعری میں بھی جگہ جگہ ماورائے لفظ ہونے کے ساتھ ہی خاموشی کی
ایسی دنیا رچنے کی تمنا دکھائی دیتی ہے جو انسان کے درد کے انوکھے اظہار کو ممکن بنا سکے۔

کہاں سے ایسا کوئی حرف منتخب لائیں
کہ ہم پہ سہل ہو اظہار دردِ انساں کا

مرے حروف کے آئینے میں نہ دیکھ مجھے
میں اپنی بات کا مفہوم دوسرا چاہوں

ہم اپنی چپ کو افسوں خانہ معنی سمجھتے ہیں
کہاں دل کو خبر تھی امتحاں حرف و صدا کا تھا

बोलती तस्वीर में इक नक़्श लेकिन कुछ हटा सा
एक हर्फ़े-मोतबर लफ़्ज़ों के लश्कर में अकेला

हर आन सदाओं के नए राग अता कर
हर लम्हा मनाज़िर के बदलने की ख़बर दे

कभी कभी नई शेरी सनअत से भी काम नहीं चलता है तो वसीअ और शदीद शेरी एहसास के इज़हारे-नौ के लिए वो लफ़्ज़ से मावरा होना चाहता है। लफ़्ज़ की दुनिया उसे नाकाफी महसूस होती है क्योंकि इस का तज़बा इतना नया, पेचीदा, गुंजलक और वसीअ है कि लफ़्ज़ में उसका समा पाना मुमकिन नहीं हो पाता और नए एहसासात और अनोखे तज़बात को मौन के ज़रिए अदा करने की तरफ़ माइल होता है (अगरचे लफ़्ज़ों के वसीले से ही सही)। ग़ालिब ने भी कहा है “ख़ामोशी ही से निकले है जो बात चाहिए”।

बानी की शायरी में भी जगह जगह मावराए-लफ़्ज़ होने के साथ ही ख़ामोशी की ऐसी दुनिया रचने की तमन्ना दिखाई देती है जो इंसान के दर्द के अनोखे इज़हार को मुमकिन बना सके :

कहाँ से ऐसा कोई हर्फ़े-मुन्तखाब लाएँ
कि हम प' सहल हो इज़हार दर्दे-इंसाँ का

मेरे हुरूफ़ के आईने में न देख मुझे
मैं अपनी बात का मफ़हूम दूसरा चाहूँ

हम अपनी चुप को अफ़सूँ ख़ानए-मानी समझते हैं
कहाँ दिल को ख़बर थी इम्तिहाँ-हर्फ़ों-सदा का था

در اصل بانی نئی غزل کے ان اہم شاعروں میں ایک ہیں جنہوں نے تجربے کے نئے سانچے کو شورغل مچائے بغیر خاموشی کے ساتھ ایک نئی تخلیقی زبان میں ڈھال دیا۔ انہوں نے روایت کی تردید و تہنیت کئے بغیر جدید انسان کے تفکرات اور عصری حیات کی سطح پر صنف غزل کو ایک نئی جہت اور نئی آواز بخشی۔ بانی کی شاعری میں احساس و جمال کی نئی زمین اور نئے انوکھے موڑ کا اظہار نئی شعری لفظیات کے توسط سے کچھ اس انداز میں ممکن ہوا کہ غزل کا ایک نیا باب ہی وا ہو گیا۔

گوہند پرساد
ہندوستانی زبانوں کا مرکز
جواہر لعل نہرو یونیورسٹی
نئی دہلی - 110067

दरअस्ल बानी नई ग़ज़ल के उन अहम शायरों में एक हैं जिन्होंने तज़बे के नए साँचे को शोर-गुल मचाए बग़ैर ख़ामोशी के साथ एक नई तख़लीकी ज़बान में ढाल दिया। उन्होंने रिवायत की तरदीदो-तंसीख़ किए बग़ैर जदीद इंसान के तफ़क्कुरात और असरी हिस्सियात की सतह पर सिन्फ़े-ग़ज़ल को एक नई जिहत और नई आवाज़ बख़्शी। बानी की शायरी में एहसासो-जमाल की नई ज़मीन और नए अनोखे मोड़ का इज़हार नई शेरी लफ़िज़यात के तवस्सुल से कुछ इस अंदाज़ में मुमकिन हुआ कि ग़ज़ल का एक नया बाब ही वा हो गया।

गोबिन्द प्रसाद
हिन्दुस्तानी ज़बानों का मरकज़
जवाहरलाल नेहरू युनिवर्सिटी
नई देहली-110067

حرف معتبر

हर्फ-मोतबर

انتساب

والدِ محترم گو بندرام منچندہ (مرحوم) کے نام
مکرم کیول کرشن وڈیرہ کے نام

इन्तिसाब

वालिदे-मोहतरम गोबिन्द राम मनचन्दा (मरहूम) के नाम
मुकर्रम केवल कृष्ण वडेरा के नाम

اے صفِ ابرِ رواں تیرے بعد
اک گھنا سایہ شجر سے نکلا

ऐ सफ़े-अब्रे-रवाँ तेरे बाद
इक घना साया शजर से निकला

غزلیں

गज़लें

زماں مکاں تھے مرے سامنے بکھرتے ہوئے
میں ڈھیر ہو گیا طول سفر سے ڈرتے ہوئے

دکھا کے لمحہ خالی کا عکسِ لائیسیر
یہ مجھ میں کون ہے مجھ سے فرار کرتے ہوئے

بس ایک زخم تھا دل میں جگہ بنانا ہوا
ہزار غم تھے مگر بھولتے دُسر تے ہوئے

وہ ٹوٹتے ہوئے رشتوں کا حُسنِ آخر تھا
کہ چُپ سی لگ گئی دونوں کو بات کرتے ہوئے

عجب نظارا تھا بہتی کا اس کنارے پر
سبھی مچھڑ گئے دریا سے پار اُترتے ہوئے

میں ایک حادثہ بن کر کھڑا تھا رستے میں
عجب زمانے برے سر سے تھے گزرتے ہوئے

وہی ہوا کہ تکلف کا حُسنِ سچ میں تھا
بدن تھے قُربِ جی لس سے بکھرتے ہوئے

1.

जमाँ मकाँ¹ थो मेरे सामने बिखरते हुए
मैं ढेर हो गया तूले-सफ़र² से डरते हुए

दिखा के लम्हए-ख़ाली³ का अक्से-लातफ़सीर⁴
ये मुझमें कौन है मुझसे फ़रार करते हुए

बस एक ज़ख़्म था दिल में जगह बनाता हुआ
हज़ार ग़म थो मगर भूलते बिसरते हुए

वो टूटते हुए रिश्तों का हुस्ने-आख़िर⁵ था
कि चुप सी लग गई दोनों को बात करते हुए

अजब नज़ारा था बस्ती का उस किनारे पर
सभी बिछड़ गए दरिया से पार उतरते हुए

मैं एक हादसा बनकर खड़ा था रस्ते में
अजब जमाने मेरे सर से थो गुज़रते हुए

वही हुआ कि तकल्लुफ़ का हुस्न बीच में था
बदन थो व़ुर्बे-तहीलम्स से⁶ बिखरते हुए

1-देज़-काल 2-सफ़र की दूरी 3-फुर्सत की घड़ी 4-ब्याख्यातीत प्रतिदिम्ब 5-चरम सौदर्य 6-स्पर्शविहीन निकटता

پتہ پتہ بھرتے شجر پر ابر برستا دیکھو تم
منظر کی خوش تعمیری کو لمحہ لمحہ دیکھو تم!

مجھ کو اس دلچسپ سفر کی راہ نہیں کھوٹی کرنی
میں عجلت میں نہیں ہوں یارو، اپنا رستہ دیکھو تم

آنکھ سے آنکھ نہ جوڑ کے دیکھو سوائے افق اے ہمسفر
لاکھوں رنگ نظر آئیں گے تنہا تنہا دیکھو تم!

آنکھیں، چہرے، پاؤں سبھی کچھ بکھرے پڑے ہیں رستے میں
پیش روؤں پر کیا کچھ بنتی، جا کے تماشا دیکھو تم

کیسے لوگ تھے، چاہتے کیا تھے، کیوں وہ یہاں سے چلے گئے
گنگ گھروں سے مت کچھ پوچھو، شہر کا نقشہ دیکھو تم

میرے سر ہے شراب کسی کا، چھوڑ دو میرا ساتھ یہیں
جانے اس ویران ڈگر پر آگے کیا کیا دیکھو تم

اب تو تمہارے بھی اندر کی بول رہی ہے مایوسی
مجھکو سمجھانے بیٹھے ہو، اپنا لہجہ دیکھو تم!

پلک پلک من جوت سجا کر کوئی سنگن میں بکھر گیا
اب ساری شب ڈھونڈو اُسکو تارا تارا دیکھو تم

पत्ता-पत्ता भरते शजर पर अब बरसता देखो तुम
मंजर की खुशतामीरी को लम्हा-लम्हा देखो तुम!

मुझको इस दिलचस्प सफर की राह नहीं छोटी करनी
मैं उजलत में नहीं हूँ यारो अपना रस्ता देखो तुम

आँख से आँख न जोड़के देखो सूए-उफुक ऐ हमसफरो
लाखों रंग नजर आएँगे तन्हा तन्हा देखो तुम

आँखें, चेहरे, पाँव सभी कुछ बिखरे पड़े हैं रस्ते में
पेशरवों पर क्या कुछ बीती, जाके तमाशा देखो तुम

कैसे लोग थे, चाहते क्या थे, क्यों वो यहाँ से चले गए
गुंग घरों से मत कुछ पूछो, शहर का नक्शा देखो तुम

मेरे सर है शराप किसी का, छोड़ दो मेरा साथ यहीं
जाने इस वीरान डगर पर आगे क्या-क्या देखो तुम

अब तो तुम्हारे भी अन्दर की बोल रही है मायूसी
मुझको समझाने बैठे हो, अपना लहजा देखो तुम!

पलक पलक मन जोत जगाकर कोई गगन में बिखर गया
अब सारी शब दूँडो उसको तारा तारा देखो तुम

بھاری رنگوں سے ڈرتا سا ، رنگ جدا ایک ہلکا سا
صاف کہیں نہ دکھائی دے گا آڑھا تر چھا دیکھو تم

پانی سب کچھ اندر اندر دُور بہا لے جاتا ہے.....
کھوئی شے اس گھاٹ نہ ڈھونڈو ساتوں دریا دیکھو تم

جیسے میرے سارے دشمن میرے مقابل ہوں ایک ساتھ
پاؤں نہیں آگے اٹھ پاتے ، زور ہوا کا دیکھو تم

ابھی کہاں معلوم یہ تم کو دیرانے کیا ہوتے ہیں
میں خود ایک کھنڈر ہوں جس میں وہ آنگن آدیکھو تم

اُن بن گہری ہو جائے گی یونہی سے گلڈرنے پر،
اُس کو منانا چاہو گے جب ، بس نہ چلے گا..... دیکھو تم

ایک اسی دیوار کے پیچھے ، اور کیا کیا دیواریں ہیں
ایک دیوار بھی راہ نہ دے گی سر بھی ککرا دیکھو تم

ایک اٹھا گھسی تاریکی کب سے تمہاری تاک میں ہے
ڈال دو ڈیرہ وہیں ، جہاں پرتور ذرا سا دیکھو تم

سچ کہتے ہو ، ان راہوں پر ٹھین سے آتے جاتے ہو
اب تھوڑا اس قید سے نکلو ، کچھ اُن دیکھا دیکھو تم

भारी रंगों से डरता सा, रंग जुदा इक हल्का सा
साफ़ कहीं न दिखाई देगा आड़ा-तिरछा देखो तुम

पानी सब कुछ अन्दर अन्दर दूर बहा ले जाता है....
खोई शय इस घाट न ढूँडों सातों दरिया देखो तुम

जैसे मेरे सारे दुश्मन मेरे मुक़ाबिल हों इक साथ
पाँव नहीं आगे उठ पाते, ज़ोर हवा का देखो तुम

अभी कहाँ मालूम ये तुमको वीराने क्या होते हैं
मैं खुद इक खण्डर हूँ जिसमें वो आँगन आ देखो तुम

अनबन गहरी हो जाएगी यूँ ही समय गुज़रने पर,
उसको मनाना चाहोगे जब बस न चलेगा...देखो तुम

एक इसी दीवार के पीछे, और क्या-क्या दीवारें हैं
इक दीवार भी राह न देगी सर भी टकरा देखो तुम

एक अथाह घनी तारीकी कब से तुम्हारी ताक में है
डाल दो डेरा वहीं, जहाँ पर नूर ज़रा सा देखो तुम

सच कहते हो, इन राहों पर चैन से आते जाते हो
अब थोड़ा इस कैद से निकलो, कुछ अनदेखा देखो तुम

خالی خالی سے لحوں کے پھول ملیں گے پو جا کو،
آنے والی عمر کے آگے ، دامن پھیلا دیکھو تم

ہم پہنچے ہیں بچ بھنور کے روگ لیے دُنیا بھر کے
اور کنارے پر دُنیا کو لوٹ کے جانا دیکھو تم

اک عکس موہوم عجب سا اس دُھند لے خاکے میں ہے
صاف نظر آئے گا تم کو اب جو دوبارہ دیکھو تم

اپنی خوش تقدیری جانو اب جو راہیں سہل ہوئیں
ہم بھی ادھر ہی سے گزرے تھے، حال ہمارا دیکھو تم

رات ، دُعا مانگی تھی بانی ہم نے سب کے کہنے پر
ہاتھ ابھی تک شل ہیں اپنے، قہر خدا کا دیکھو تم

☆

مرے بدن میں پکھلتا ہوا سا کچھ تو ہے
اک اور ذات میں ڈھلتا ہو سا کچھ تو ہے

مری صدا نہ سہی.....ہاں..... مرا لہو نہ سہی
یہ موج موج اچھلتا ہوا سا کچھ تو ہے

खाली खाली से लम्हों के फूल मिलेंगे पूजा को
आने वाली उम्र के आगे, दामन फैला देखो तुम

हम पहुँचे हैं बीच भँवर के रोग लिए दुनिया भर के
और किनारे पर दुनिया को लौटके जाता देखो तुम

इक अक्से-मौहूम अजब सा इस धुंदले खाके में है
साफ़ नज़र आएगा तुमको अब जो दुबारा देखो तुम

अपनी खुशतकदीरी जानो अब जो राहें सहल हुई
हम भी इधर ही से गुज़रे थे, हाल हमारा देखो तुम

रात, दुआ माँगी थी बानी हमने सबके कहने पर
हाथ अभी तक शल हैं अपने, कहर खुदा का देखो तुम

3.

मेरे बदन में पिघलता हुआ सा कुछ तो है
इक और ज़ात¹ में ढलता हुआ सा कुछ तो है

मेरी सदा² न सही.... हाँ.... मेरा लहू न सही
ये मौज मौज³ उछलता हुआ सा कुछ तो है

کہیں نہ آخری جھونکا ہو ملنے رشتوں کا
یہ درمیاں سے لگتا ہوا سا کچھ تو ہے

نہیں ہے آنکھ کے صحر میں ایک بوند سراب
مگر یہ رنگ بدلتا ہوا سا کچھ تو ہے

جو میرے واسطے کل زہر بن کے نکلے گا
ترے لبوں پہ سنبھلتا ہوا سا کچھ تو ہے

یہ عکس پیکرِ صد لمس ہے، نہیں..... نہ سہمی
کسی خیال میں ڈھلتا ہوا سا کچھ تو ہے

بدن کو توڑ کے باہر نکلنا چاہتا ہے
یہ کچھ تو ہے یہ مچلتا ہوا سا کچھ تو ہے

کسی کے واسطے ہو گا پیام یا کوئی قہر
ہمارے سر سے یہ لگتا ہوا سا کچھ تو ہے

یہ میں نہیں..... نہ سہمی ، اپنے سرد بستر پر
یہ کر دیشی بدلتا ہوا سا کچھ تو ہے

وہ کچھ تو تھا میں سہارا جسے سمجھتا تھا
یہ میرے ساتھ پھسلتا ہوا سا کچھ تو ہے

कहीं न आखिरी झोंका हो मिटते रिश्तों का
ये दरमियाँ से निकलता हुआ सा कुछ तो है

नहीं है आँख के सहारा में एक बूँद सराब¹
मगर ये रंग बदलता हुआ सा कुछ तो है

जो मेरे वास्ते कल जहर बनके निकलेगा
तेरे लबों पे सँभलता हुआ सा कुछ तो है

ये अक्से-पैकरे-सदलम्स² है, नहीं... न सही
किसी खयाल में ढलता हुआ सा कुछ तो है

बदन को तोड़के बाहर निकलना चाहता है
ये कुछ तो है, ये मचलता हुआ सा कुछ तो है

किसी के वास्ते होगा पयाम³ या कोई क़हर
हमारे सर से ये टलता हुआ सा कुछ तो है

ये मैं....नहीं न सही, अपने सदर्द बिस्तर पर
ये करवटें सी बदलता हुआ सा कुछ तो है

वो कुछ तो था मैं सहारा जिसे समझता था
ये मेरे साथ फिसलता हुआ सा कुछ तो है !

1-मृगदृष्णा 2-अतृप्तार्थ आकृति का चिम्ब 3-सदिश

بکھر رہا ہے فضا میں یہ دُورِ روشن کیا
 ادھر پہاڑ کے جلا ہوا سا کچھ تو ہے

میرے وجود سے جو کٹ رہا ہے گام بہ گام
 یہ اپنی راہ بدلتا ہوا سا کچھ تو ہے!

جو چائنا چلا جاتا ہے مجھ کو اے بائی
 یہ آستین میں پکتا ہوا سا کچھ تو ہے!

☆

نہ منزلیں تھیں ، نہ کچھ دل میں تھا ، نہ سر میں تھا
 عجب نظارۂ لاسمیت نظر میں تھا

عتاب تھا کسی لمحے کا اک زمانے پر ،
 کسی کو چین نہ باہر تھا اور نہ گھر میں تھا

بچھا کے لے گیا دُنیا سے اپنے دل کے گھاؤ
 کہ ایک شخص بہت طاق اس ہنر میں تھا

کسی کے ٹوٹنے کی جب صدا سنی تو کھلا
 کہ میرے ساتھ کوئی اور بھی سفر میں تھا

बिखर रहा है फ़ज़ा में ये दूदे-रीशन¹ क्या
उधर पहाड़ के जलता हुआ सा कुछ तो है!

मेरे वजूद² से जो कट रहा है गाम-ब-गाम³
ये अपनी राह बदलता हुआ सा कुछ तो है

जो चाटता चला जाता है मुझको ऐ बानी
ये आस्तीन में पलता हुआ सा कुछ तो है

4.

न मज़िलें थीं-न कुछ दिल में था-न सर में था
अजब नज़ारए-लासम्भितयत⁴ नज़र में था

इताब⁵ था किसी लम्हे का इक ज़माने पर,
किसी को चैन न बाहर था और न घर में था

छुपाके ले गया दुनिया से अपने दिल के घाव
कि एक शख्स बहुत ताक⁶ इस हुनर में था

किसी के लौटने की जब सदा सुनी तो खुला
कि मेरे साथ कोई और भी सफ़र में था

1-रीशन बुर्ज़ी 2-अस्तित्व 3-कदम दर कदम 4-दिशाहीनता का दृश्य 5-गुस्ता 6-निपुण, दब

کبھی میں آب کے تغیر کردہ قصر میں ہوں
کبھی ہوا میں بنائے ہوئے سے گھر میں تھا

بھجک رہا تھا وہ کہنے سے کوئی بات ایسی
میں چُپ کھڑا تھا کہ سب کچھ مری نظر میں تھا

یہی سمجھ کے اُسے خود صدا نہ دی میں نے
وہ تیز گام کسی دُور کے سفر میں تھا

کبھی ہوں تیری خموشی کے کلتے ساحل پر
کبھی میں لوہتی آواز کے بھنور میں تھا

ہماری آنکھ میں آکر بنا ایک اشک ، وہ رنگ
جو برگ سبز کے اندر ، نہ شاخ تر میں تھا

کوئی بھی گھر میں سمجھتا نہ تھا برے دکھ سکھ ،
اک اجنبی کی طرح میں خود اپنے گھر میں تھا

ابھی نہ برسے تھے پانی گھر سے ہوئے بادل
میں اڑتی خاک کی مانند وہ گذر میں تھا

कभी मैं आपके तामीरक़र्दा¹ क़स² में हूँ
कभी हवा में बनाए हुए से घर में था

झिझक रहा था वो कहने से कोई बात ऐसी
मैं चुप खड़ा था कि सब कुछ मेरी नज़र में था

यही समझके उसे छुद सदा न दी मैंने
वो तेजगाम किसी दूर के सफ़र में था

कभी हूँ तेरी ख़मोशी के कटते साहिल पर
कभी मैं लौटती आवाज़ के भँवर में था

हमारी आँख में आकर बना इक अशक, वो रंग
जो बर्गे-सब्ज़³ के अन्दर, न शाख़े-तर⁴ में था

कोई भी घर में समझता न था मेरे दुख सुख
इक अजनबी की तरह मैं खुद अपने घर में था

अभी न बरसे थे बानी घिरे हुए बादल
मैं उड़ती ख़ाक की मानिन्द⁵ रहगुज़र में था

1-निर्मित 2-महल 3-हरे पत्ते 4-हरी झल 5-तरह

اک گل تر بھی شر سے نکلا
بس کہ ہر کام ہنر سے نکلا

میں جڑے بعد..... پھر اے غم ہڈی
خیمہ گرد سفر سے نکلا

غم نکلتا نہ کبھی پینے سے
اک محبت کی نظر سے نکلا

اے صبحِ لہرِ رواں تیرے بعد
اک گھٹا سایہ شجر سے نکلا

راستے میں کوئی دیوار بھی تھی
وہ اسی ڈر سے نہ گھر سے نکلا

ذکر پھر اپنا ، دہاں ، مدت بعد
کسی عنوانِ دیگر سے نکلا

ہم کہ تھے نکتہ محرومی میں،
یہ نیا درد کدھر سے نکلا!

इक गुले-तर¹ भी शरर से निकला
बस कि हर काम हुनर से निकला

मैं तेरे बाद....फिर ऐ गुमशुदगी
खीमए-गर्दे-सफ़र² से निकला

गुम निकलता न कभी सीने से
इक महब्बत की नज़र से निकला

ऐ सफ़े-अब्रे-रवाँ³ तेरे बाद
इक घना साया शजर से निकला

रास्ते में कोई दीवार भी थी
वो इसी डर से न घर से निकला

ज़िक्र फिर अपना, वहाँ, मुद्दत बाद
किसी उन्वाने-दिगर⁴ से निकला

हम कि थे नशशाए-महरूमी⁵ में,
ये नया दर्द किघर से निकला!

1-साय़ फूल 2-सफ़र की धूल का तन्बू 3-मतिशील मेघ-माला 4-अन्य शीर्षक अर्थात् और ढंग
5-अप्राप्ति का नशा

ایک ٹھوکر پہ سفر ختم ہوا
ایک سودا تھا کہ سر سے نکلا

ایک اک قصہ بے معنی کا.....
بسلسلہ تیری نظر سے نکلا

لمحے ، آداب تسلسل سے چھٹے
میں کہ امکانِ سحر سے نکلا

سر منزل ہی کھلا اے ہاتھی
کون کس راہ گزار سے نکلا

☆

6

سیاہ خانہ تہیہ راہوں سے نکل
کھلی فضا میں ذرا آ ، غبار جاں سے نکل

عجیب بھڑ یہاں جمع ہے ، یہاں سے نکل ،
کہیں بھی چل مگر اس شہر بے اماں سے نکل

اک اور راہ ، ادھر دیکھ ، جا رہی ہے وہیں
یہ لوگ آتے رہیں گے ، تو درمیاں سے نکل

एक ठोकर प' सफ़र ख़त्म हुआ
एक सौदा¹ था कि सर से निकला

एक इक किस्सए-बेमानी² का
सिलसिला तेरी नज़र से निकला

लम्हे, आदाबे-तसल्लुल³ से छुटे
मैं कि इम्काने-सहर⁴ से निकला

सरे-मंज़िल ही खुला ऐ बानी
कौन किस राहगुज़र से निकला

6.

सियाहख़ानए-उम्मीदे-रायगाँ⁵ से निकल
खुली फ़ज़ा में ज़रा आ, गुबारे-जाँ⁶ से निकल

अजीब भीड़ यहाँ जमा है, यहाँ से निकल,
कहीं भी चल मगर इस शहरे-बेअमाँ⁷ से निकल

इक और राह, उधर देख, जा रही है वहीं
ये लोग आते रहेंगे, तू दरमियाँ से निकल

1-मुन, दीवानगी 2-बेकार (ब्यर्थ) किस्से 3-क्रमबद्धता के नियम 4-सुबह की संभावना 5-निरर्थक आशाओं का अन्धेरा घर 6-मन की प्रतिनता 7-अपुरखित नगर

ذرا بڑھا تو سہی واقعات کو آگے
 طلسم کائی آغاز داستاں سے نیکل

تُو کوئی غم ہے تو دل میں جگہ بنا اپنی
 تو اک صدا ہے تو احساس کی کماں سے نیکل

یہیں کہیں جِرا دشمن چھپا ہے اے بانی
 کوئی بہانہ بنا ، بزم دوستاں سے نیکل

☆

7

تھی اپنی اک نگاہ کہ جس سے ہلاک تھے
 سب واقعے ہمارے لیے درد ناک تھے

اعجاز گفتگو تو بڑے پُر تپاک تھے
 اندر سے کُربِ سرد سے دونوں ہلاک تھے

تُو نا عجب طرح سے طلسم سفر کہ جب
 منظر ہمارے چار طرف ہولناک تھے

اب ہو کوئی پُچھمن تو محبت سمجھ اُسے
 وہ رہا خود ہی مٹ گئے جو غم سے پاک تھے

जरा बढ़ा तो सही वाकिआत को आगे
तिलिस्मकारिए-आगाजे-दास्ताँ¹ से निकल

तू कोई गुम है तो दिल में जगह बना अपनी
तू इक सदा है तो एहसास की कर्माँ से निकल

यहीं कहीं तेरा दुश्मन छुपा है ऐ बानी
कोई बहाना बना, बज़्मे-दोस्ताँ से निकल

7.

थी अपनी इक निगाह कि जिससे हलाक² थे
सब वाकिये हमारे लिए दर्दनाक थे

अंदाजे-गुफतगू तो बड़े पुरतपाक³ थे
अंदर से कुर्बे-सर्द⁴ से दोनों हलाक थे

टूटा अजब तरह से तिलिस्मे-सफर⁵ कि जब
मंजूर हमारे चार तरफ़ हौलनाक थे

अब हो कोई चुभन तो महब्बत समझ उसे
वो रक्त⁶ खुद ही मिट गए जो गुम से पाक थे

1-कहानी के आरंभ की जातुगरी 2-शत, क़त्ल 3-गर्मजोश, सोत्साह 4-पेसी निकटता जिसमें गर्मजोशी न हो 5-सफर का जादू 6-संपंध

ہم جسم سے ہٹا نہ سکے کاہلی کی برف
جس کی تہوں میں خواب بڑے تانناک تھے

☆

8

میں اُس کی بات کی تردید کرنے والا تھا
اک اور حاشہ مجھ پر گزرنے والا تھا

کہیں سے آگیا اک ابر درمیاں ، ورنہ
مرے بدن میں یہ سورج اترنے والا تھا

مجھے سنبھال لیا تیری ایک آہٹ نے
شکوہ شب کی طرح میں پکھرنے والا تھا

عجیب لہجہ کزور سے میں گذرا ہوں
تمام سلسلہ پل میں پکھرنے والا تھا

میں لوکھڑا سا گیا سایہ شجر میں ضرور
میں راستے میں مگر کب ٹھہرنے والا تھا

اب آسماں بھی بڑا شانت ہے ، زمیں بھی سنکھی
گذر گیا ہے جو ہم پر گذرنے والا تھا!

हम जिस्म से हटा न सके काहिली¹ की बर्फ
जिसकी तहों में छ्वाब बड़े ताबनाक² थे

8.

मैं उसकी बात की तर्दीद³ करने वाला था
इक और हादसा मुझ पर गुजरने वाला था

कहीं से आ गया इक अब दरमियाँ, वर्ना
मेरे बदन में ये सूरज उतरने वाला था

मुझे सँभाल लिया तेरी एक आहट ने
सुकूते-शब⁴ की तरह मैं बिखरने वाला था

अजीब लम्हए-कमजोर से मैं गुजरा हूँ
तमाम सिलसिला पल में बिखरने वाला था

मैं लड़खड़ा सा गया सायए-शजर में जरूर
मैं रास्ते में मगर कब ठहरने वाला था

अब आस्माँ भी बड़ा शांत है, ज़मीं भी सुखी
गुज़र गया है जो हम पर गुजरने वाला था!

1-सुस्ती 2-रीशान 3-रह करना 4-रात की चुप्पी

لگا جو پیٹھ میں آکر وہ تیر تھا کس کا
میں دشمنوں کی صفوں میں نہ مرنے والا تھا

☆

9

میں ایک بے برگ و بار منظر..... کمر برہنہ..... میں سنناہٹ تمام بخ پوش
اپنی آواز کا کفن ہوں
مجاز سے لوٹنا ہوا نصف تن سپاہی..... میں اپنا ٹوٹا ہوا عقیدہ.....
اب آپ اپنے لیے وطن ہوں

میں جانتا تھا گئے گئے جنگلوں کے سینوں میں دفن ہے جو متاعِ نم
وہ کسی طرح بھی نہ لاسکوں گا
میں پورے دن کی چتا جلا کر چلا ہوں گھر کو کہ جیسے سورج کے پیٹ میں
ٹوٹی ہوئی آخری کرن ہوں!

مرا کوئی خواب تھا ، جسے میں سجا چکا ہوں بڑی نفاست سے اپنے
دیرینہ شہر کے سارے آئینوں میں
میں نام سے اک جڑا ہوا شخص..... طے شدہ شخص..... ایک پہچان کے علاوہ
نہ اب صدا ہوں نہ اب سخن ہوں

लगा जो पीठ में आकर वो तीर था किसका
मैं दुश्मनों की सफ़ों¹ में न मरने वाला था

9.

मैं एक बेबर्गो-धार मंजर²...कमर बरहना³... मैं सनसनाहट तमाम यखपोश⁴...
अपनी आवाज़ का कफ़न हूँ
महाज⁵ से लौटता हुआ निस्फ़तन⁶ सिपाही, मैं अपना टूटा हुआ अक्कीदा⁷...
अब आप अपने लिए वतन हूँ

मैं जानता था घने घने जंगलों के सीनों में दफ़न है जो मत्ताए-नम⁸
वो किसी तरह भी न ला सकूँगा
मैं पूरे दिन की चिंता जलाकर चला हूँ घर को कि जैसे सूरज के पेट में
टूटती हुई आखिरी किरन हूँ!

मेरा कोई छ्वाब था, जिसे मैं सजा चुका हूँ बड़ी नफ़ासत से अपने
देरीना⁹ शहर के सारे आइनों में
मैं नाम से इक जुड़ा हुआ शख़्स... तयशुदा शख़्स... एक पहचान के अलावा
न अब सदा हूँ न अब सुखन¹⁰ हूँ

1-पक्तिर्या 2-बिना फल-फूल वाला मंजर अर्थात् उजाड़ दृश्य 3-नंगा 4-बर्फ़ से ढका हुआ 5-मोर्चा
6-अर्द्धांग 7-विश्वास 8-तरल घन अर्थात् औस 9-पुराना 10-घात

کہیں مری گرد لے اڑی ہے مرے فسانے کہیں کوئی رنگ لے اڑا ہے
 مرے حسین بے بہا خزانے
 کہیں کسی کی نگاہ میں لکڑی رائگاں ہوں ، کہیں کسی کی نگاہ میں
 رونق فضائے ہزار فن ہوں!

عدم زوال ایک تیرگی ہے کسی افق سے سحر نہ ہرگز طلوع ہوگی
 کہاں تک منتظر ہو گئے
 کہ میرے سینے میں لاکھوں شمعوں سا ہے الاذ مجھی سے یہ روشنی نکالو
 کہ اک یہاں میں ہی شب شکن ہوں

☆

10

چاند سے سارا آسماں خالی
 ہر جگہ ہے یہاں وہاں خالی
 غم کے بے کیف سلسلے ہیں تمام
 حادثوں سے ہے داستاں خالی
 آتشِ گل ہی جب ہوئی کچھ تیز
 خود کئے ہم نے آشیاں خالی!

कहीं मेरी गर्द ले उड़ी है मेरे फसाने...कहीं कोई रंग ले उड़ा है
 मेरे हसीं बेबहा¹ खज़ाने...
 कहीं...किसी की निगाह में फ़िक्रे-रायगी² हूँ कहीं... किसी की निगाह में
 रीनके-फज़ाए-हज़ार फ़न³ हूँ

अदम-ज़वाल⁴ एक तीरगी है... किसी उफुक से सहर न हरगिज़ तुलूअ⁵ होगी...
 कहीं तलक मुन्तज़िर रहोगे
 कि मेरे सीने में लाखों शम्ओं सा है अलाव... मुझी से ये रीशनी निकालो...
 कि इक यहीं मैं ही शब-शिकन⁶ हूँ

10.

चाँद से सारा आस्माँ खाली
 हर जगह है यहाँ वहाँ खाली

गम के बेकैफ⁷ सिलसिले हैं तमाम
 हादसों से है दास्ताँ खाली

आतिशे-गुल⁸ ही जब हुई कुछ तेज़
 खुद किए हमने आशियाँ खाली!

1-अपूर्य, अनमोल 2-व्यर्थ-विचार 3-हज़ार कलाओं से मण्डित परिवेश की आभा 4-कभी न मिटनेवाला 5-उदय 6-रात को पराजित करने वाला 7-निरानंद, बेमजा 8-पुष्पाग्नि

یہ انا کیسی درمیاں آئی
ہو چلی بزمِ دوستاں خالی!

وقت خود ہی عجب عذاب میں ہے،
ایک اک لمحہ رانگاں ، خالی!

آتا جاتا کہیں نہیں کوئی،
ایک اک راو بے نشاں ، خالی!

کیسے کیسے مقام آئے ہیں،
میں ہوا ہوں کہاں کہاں خالی!

عشق میں پوری زندگی کو سنبھال
اس میں جی کا نہیں زیاں خالی!

اب ہے بانی فضا فضا محروم
گو بھتا ہے مکاں مکاں خالی!

☆

پی چلے تھے زہرِ غم..... خستہ جاں پڑے تھے ہم..... چین تھا
پھر کسی تمنا نے ، سانپ کی طرح ہم کو ، ڈس لیا

ये अना¹ कैसी दरमियाँ आई
हो चली बज़्मे-दोस्ताँ ख़ाली!

वक्त़ खुद ही अजब अज़ाब में है
एक इक लम्हा रायगॉ² ख़ाली!

आता जाता कहीं नहीं कोई,
एक इक राह बेनिशाँ ख़ाली!

कैसे कैसे मक़ाम आए है
मैं हुआ हूँ कहाँ कहाँ ख़ाली!

इश्क़ में पूरी जिंदगी को संभाल
इस में जी का नहीं ज़ियाँ³ ख़ाली!

अब है बानी फ़ज़ा फ़ज़ा महरूम⁴
गूँजता है मकाँ मकाँ ख़ाली!

11.

पी चुके थे ज़हरे-ग़म...ख़स्ता जाँ⁵ पड़े थे हम...चैन था
फिर किसी तमन्ना ने, साँप की तरह हमको, डस लिया

1-अहम् 2-ख़यर् 3-नुकसान 4-वधित 5-निष्ठाण

میرے گھر تک آتے ہی، کیوں جدا ہوئی مجھ سے، کچھ بتا
 ایک اور آہٹ بھی ساتھ ساتھ تھی تیرے، اے صبا
 سر میں جو بھی تھا سودا اڑ گیا خلاؤں میں مثلِ گرد
 ہم پڑے ہیں رستے میں، نیم جاں..... ہلکتے دل..... حسدِ پا!
 سب کھڑے تھے آگن میں اور مجھ کو بکتے تھے، بار بار،
 گھر سے جب میں نکلا تھا مجھ کو روکنے والا کون تھا!
 جوش گھٹتا جاتا تھا، ٹوٹتے سے جاتے تھے حوصلے
 اور سامنے، بانی، دوڑتا سا جاتا تھا راستہ!

میں پُپ کڑا تھا، تعلق میں اختصار جو تھا
 اسی نے بات بنائی وہ ہوشیار جو تھا
 بیخ دیا کسی جھونکے نے لاکے منزل پر
 ہوا کے سر پہ کوئی دیر سے سوار جو تھا
 محبتیں نہ رہیں اُس کے دل میں میرے لیے
 مگر وہ ملیتا تھا ہنس کر کہ وضع دار جو تھا

मेरे घर तक आते ही, क्यों जुदा हुई तुझसे, कुछ बता
एक और आहट भी साथ साथ थी तेरे, ऐ सबा

सर में जो भी था सौदा¹ उड़ गया खलाओं² में मिस्ले-गर्द³
हम पड़े हैं रस्ते में, नीम-जाँ⁴... शिकस्ता-दिल... खस्ता-पा⁵

सब खड़े थे आँगन में और मुझको तकते थे, बार बार,
घर से जब मैं निकला था मुझको रोकने वाला कीन था!

जोश घटता जाता था, टूटते से जाते थे हौसले
और सामने, बानी, दौड़ता सा जाता था रास्ता!

12.

मैं चुप खड़ा था, ताल्लुक में इख्तिसार⁶ जो था
उसी ने बात बनाई वो होशियार जो था

पटख दिया किसी झोंके ने लाके मंजिल पर
हवा के सर प' कोई देर से सवार जो था

महब्बते⁷ न रहीं उसके दिल में मेरे लिए
मगर वो मिलता था हैसकर कि वजूअदार⁷ जो था

1-दीवानापन 2-शून्य 3-धूल की तरह 4-अधमरा 5-थके हुए 6-कमी 7-जितने जैसा व्यवहार हो, उसे अंता तक वैसे ही निबाहने वाला (व्यक्ति)

عجب غرور میں آکر برس پڑا بادل
کہ پھیلتا ہوا چاروں طرف غبار جو تھا

قدم قدم رمِ پامال سے میں جگن آکر
جرے ہی سامنے آیا ، ترا شکار جو تھا

☆

سر بر ایک چمکتی ہوئی تلوار تھا میں
موج دریا سے مگر بر سر پیکار تھا میں

میں کسی لمحہ بے وقت کا اک سایہ تھا
یا کسی حرفِ تہی اسم کا اظہار تھا میں

ایک اک موجِ شیخِ دیتی تھی باہر مجھ کو
کبھی اس پار تھا میں اور کبھی اُس پار تھا میں

اُس نے پھر ترکِ تعلق کا بھی موقع نہ دیا
گھٹتے رشتوں سے کہ ہر چند خبردار تھا میں

اس تماشے میں تاثر کوئی لانے کے لیے
قل ، بانی ، چسے ہونا تھا ، وہ کردار تھا میں

☆

अजब गुरुर में आकर बरस पड़ा बादल
कि फैलता हुआ चारों तरफ़ गुबार जो था

क़दम क़दम रमे-पामाल¹ से मैं तंग आकर
तेरे ही सामने आया, तेरा शिकार जो था

13.

सर-ब-सर एक चमकती हुई तलवार था मैं
मौजे-दरिया से मगर बरसरे-पैकार² था मैं

मैं किसी लम्हए-बेवक़्त³ का इक साया था
या किसी हर्फ़े-तही इस्म⁴ का इज़हार था मैं

एक-इक मौज पटख़ देती थी बाहर मुझको
कभी इस पार था मैं और कभी उस पार था मैं

उसने फिर तर्के-ताल्लुक⁵ का भी मौक़ा न दिया
घटते रिश्तों से कि हरचंद ख़बरदार था मैं

इस तमाशे में तास्सुर⁶ कोई लाने के लिए
क़त्ल, बानी, जिसे होना था, वो किरदार था मैं

1-पारम्परिक चलन 2-तड़ने पर उतारू 3-असमय 4-बेनाम शब्द 5-तंतवंध विच्छेद 6-प्रभाव

شب ، چاند تھا جہاں وہیں اب آفتاب ہے
 سر پر برے یہ صبح کا پہلا عتاب ہے
 آواز کوئی سر سے گذرتی چلی گئی.....
 میں یہ سمجھ رہا تھا کہ حرفِ خطاب ہے
 ہرگز یہ سچ نہیں کہ لگن خام تھی مری
 ہاں کچھ بھی اب کہے جو یہاں کامیاب ہے
 شب ، کون تھا یہاں جو سمندر کو پی گیا
 اب کوئی موج آب نہ موجِ سراب ہے
 اک لمحہ جس کے سینے میں کچھ پل رہا ہے کھوٹ
 باقی ابھی وہ اپنے لیے خود عذاب ہے !

☆

شعلہ ادھر ادھر کبھی سایا یہیں کہیں
 ہوگا وہ برقِ جسم ، سبک پا ، یہیں کہیں !

14.

शब, चाँद था जहाँ... वहीं अब आफ़ताब है
सर पर मेरे ये' सुब्ह का पहला इताब¹ है

आवाज कोई सर से गुज़रती चली गई...
मैं ये समझ रहा था कि हफ़े-ख़िताब² है

हरगिज़ ये सच नहीं कि लगन ख़ाम³ थी मेरी
हाँ कुछ भी अब कहे....जो यहाँ कामयाब है

शब, कौन था यहाँ जो समुन्दर को पी गया
अब कोई मौजे-आब न मौजे-सराब⁴ है

इक लम्हा जिसके सीने में कुछ पल रहा है खोट
बानी अभी वो अपने लिए खुद अजाब है!

15.

शोला इधर उधर....कभी साया यहीं कहीं
होगा वो बर्क-जिस्म⁵, सुबक-पा⁶, यहीं कहीं!

1-प्रकोप 2-संबोधनपरक शब्द 3-कच्ची 4-घमकते हुए रेत-कणों की सहर 5-बिजली की तरह चपल शरीर वाला 6-तेज़ कदम

کن پانیوں کا زور اُسے کاٹ لے گیا
دیکھا تھا ہم نے ایک جزیرہ یہیں کہیں

منسوب جس سے ہو نہ سکا کوئی حادثہ
گم ہو کے رہ گیا ہے وہ لمحہ یہیں کہیں

آوارگی کا ڈر ، نہ کوئی ، ڈوبنے کا خوف
صحرا ہی آس پاس نہ دریا ، یہیں کہیں

وہ چاہتا یہ ہوگا کہ میں ہی اُسے بلاؤں،
میری طرح وہ پھر تا ہے تھا یہیں کہیں!

پانی ذرا سنبھل کے محبت کا موڑ کاٹ
اک حادثہ بھی تاک میں ہوگا یہیں کہیں

☆

تھا تھا - مثل آئینہ - تارہ ، سر افق
اُٹھتی نہ تھی نگاہ دوبارہ ، سر افق

سب دم بخود پڑے تھے جس جسم و جاں لیے
لہرا رہا تھا کوئی شرارہ سر افق

किन पानियों का ज़ोर उसे काट ले गया
देखा था हमने एक जज़ीरा¹ यहीं कहीं

मंसूब² जिससे हो न सका कोई हादसा
गुम होके रह गया है वो लम्हा यहीं कहीं

आवारगी का डर, न कोई, डूबने का ख़ौफ़
सहरा ही आसपास...न दरिया, यहीं कहीं

वो चाहता ये होगा कि मैं ही उसे बुलाऊँ,
मेरी तरह वो फिरता है तन्हा यहीं कहीं!

बानी ज़रा संभलके महबूत का मोड़ काट
इक हादसा भी ताक में होगा यहीं कहीं

16.

तन्हा था मिस्ले-आईना³ तारा, सरे-उफ़ुक⁴
उठती न थी निगाह दोबारा, सरे-उफ़ुक

सब दम बख़ुद⁵ पड़े थे ख़से-जिस्मो-जाँ⁶ लिए
लहरा रहा था कोई शरारा सरे-उफ़ुक

1-उपू 2-संबद्ध 3-आइने की तरह 4-सितिज पर 5-विस्तृत, हेरान 6-देह और प्राण रूपी सूखी घास

اک موج بے پناہ میں ہم یوں اڑے پھرے
جیسے کوئی فلسفی عہارہ سر افق!

کب سے پڑے ہیں بند زمان و مکاں کے در
کوئی صدا نہ کوئی اشارہ سر افق

سب کچھ سمیٹ کر مرے اندر سے لے گیا
اک لوتی کرن کا نظارہ سر افق

☆

منا لینا اس کو ہنر ہے مرا
بہانہ ہر اک کارگر ہے مرا

ہوا ہم سفر ہو گئی ہے بری
قدم نہیں برے، اب، نہ سر ہے مرا

مجھے کیا خبر تھی، جری آنکھ میں
عجب ایک عکسِ دگر ہے مرا

مجھے آسماں کر رہا ہے تلاش،
گئے جنگلوں سے گذر ہے مرا

इक मौजे-बेपनाह¹ में हम यूँ उड़े फिरे
जैसे कोई तिलस्मी गुबारा² सरे-उफुक

कब से पड़े हैं बन्द ज़मानो-मकाँ³ के दर
कोई सदा न कोई इशारा सरे-उफुक

सब कुछ समेटकर मेरे अंदर से, ले गया
इक लौटती किरन का नज़ारा सरे-उफुक

17.

मना लेना उसको हुनर है मेरा
बहाना हर इक कारगर है मेरा

हवा हमसफ़र हो गई है मेरी
कदम हैं मेरे, अब न सर है मेरा

मुझे क्या ख़बर थी, तेरी आँख में
अजब एक अकसे-दिगर⁴ है मेरा

मुझे आस्माँ कर रहा है तलाश,
घाने जंगलों से गुज़र है मेरा

1-ऊँची लहर 2-जादुई गुबारा 3-देज़-काल 4-अन्य परछाई

میں دو دن میں خود ٹچھ سے کٹ جاؤں گا
کہ ہر سلسلہ مختصر ہے مرا!

زمانے - جری رہبری کے لیے
بہت یہ عباہ سفر ہے مرا

ترے سامنے کچھ نہ ہونے کا عکس
مرے سامنے کوئی ڈر ہے مرا

☆

سفر ہے مرا اپنے ڈر کی طرف
جری ایک ذاتِ دیگر کی طرف

بھرے شہر میں اک بیاباں بھی تھا
اشارہ تھا اپنے ہی گھر کی طرف

مرے واسطے جانے کیا لائے گی
گئی ہے ہوا اک کھنڈر کی طرف

بکنارہ ہی کتنے کی سب دیر تھی
پھیلنے گئے ہم بھنور کی طرف

मैं दो दिन में खुद तुझसे कट जाऊँगा!
कि हर सिलसिला मुझतर है मेरा

जमाने - तेरी रहबरी के लिए
बहुत ये सुबारे-सफ़र¹ है मेरा

तेरे सामने कुछ न होने का अक्स
मेरे सामने कोई डर है मेरा

18.

सफ़र है मेरा अपने डर की तरफ़
मेरी एक जाते-दिगर² की तरफ़

भरे शहर में इक बयाबाँ भी था
इशारा था अपने ही घर की तरफ़

मेरे वास्ते जाने क्या लाएगी
गई है हवा इक खण्डर की तरफ़

किनारा ही कटने की सब देर थी
फिसलते गए हम भँवर की तरफ़

1-यात्रा की धूल 2-अन्य व्यक्तित्व

کوئی درمیاں سے نکلا گیا،
نہ دیکھا کسی ہم سفر کی طرف

جری دشمنی خود ہی مائل رہی
کسی رشتہ بے ضرر کی طرف

رہی دل میں حسرت کہ بانی چلیں
کسی منزل پر خطر کی طرف

☆

وہ ستم گر تو بڑا دشمن جاں ہے سب کا
کوئی بھی زخم سے چیخا تو زیاں ہے سب کا

ہے تو اک شخص کے ہونٹوں پہ بڑا قصہ غم
شامل قصہ مگر دودِ نفاق ہے سب کا

آ ہی جاتے ہیں ادھر بیتی زتوں کے جھونکے
اب یہی خانہ غم رنج اماں ہے سب کا

اک چمک سی نظر آجائے تڑپ اٹھتے ہیں
حُسن کے باب میں ادراک جواں ہے سب کا

कोई दरभियाँ से निकलता गया,
न देखा किसी हमसफ़र की तरफ़

तेरी दुश्मनी खुद ही माइल रही
किसी रिश्ताए-बेजरर¹ की तरफ़

रही दिल में हसरत कि बानी चले
किसी मंजिले-पुरखतर² की तरफ़

19.

वो सितमगर तो बड़ा दुश्मने-जाँ है³....सबका
कोई भी ज़ख़्म से चीखा तो ज़ियाँ⁴ है.... सबका

है तो इक शख़्स के होंठों पे तेरा किस्साए-ग़म
शामिले-किस्सा मगर दूदे-फुगौं⁵ है....सबका

आ ही जाते हैं इधर बीती रूतों के झोंके
अब यही ख़ानए-ग़म⁶ कुंजे-अमाँ⁷ है....सबका

इक चमक सी नज़र आ जाए तड़प उठते हैं
हुस्न के बाब⁸ में इदराक⁹ जवाँ है....सबका

1-निस्वार्थ संबंध 2-खतरों से भरी हुई मंजिल 3-जान का दुश्मन 4-नुकसान 5-आँसों का धुआँ 6-दुखों का घर 7-सुरक्षित कोना 8-अध्याय, संदर्भ 9-चेतना

ایک اک شخص ہے ٹوٹا ہوا اندر سے یہاں
کیا چھپائے گا کوئی..... حال عیاں ہے..... سب کا

کوئی سر پھوڑنا چاہے تو نہ اک سنگ ملے،
اب تو اس شہر میں شیشے کا مکاں ہے..... سب کا

خمیہ گرد جو راہوں میں تباہ ہے بانی،
اب بھی سب کا پتہ ہے، یہ نشاں ہے..... سب کا

☆

دن کو دفتر میں اکیلا، شب..... بھرے گھر میں اکیلا
میں کہ عکس منتشر، ایک ایک منظر میں اکیلا

اڑ چلا وہ، اک جدا خاکہ لیے سر میں..... اکیلا
صبح کا پہلا پرندہ آسمان بھر میں اکیلا!

کون دے آواز، خالی رات کے اندھے کونئیں میں
کون اترے..... خواب سے محروم بستر میں..... اکیلا

اُس کو تنہا کر گئی کروٹ کوئی پچھلے چہر کی
پھر اڑا بھاگا وہ سارا دن، گھر بھر میں اکیلا

एक इक शख्स है टूटा हुआ अंदर से यहाँ
क्या छुपाएगा कोई हाल अर्याँ है....सबका

कोई सर फोड़ना चाहे तो न इक संग मिले,
अब तो इस शहर में शीशे का मकाँ है...सबका

खैमए-गर्द¹ जो राहों में तना है बानी,
अब यही सबका पता है, ये निशाँ है....सबका

20.

दिन को दफ़्तर में अकेला, शब... भरे घर में अकेला
मैं कि अक्से-मुन्तशिर² एक एक मंज़र में अकेला

उड़ चला वो, इक जुदा खाका लिए सर में... अकेला
सुबूह का पहला परिन्दा आस्माँ भर में अकेला!

कौन दे आवाज़, खाली रात के अन्धे कुँएँ में
कौन उतरे... ख़्वाब से महरूम³ बिस्तर में... अकेला

उसको तन्हा कर गई करवट कोई पिछले पहर की
फिर उड़ा भागा वो सारा दिन, नगर भर में, अकेला

1-धूल रूपी तन्वू 2-विखरी हुई परछाई 3-वंचित

ایک مدہم آج سی آواز ، سرگم سے الگ کچھ،
رنگ اک دیتا ہوا سا ، پورے منظر میں اکیلا

بولتی تصویر میں اک نقش لیکن کچھ ہکا سا،
ایک حرفِ معتبر ، لفظوں کے لشکر میں اکیلا

جاؤ موجو ، میری منزل کا پتہ کیا پوچھتی ہو،
اک جزیرہ دور افتادہ سمندر میں اکیلا

جانے کس احساس نے آگے نہیں بڑھنے دیا تھا
اب پڑا ہوں قید ، میں رستے کے پتھر میں اکیلا

ہو ہو میری طرح چپ چاپ ، مجھ کو دیکھتا ہے
اک لرزتا ، خوبصورت عکس ، ساغر میں اکیلا

☆

ہر طرف سامنا کوتاہ کمالی کا ہے
عشق اب نام کسی قدر زوالی کا ہے

شہر کا شہر ٹونہ ہے عجب وقتوں کا،
ایک اک شخص یہاں وضعِ مثالی کا ہے

एक मद्धिम आँच सी आवाज़, सरगम से अलग कुछ,
रंग इक दबता हुआ सा, पूरे मंज़र में अकेला

बोलती तस्वीर में इक नक्श¹ लेकिन कुछ हटा सा,
एक हर्फ़े-मोतबर², लफ़्ज़ों के लश्कर में अकेला

जाओ मौजो, मेरी मंज़िल का पता क्या पूछती हो,
इक जज़ीरा... दूर-उफ़तादा³... समुन्दर में... अकेला

जाने किस एहसास ने आगे नहीं बढ़ने दिया था
अब पड़ा हूँ क़ैद, मैं रस्ते के पत्थर में... अकेला

हू-ब-हू मेरी तरह चुपचाप, मुझको देखता है
इक लरज़ता, ख़ूबसूरत अक्स, सागर में अकेला

21.

हर तरफ़ सामना कोताह कमाली⁴ का है
इश्क़ अब नाम किसी क़दरे-ज़वाली⁵ का है

शहर का शहर नमूना है अजब वक़्तों का,
एक इक शह़स यहाँ वज़ए-मिसाली⁶ का है !

1-चिन्ह 2-आश्वस्त करने वाला शब्द 3-दूर पड़ा हुआ अर्थात् उपेक्षित 4-अल्पज्ञता 5-पतित मूल्य, मिट चुके मूल्य 6-उदाहरण देने योग्य, आदर्श चाल-ढालवाला

کوئی منظر ہے نہ عکس، اب کوئی خاکہ ہے نہ خواب
 سامنا آج یہ کس لمحہ خالی کا ہے!
 آ ملاؤں تجھے اک شخص سے آئینے میں
 جس کا سر، شاہ کا ہے، ہاتھ سوالی کا ہے
 اب برے سامنے بائی کوئی رستہ ہے نہ موڑ
 عکس چاروں طرف اک شہر خیالی کا ہے

مجھے پتہ تھا کہ یہ حادثہ بھی ہونا تھا
 میں اُس سے بل کے نہ تھا خوش..... جدا بھی ہونا تھا
 چلو کہ جذبہ اظہار چیخ میں تو ڈھلا،
 کسی طرح اسے آخر ادا بھی ہونا تھا
 بنا رہی تھی عجب چتر ڈوبتی ہوئی شام
 لہو کہیں کہیں شامل برا بھی ہونا تھا
 عجب سفر تھا کہ ہم راستوں سے کٹتے گئے
 پھر اُس کے بعد ہمیں لا پتہ بھی ہونا تھا

कोई मंज़र है न अक्स, अब कोई खाका है न ख़्वाब
सामना आज ये किस लम्हए-ख़ाली¹ का है !

आ मिलाऊँ तुझे इक शहर से आईने में
जिसका सर, शाह का है, हाथ सवाली का है

अब मेरे सामने बानी कोई रस्ता है न मोड़
अक्स चारों तरफ़ इक शहरे-ख़याली² का है

22.

मुझे पता था कि ये हादसा भी होना था
मैं उससे मिलके न था खुश...जुदा भी होना था

चलो कि ज़बए-इज़हार³ चीख में तो ढला,
किसी तरह इसे आखिर अदा भी होना था

बना रही थी अजब चित्र डूबती हुई शाम
लहू कहीं कहीं शामिल मेरा भी होना था

अजब सफ़र था कि हम रास्तों से कटते गए
फिर उसके बाद हमें लापता भी होना था

1-रिक्त क्षण 2-काल्पनिक नगर 3-अभिव्यक्ति की भावना

میں تیرے پاس چلا آیا لے کے ہکیوے گلے
کہاں خبر تھی کوئی فیصلہ بھی ہونا تھا!

ٹھہار بن کے اڑے تیز رو، کہ ان کے لیے،
تو کیا ضرور کوئی راستہ بھی ہونا تھا!

سراپے پر تھا دھواں جمع، ساری بستی کا
کچھ اس طرح کہ کوئی سانحہ بھی ہونا تھا

مجھے ذرا سا گماں بھی نہ تھا، اکیلا ہوں
کہ دشمنوں کا کہیں سامنا بھی ہونا تھا!

☆

کلر رہا ہوں یہ، اندھے فاصلوں سے میں
نہ اب ہوں رہ سے عبارت، نہ منزلوں سے میں

کہاں کہاں سے الگ کر سکو گے تم مجھ کو
بجوا ہوا ہوں یہاں لاکھ بسلیلوں سے میں

قدم بیلانے میں سب کر رہے تھے قوتیں صرف
بلا ہوں راہ میں کتنے ہی قافلوں سے میں

मैं तेरे पास चला आया लेके शिकवे गिले
कहाँ खंवर थी कोई फ़ैसला भी होना था!

गुबार बनके उड़े तेज़रौ¹, कि इनके लिए,
तो क्या ज़रूर कोई रास्ता भी होना था!

सराय पर था धुआँ जम्ज़ सारी बस्ती का
कुछ इस तरह कि कोई सानिहा² भी होना था

मुझे ज़रा सा गुमों भी न था, अकेला हूँ
कि दुश्मनों का कहीं सामना भी होना था!

23.

गुज़र रहा हूँ सियह, अन्धे फ़ासलों से मैं
न अब हूँ रह³ से इबारत⁴, न मंज़िलों से मैं

कहाँ कहाँ से अलग कर सकोगे तुम मुझको
जुड़ा हुआ हूँ यहाँ लाख सिलसिलों से मैं

कदम मिलाने में सब कर रहे थे कुव्वतें सर्फ⁵
मिला हूँ राह में कितने ही काफ़िलों से मैं

1-तीव्र गति से 2-घटना 3-'राह' का संक्षिप्त रूप 4-आशय 5-व्यय

میں اُس کے پاؤں کی زنجیر دیکھتا تھا بہت
کچھ آشنا نہ تھا اپنی ہی مشکلوں سے میں

عجیب لوگ ہیں ، کچھ کہہ دو ، مان لیتے ہیں ،
ہوا ہوں زیر بہت زود قاتلوں سے میں

کہو تو ساتھ بہالے چلوں یہ دکھ بھرے شہر
گزر رہا ہوں عجب خستہ ساحلوں سے میں

میں کیوں بُرائی سُنوں دوستوں کی اے بانی
الگ نہیں انہیں کھوٹے کھرے دلوں سے میں

☆

مجھ سے اک اک قدم پر پھڑکتا ہوا کون تھا
ساتھ میرے ، مجھے کیا خبر ، دوسرا کون تھا

تاہم منزل پہ بکھری ہوئی گردِ پاکس کی ہے
اے برابر قدم دوستوں ، وہ جُدا کون تھا

جانے کس خطرے نے بخش دی سب کو ہم سائگی
ورنہ اک دوسرے سے یہاں آشنا کون تھا

मैं उसके पाँव की जंजीर देखता था बहुत
कुछ आशाना¹ न था अपनी ही मुश्किलों से मैं

अजीब लोग हैं, कुछ कह दो, मान लेते हैं,
हुआ हूँ जेर² बहुत जूद-कायलो³ से मैं

कहो तो साथ बहा ले चलूँ ये दुख भरे शहर
गुजर रहा हूँ अजब खस्ता साहिलों⁴ से मैं

मैं क्यों बुराई सुनूँ दोस्तों की ऐ बानी
अलग नहीं इन्हीं छोटे-खरे दिलों से मैं

24.

मुझसे इक इक कदम पर बिछड़ता हुआ कौन था
साथ मेरे, मुझे क्या ख़बर, दूसरा कौन था

ता-ब-मज़िल⁵ ये बिखरी हुई गर्दे-पा⁶ किसकी है
ऐ बराबर-क़दम⁷ दोस्तो, वो जुदा कौन था

जाने किस खतरे ने बख़्श दी सबको हमसाएगी⁸
वर्ना इक दूसरे से यहाँ आशाना कौन था

1-परिवित 2-परास्त 3-श्रीघ्न स्वीकार करने वाले 4-टूटे हुए किनारे 5-मज़िल तक 6-पाँव की धूल
7-सहगामी 8-पारस्परिकता

پہلے کس کی نظر میں خزانے تھے اُس پار کے
بیشل میرے، حدوں سے ادھر دیکھتا کون تھا

کون تھا، موسم صاف بھی جس کو آیا نہ راس
کچھ تو ہم سے کہو وہ ہلاک ہوا کون تھا

کون تھا، میرے پر تولنے پر نظر جس کی تھی،
جس نے سر پر برے آسماں رکھ دیا کون تھا

کس کی بھیگی صدا جھانکتی تھی مری خاک سے
میں تھا اپنا کھنڈر، اس میں میرے سوا کون تھا

کون تھا قابلِ قہر ہو نا تھا جس کو ابھی،
ٹوٹ کر جس پہ برسی بھیانک گھٹا، کون تھا

☆

عجیب تجربہ تھا بھیڑ سے گلدارنے کا
اُسے بہانہ ملا مجھ سے بات کرنے کا

پھر ایک موج، تیرے آب اُس کو کھینچ گئی
تماشہ ختم ہوا ڈوبنے ابھرنے کا

पहले किसकी नज़र में ख़जाने थे उस पार के
मिस्तल मेरे¹, हदों से उधर देखता कौन था

कौन था, मौसम-साफ़² भी जिसको आया न रास
कुछ तो हमसे कहो वो हलाके-हवा³ कौन था

कौन था, मेरे पर तोलने पर नज़र जिसकी थी,
जिसने सर पर मेरे आस्माँ रख दिया, कौन था

किसकी भीगी सदा झाँकती थी मेरी खाक से
मैं था अपना खण्डर, इसमें मेरे सिवा कौन था

कौन था कायले-क़हर⁴ होना था जिसको अभी
टूटकर जिस प' बरसी भयानक घटा, कौन था

25.

अजीब तज़बा था भीड़ से गुज़रने का
उसे बहाना मिला मुझसे बात करने का

फिर एक मौज, तहे-आब⁵ उसको खींच गई
तमाशा छात्म हुआ डूबने-उभरने का

1-मेरी तरफ़ 2-साफ़ या खुला मौसम 3-हवा से आहत 4-कोप को स्वीकार करने वाला 5-पानी की गहराई

مجھے خبر ہے کہ رستہ مزار چاہتا ہے،
میں خستہ پا سہی ، لیکن نہیں ٹھہرنے کا!

تھما کے ایک بکھر تا ٹھکاب میرے ہاتھ
تماشہ دیکھ رہا ہے وہ میرے ڈرنے کا

یہ آسماں میں سیاہی بکھیر دی کس نے
ہمیں تھا شوق بہت اس میں رنگ بھرنے کا

کھڑے ہوں دوست کہ دشمن، صفیں سب ایک سی ہیں،
وہ جانتا ہے ، ادھر سے نہیں گذرنے کا!

نگاہ ہم سفروں پر رکھو سر منزل،
کہ مرحلہ ہے یہ، اک دوسرے سے ڈرنے کا!

لپک لپک کے وہیں ڈھیر ہو گئے آخر،
جتن کیا تو بہت سطح سے ابھرنے کا!

کراں کراں نہ سزا کوئی سیر کرنے کی
سفر سفر نہ کوئی حادثہ گذرنے کا

کسی مقام سے کوئی خبر نہ آنے کی،
کوئی جہاز زمیں پر نہ اب اترنے کا

मुझे खबर है कि रस्ता मजार चाहता है
 मैं खस्ता-पा¹ सही, लेकिन नहीं ठहरने का!

धमाके एक बिखरता गुलाब मेरे हाथ
 तमाशा देख रहा है वो मेरे डरने का

ये आसमाँ में सियाही बिखेर दी किसने
 हमें था शौक़ बहुत इसमें रंग भरने का

खड़े हों दोस्त कि दुश्मन, सफ़े² सब एक सी हैं,
 वो जानता है, इधर से नहीं गुज़रने का!

निगाह हमसफ़रों पर रखो सरे-मंजिल,
 कि मरहला³ है ये, इक दूसरे से डरने का

लपक लपक के वहीं ढेर हो गए आख़िर
 जतन किया तो बहुत सत्ह से उभरने का!

कराँ कराँ⁴ न सजा कोई सैर करने की
 सफ़र सफ़र न कोई हादसा गुज़रने का

किसी मक़ाम से कोई ख़बर न आने की
 कोई जहाज़ ज़मीं पर न अब उतरने का

1-थका हुआ 2-पक्तियों 3-मंजिल, पड़ाव 4-इस छोर से उस छोर तक

کوئی صدا نہ سماعت پہ نقش ہونے کی
نہ کوئی عکس بری آنکھ میں ٹھہرنے کا

نہ اب ہو ابرے سینے میں سنٹانے کی
نہ کوئی زہر بری زوح میں اترنے کا

کوئی بھی بات نہ مجھ کو اداس کرنے کی
کوئی سلوک نہ مجھ پر گراں گذرنے کا

بس ایک چیخ گری تھی پہاڑ سے یک لخت
عجب نظارہ تھا پھر دُھند کے پکھرنے کا

☆

وہاں سے اب کوئی آئے گا ٹوٹ کر بھی کیا
حریف کیا، برے یارانِ معجز بھی کیا!

نہ اب ہے آب میں موتی، نہ خاک میں سونا
مری طرح ہوئے خالی یہ بحر و بر بھی کیا

نہیں رہے گا یہ ہنگامہ کچھ قدم تک بھی
پھر اُس کے بعد، مرے ساتھ ہم سفر بھی کیا

कोई सदा¹ न समाञ्जस² प' नक़श होने की
न कोई अक्स³ मेरी आँख में ठहरने का

न अब हवा मेरे सीने में सनसनाने की
न कोई ज़हर मेरी रुह में उतरने का

कोई भी बात न मुझको उदास करने की
कोई सुलूक न मुझ पर गिरौं⁴ गुज़रने का

बस एक चीख़ गिरी थी पहाड़ से यकलख़्त⁵
अजब नज़ारा था फिर धुंद के बिखरने का

26.

वहाँ से अब कोई आएगा लौटकर भी क्या
हरीफ़⁶ क्या, मेरे याराने-मोतबर⁷ भी क्या!

न अब है आब में मोती, न ख़ाक में सोना
मेरी तरह हुए ख़ाली ये बहरो-बर⁸ भी क्या

नहीं रहेगा ये हंगामा कुछ क़दम तक भी
फिर उसके बाद, मेरे साथ हमसफ़र भी क्या

1-आवाज़ 2-श्रवण-शक्ति 3-प्रतिबिम्ब 4-भारी 5-अचानक 6-प्रतिद्वंद्वी 7-भरोसेमंद दोस्त 8-जल-थल
(समुद्र व स्थल)

خبر اڑانے سے موقع پہ پھوکتا بھی نہیں
ہمارا دوست ہے، لیکن ہے بے ضرر بھی کیا

وہ فاصلے تھے کہ دونوں کو راس آتے گئے
کسی کو دوسرے کی پھر کوئی خبر بھی کیا

ہمارے دل میں ہے کیا، سن تو کچھ تہسلی سے
کہ ٹوکنا یہ جڑا بات بات پر بھی کیا!

کسی چٹان کے اندر اتر گیا ہوں میں،
کہ اب برے لیے طوقاں بھی کیا، بھنور بھی کیا

عجب مثال ہے غم کی یہ قصہ..... پڑھیے اسے
گہیں گہیں سے بھی کیا، اور تمام تر بھی کیا

چلو کہ بچین سے بیٹھیں کہیں تو اے یارو
نہیں ہے شہر سے باہر کوئی کھنڈر بھی کیا

یہی کہ خالی سے لفظوں کو معنی دیتے پھریں
ہمارے پاس ہے اس کے ہوا ہنر بھی کیا

ذرا تو دیکھو کہ کس حال میں ہیں میرے رقیب
کہ اب نگاہ نہ ڈالو گے تم ادھر بھی کیا

खबर उड़ाने से मौका प' चूकता भी नहीं
हमारा दोस्त है, लेकिन है बेज़रर¹ भी क्या

वो फ़ासले थे कि दोनों को रास आते गए
किसी को दूसरे की फिर कोई खबर भी क्या

हमारे दिल में है क्या, सुन तो कुछ तसल्ली से
कि टोकना ये तेरा बात बात पर भी क्या!

किसी चटान के अंदर उतर गया हूँ मैं,
कि अब मेरे लिए तूफ़ाँ भी क्या, भँवर भी क्या

अजब मिसाल है गुम की ये किस्सा...पढ़िए इसे
कहीं कहीं से भी क्या, और तमामतर भी क्या

चलो कि चैन से बैठें कहीं तो ऐ यारो
नहीं है शहर से बाहर कोई खण्डर भी क्या

यही कि ख़ाली से लफ़्जों को मानी देते फिरें
हमारे पास है इसके सिवा हुनर भी क्या

जुरा तो देखो कि किस हाल में हैं मेरे रकीब
कि अब निगाह न डालोगे तुम उधर भी क्या

1-हानि न पहुँचाने वाला, निस्वार्थ (मित्र)

جواب وہ نہ ہوئے ہم کہیں بھی ، تیرے بعد،
کہ سچ تو یہ ہے ہمیں تھا کسی کا ڈر بھی کیا

تمام سلسلے اُن گیسوؤں کے ساتھ گئے
بدائے ابر بھی کیا ، سایۂ شجر بھی کیا

مختلستی خاک پہ تنہا پڑا ہے برگِ اُمید
ہوا کا اِس لئے رتے سے اب گذر بھی کیا

کھلے فراخ سے اِک روز ہم سے آبل بیٹھ
کبھی کبھی کی ملاقات مختصر بھی کیا

عجیب گھور سیاہی میں غم کھڑا ہوں میں
بدونِ در بھی یہاں کیا ، دُرونِ در بھی کیا

اُٹھائی خود ہی یہ دیوار خود نہ پھاند سکے
وہ پہلی بخت بھی کیا ، کوششِ دگر بھی کیا

کسی عجیب سی دُھن میں اُداس پھرتا ہوں
برے لیے یہ تماشائے رہ گذر بھی کیا!

ہمارے آگے تو یوں بھی نہ تھے نشانِ راہ
ہوا نے چاٹ لی گردِ پسِ سفر بھی کیا

जवाबदेह न हुए हम कहीं भी, तेरे बाद,
कि सच तो ये है हमें था किसी का डर भी क्या

तमाम सिलसिले उन गेसुओं के साथ गए
रिदाए-अब्र¹ भी क्या, सायए-शजर² भी क्या

झुलसती खाक प' तन्हा पड़ा है बर्गे-उम्मीद³
हवा का इस लुटे रस्ते से अब गुज़र भी क्या

खुले फ़राग⁴ से इक रोज़ हमसे आ मिल बैठ
कभी कभी की मुलाक़ाते-मुद्धतसर⁵ भी क्या

अजीब घोर सियाही में गुम खड़ा हूँ मैं
बरूने-दर⁶ भी यहाँ क्या, दरूने-दर⁷ भी क्या

उठाई खुद ही ये दीवार....खुद न फाँद सके
वो पहली जस्त⁸ भी क्या, कोशिशे-दिगर⁹ भी क्या

किसी अजीब सी धुन में उदास फिरता हूँ
मेरे लिए ये तमाशाए-रहगुज़र भी क्या

हमारे आगे तो यूँ भी न थे निशाने-राह¹⁰
हवा ने चाट ली गर्दे-पसे-सफ़र¹¹ भी क्या

1-बादल रूपी चादर 2-पेड़ की छाँव 3-आशा रूपी पत्ते 4-फुर्सत 5-छेटी सी मुलाक़ात 6-द्वार के बाहर
7-द्वार के भीतर 8-छल्लाँग 9-अन्य प्रयास 10-रस्ते के निशान 11-सफ़र के समय पीछे उड़ने वाली
धूल

میں ہوں عجیب سی محرومیوں میں غم اس وقت
 کہ مجھ پہ تیری حبت بھری نظر بھی کیا
 یہ تم نے کس کے لیے شہر چھوڑا اے بائی
 کہ اب نہ لوٹ کے آؤ گے اپنے گھر بھی کیا!

☆

اک دھواں پکا پکا سا پھیلا ہوا ہے افق تا افق
 ہر گھڑی اک سماں ڈوبتی شام کا ہے افق تا افق
 کس کے دل سے اڑیں ہیں سلگتے ہوئے غم کی چنگاریاں
 دوستو شب گئے نہ اجالا سا کیا ہے افق تا افق
 ہجر تو روح کا ایک موسم سا ہے، جانے کب جائے گا
 سرد تنہائیوں کا عجب سلسلہ ہے افق تا افق
 سینکڑوں وحشتیں چینی پھر رہی ہیں کراں تا کراں
 آسماں نیلی چادر سی تانے پڑا ہے افق تا افق
 روتے روتے کوئی تھک کے پُپ ہو گیا دو گھڑی کے لیے
 ایک نمناک سہا اب چننا ہے افق تا افق

मैं हूँ अजीब सी महरूमियों¹ में गुम इस वक्त
कि मुझ प' तेरी महबूबत भरी नज़र भी क्या

ये तुमने किसके लिए शहर छोड़ा ऐ बानी
कि अब न लौटके आओगे अपने घर भी क्या

27.

इक धुआँ हल्का हल्का सा फैला हुआ है उफुक़ ता उफुक़²
हर घड़ी इक समों डूबती शाम का है उफुक़ ता उफुक़

किसके दिल से उड़ीं हैं सुलगते हुए ग़म की चिंगारियाँ
दोस्तो शब गए ये उजाला सा क्या है उफुक़ ता उफुक़

हिज़ तो रूह का एक मौसम सा है, जाने कब जाएगा
सर्द तन्हाइयों का अजब सिलसिला है उफुक़ ता उफुक़

सैंकड़ों वहशतें चीखतीं फिर रही हैं कराँ ता कराँ³
आसमाँ नीली चादर सी ताने पड़ा है उफुक़ ता उफुक़

रोते रोते कोई थकके चुप हो गया दो घड़ी के लिए
एक नमनाक⁴ सन्नाटा अब चीखता है उफुक़ ता उफुक़

1-विफलताएँ 2-कितितज से खितितज तक 3-इस छेर से उस छेर तक 4-गीला, आद

ایک میں ہوں پُرانا ہوا جا رہا ہوں نفس یک نفس
وہ سحر ہے شفق در شفق ، وہ نضا ہے اُفق تا اُفق

میرے ذہن کلفتہ کی رنگینوں کی طرح ہو ہو
ایک نظارہ لمحہ بہ لمحہ نیا ہے اُفق تا اُفق

☆

قدم زمیں پہ نہ تھے راہ ہم بدلتے کیا
ہوا بندگی تھی یہاں پیٹھ پر سنپھلتے کیا

پھر اُس کے ہاتھوں ہمیں اپنا قتل بھی تھا قبول
کہ آچکے تھے قریب اتنے ، بچ نکلتے کیا

یہی سمجھ کے وہاں سے میں ہو لیا رخصت
وہ چلتے ساتھ ؛ مگر دُور تک تو چلتے کیا!

تمام شہر تھا اک ، موم کا عجائب گھر
چڑھا جو دن تو یہ منظر نہ پھر کھلے کیا!

وہ آسماں تھے کہ آنکھیں سمیٹیں کیسے
وہ خواب تھے کہ مری زندگی میں ڈھلتے کیا

एक मैं हूँ पुराना हुआ जा रहा हूँ नफ़स यक नफ़स¹
 वो सहर² है शफ़क़-दर-शफ़क़³ वो फ़ज़ा है उफ़ुक़ ता उफ़ुक़

मेरे जहने-शगुफ़ता⁴ की रंगीनियों की तरह हू-ब-हू
 एक नज़़ारा लम्हा-ब-लम्हा⁵ नया है उफ़ुक़ ता उफ़ुक़

28.

कदम ज़मीं प' न थे....राह हम बदलते क्या
 हवा बँधी थी यहाँ पीठ पर....संभलते क्या

फिर उसके हाथों हमें अपना कत्ल भी था कुबूल
 कि आ चुके थे करीब इतने, बच निकलते क्या

यही समझके वहाँ से मैं हो लिया रुड़सत
 वो चलते साथ; मगर दूर तक तो चलते क्या!

तमाम शहर था इक, मोम का अजायबघर
 चढ़ा जो दिन तो ये मंज़र न फिर पिघलते क्या!

वो आसमाँ थे कि आँखें समेटतीं कैसे
 वो ख़्वाब थे कि मेरी ज़िन्दगी में ढलते क्या

نہا ہے کی اُسے بھی تھی آرزو تو بہت،
ہوا ہی تیز تھی اتنی چراغ جلتے کیا!

اُٹھے اور اُٹھ کے اُسے جا سنایا دکھ اپنا
کہ ساری رات پڑے کروٹیں بدلتے کیا

نہ آبروئے تعلق ہی جب رہی باقی
بغیر بات کئے ہم وہاں سے نلتے کیا

☆

جو زہر ہے مرے اندر وہ دیکھنا چاہوں
عجب نہیں، میں جرا بھی کبھی بُرا چاہوں

میں اپنے پیچھے عجب گرد چھوڑ آیا ہوں
مجھے بھی رہ نہ ملے گی جو کوٹنا چاہوں

وہ اِک اشارۂ زیریں ہزار خوب سہی
میں اب صدا کے صلے میں کوئی صدا چاہوں

مرے حروف کے آئینے میں نہ دیکھ مجھے
میں اپنی بات کا مفہوم دوسرا چاہوں

निबाहने की उसे भी थी आरज़ू तो बहुत,
हवा ही तेज़ थी इतनी....चराग़ जलते क्या!

उठे और उठके उसे जा सुनाया दुख अपना
कि सारी रात पड़े करवटे¹ बदलते क्या

न आबरूप-ताल्लुक¹ ही जब रही बानी
बगैर बात किए हम वहाँ से टलते क्या

29.

जो जहर है मेरे अंदर वो देखना चाहूँ
अजब नहीं, मैं तेरा भी कभी बुरा चाहूँ

मैं अपने पीछे अजब गर्द छोड़ आया हूँ
मुझे भी रह² न मिलेगी जो लौटना चाहूँ

वो इक इशारए-जेरी³ हजार ख़ूब सही
मैं अब सदा के सिले में कोई सदा चाहूँ

मेरे हुरूफ़⁴ के जाईने में न देखा मुझे
मैं अपनी बात का मफ़हूम⁵ दूसरा चाहूँ

1-संबंधों की मर्यादा 2-राह का लघु रूप 3-प्रच्छन्न संकेत, हल्का सा इशारा 4-शब्द 5-भाव, अर्थ या तात्पर्य

گھلی ہے دل پہ کچھ اس طرح غم کی بے سبھی
جری خبر نہ کچھ اپنا ہی اب پتہ چاہوں

کوئی پہاڑ، نہ دریا، نہ آگ رستے میں
عجب ساٹ سفر ہے کہ حادثہ چاہوں

نہ چاہوں دُور سے آتی ہوئی کوئی آواز
نہ اپنے ساتھ میں اپنی صدائے پا، چاہوں

نہ چاہوں سامنے اپنے کوئی بھی عکسِ سفر
نہ سر پہ راہ دکھائی ہوئی ہوا چاہوں

وہ لائے تو کسی رنجش کو درمیاں بائی
میں بات کرنے کو تھوڑا سا فاصلہ چاہوں

☆

آج تو رونے کو جی ہو جیسے
پھر کوئی آس بندھی ہو جیسے

شہر میں پھرتا ہوں تنہا تنہا
آشنا ایک وہی ہو جیسے!

खुली है दिल प' कुछ इस तरह गुम की बेसबबी
तेरी खबर न कुछ अपना ही अब पता चाहूँ

कोई पहाड़, न दरिया, न आग रस्ते में
अजब सपाट सफ़र है कि हादसा चाहूँ

कत्आ

न चाहूँ दूर से आती हुई कोई आवाज
न अपने साथ मैं अपनी सदाए-पा,¹ चाहूँ

न चाहूँ सामने अपने कोई भी अक्से-सफ़र²
न संर प' राह दिखाती हुई हवा चाहूँ

वो लाए तो किसी रंजिश को दरमियाँ बानी
मैं बात करने को थोड़ा सा फ़ासला चाहूँ

30.

आज तो रोने को जी हो जैसे
फिर कोई आस बँधी हो जैसे

शहर में फिरता हूँ तन्हा तन्हा
आशाना³ एक वही हो जैसे !

1-सगचाप, शॉलों की आइट 2-सफ़र का साथ 3-परिचित

ہر زمانے کی صدائے مستحب،
میرے سینے سے اٹھی ہو جیسے!

خوش ہوئے ترکِ وفا کر کے ہم
اب مقدر بھی یہی ہو جیسے!!

اس طرح شب گئے ٹوٹی ہے امید
کوئی دیوارِ مری ہو جیسے!

یاسِ آلود ہے ایک ایک گھڑی
زرد پھولوں کی لڑی ہو جیسے

میں ہوں اور وعدہٴ فردا تیرا
..... اور اکِ عمرِ پڑی ہو جیسے

بے کشش ہے وہ نگاہِ صد لطف
اکِ محبت کی کی ہو جیسے!

کیا عجب لمحہٴ غمِ گذرا ہے.....
عمرِ اکِ بیتِ صحنی ہو جیسے!

हर जमाने की सदाए-मातूब¹
मेरे सीने से उठी हो जैसे !

छुश हुए तर्के-वफा² करके हम
अब मुक़दर भी यही हो जैसे !!

इस तरह शब गए टूटी है उम्मीद
कोई दीवार गिरी हो जैसे

यासआलूद³ है एक एक धड़ी
जर्द फूलों की लड़ी हो जैसे

मैं हूँ और वादए-फ़र्दा⁴ तेरा
...और...इक उम्र पड़ी हो जैसे

बेकशिश⁵ है वो निगाहे-सदलुत्फ⁶
इक महबूबत की कमी हो जैसे !

क्या अजब लम्हए-ग़म गुज़रा है...
उम्र इक बीत गई हो जैसे !

1-प्रकोप-भयान्की की आवाज़ 2-वचन-बंध 3-निराशापूर्ण 4-आने वाले कल का वचन 5-अनाकर्षक
6-अत्यधिक अनुकंपा, आनंददायी दृष्टि

بجائے ہم سفری اتنا رابطہ ہے بہت،
کہ میرے حق میں جری ”بے ضرر“ دعا ہے بہت

تھی پاؤں میں کوئی زنجیر..... بچ گئے ، ورنہ
رم ہوا کا تماشہ یہاں رہا ہے بہت

یہ موڑ کاٹ کے منزل کا عکس دیکھو گے
اسی جگہ مگر امکانِ حادثہ ہے بہت

بس ایک چیخ ہی یوں تو ہمیں ادا کر دے
معاملہ ہنرِ حرف کا جدا ہے بہت!!

میری خوشی کا وہ کیا کیا خیال رکھتا ہے
کہ جیسے میری طبیعت سے آشنا ہے بہت

تمام عمر جنہیں ہم نے ٹوٹ کر چاہا ،
ہمارے ہاتھوں انہیں پر ستم ہوا ہے بہت

ذرا بٹھو تھا کہ بس بیڑا آگرا مجھ پر
کہاں خبر تھی کہ اندر سے کھوکھلا ہے بہت

बजाए-हमसफ़री इतना राबता¹ है बहुत,
कि मेरे हक में तेरी “बेज़रर” दुआ है बहुत

थी पाँव में कोई जंजीर....बच गए, वना
रमे-हवा² का तमाशा यहाँ रहा है बहुत

ये मोड़ काटके मंज़िल का अक्स देखोगे
इसी जगह मगर इम्काने-हादसा³ है बहुत

बस एक चीख ही यूँ तो हमें अदा कर दे
मुआमला हुनरे-हर्फ⁴ का जुदा है बहुत!!

मेरी खुशी का वो क्या क्या खयाल रखता है
कि जैसे मेरी तबीअत से आशना है बहुत

तमाम उम्र जिन्हें हमने टूट कर चाहा,
हमारे हाथों उन्हीं पर सितम हुआ है बहुत

ज़रा फ़ुआ था कि बस पेड़ आ गिरा मुझ पर
कहाँ ख़बर थी कि अंदर से खोखला है बहुत

1-संबंध 2-हवा की चीकड़ी अर्थात् हवा का तेज़ बहाव 3-दुर्घटना की संभावना 4-बात करने की कला

کوئی کھڑا ہے مری طرح بھیڑ میں تنہا
 نظر بچا کے مری ست دیکھتا ہے بہت
 یہ احتیاط کدہ ہے کڑے اصولوں کا
 ذرا سے نقص پہ بالی یہاں سزا ہے بہت

☆

شب وہاں تذکرہ کم ہنراں تھا کتنا
 کیا چمکتا کوئی شعلہ کہ دھواں تھا کتنا
 ہم کھینچے بیٹھے تھے ہمشیر برہنہ کی طرح
 ہم پہ اک پھول کا سایہ بھی گراں تھا کتنا!
 پھر نہ گنجائش یک صدمہ بھی ہم تم میں رہی
 ٹوٹتا بسلسلہ دونوں پہ عیاں تھا کتنا
 دیکھ لی تھی برے اندر کی سیاہی اُس نے
 اک ستارہ مری جانب گراں تھا کتنا!
 آنکھ سورج نے پڑالی تو جبین ، پر بت نے ،
 کچھ ہوا لے اُڑی ، سرمایہ جاں تھا کتنا

कोई खड़ा है मेरी तरह भीड़ में तन्हा
नज़र बचाके मेरी सिम्त¹ देखता है बहुत

ये एहतियातकदा² है कड़े उसूलों का
ज़रा से नक्स³ पे बानी यहाँ सज़ा है बहुत

32.

शब वहाँ तज़िकरण-कमहुराँ⁴ था कितना
क्या चमकता कोई शोला कि धुआँ था कितना

हम खिंचे बैठे थे शमशीरे-बरहना⁵ की तरह
हम प' इक फूल का साया भी गिराँ⁶ था कितना!

फिर न गुंजायशे-यक सदमा भी हम तुम में रही
टूटता सिलसिला दोनों प' अयाँ था कितना!

देख ली थी मेरे अंदर की सियाही उसने
इक सितारा मेरी जानिब निगराँ⁷ था कितना!

आँख सूरज ने चुरा ली तो जबी⁸, परबत ने,
कुछ हवा ले उड़ी, सरमायए-जाँ था कितना!

1-तरफ़, ओर 2-सावधानी बरतने वाली जगह 3-दोष, विकृति 4-अयोग्य लोगों की चर्चा 5-नंगी तलवार
6-भारी 7-मेरी ओर देखता हुआ 8-तलाट

ایک آواز کہ ہونٹوں پہ جی تھی کب سے
ایک زہراب کہ سینے میں رواں تھا کتنا!

بن کے ہم رہ گئے یک قطرہ تلاطم ہی کا جھاگ
ہم کہ پی جائیں گے، دریا ہی گماں تھا کتنا!

☆

نہ حریفانہ برے سامنے آ، میں کیا ہوں
تیرا ہی جھونکا ہوں اے تیز ہوا، میں کیا ہوں

رقص یک قطرہ ٹوں، آپ کشش، آپ بچوں
اے کہ صد تشنگی حرف و صدا، میں کیا ہوں

ایک ٹہنی کا یہاں اپنا مقدر کیا،
پیڑ کا پیڑ ہی گرنا ہے جدا میں کیا ہوں

اک بکھرتی ہوئی ترمیم بدن ہو تم بھی
راکھ ہوتے ہوئے منظر کے ہوا، میں کیا ہوں

تُو بھی زنجیر پہ زنجیر بڑھا ہے مری سمت
ساتھ میرے بھی روایت ہے نیا میں کیا ہوں

एक आवाज कि होंटों प' जमी थी कब से
एक जहराब¹ कि सीने में रवाँ था कितना!

बनके हम रह गए एक कतरा तलातुम² ही का झाग
हम कि पी जाएँगे, दरिया ही, गुमाँ था कितना!

33.

न हरीफ़ाना³ मेरे सामने आ, मैं क्या हूँ
तेरा ही झोंका हूँ ऐ तेज हवा, मैं क्या हूँ

रक़से-यक कतरए-खूँ⁴ आप कशिश, आप जुनूँ⁵
ऐ कि सद तिशनगिए-हफ़ों-सदा,⁶ मैं क्या हूँ

एक टहनी का यहाँ अपना मुक़द्दर कैसा,
पेड़ का पेड़ ही गिरता है....जुदा मैं क्या हूँ

इक बिखरती हुई तर्तीबे-बदन⁷ हो तुम भी
राख होते हुए मंज़र के सिवा, मैं क्या हूँ

तू भी जंजीर-ब-जंजीर बढ़ा है मेरी सिम्त
साथ मेरे भी रिवायत⁸ है....नया मैं क्या हूँ

1-ज़हर का घोल 2-उसलती हुई सहर 3-प्रतिद्वंद्वी जैसा 4-बूँद भर खून का स्पन्दन 5-दीयानगी
6-आवाज़ की अत्यधिक प्यास 7-जिस्म का बिखरता हुआ क्रम

کون ہے جس کے سبب تجھ میں محبت جاگی
مجھ میں کیا تجھ کو نظر آیا بتا میں کیا ہوں

ابھی ہوتا ہے مجھے اور کہیں جا کے طلوع
ڈوبتے نہر کے ہمراہ نبھا میں کیا ہوں!

☆

اگر باقی کوئی رشتہ رہے گا،
جرے جی کو بھی کچھ دکھ سا رہے گا!

چلو رسم وفا ہم بھی اٹھا دیں،
کوئی دن شہر میں چرچا رہے گا!

نہ جائے گا کبھی دل سے جرا غم،
یہ جوگی دشت میں بیٹھا رہے گا.....!

جرے خستہ مزاجوں کو ہمیشہ
جنوں ترکِ محبت کا رہے گا

یہ دشتِ دل ہے، کوئی آئے یا جائے
برابر ایک ستارے کا رہے گا

कौन है जिसके सबब तुझमें महबबत जागी
मुझमें क्या तुझको नज़र आया..बता... मैं क्या हूँ

अभी होना है मुझे और कहीं जाके तुलूअ¹
डूबते मेहर के हमराह बुझा मैं क्या हूँ!

34.

अगर बाकी कोई रिश्ता रहेगा,
तेरे जी को भी कुछ दुख सा रहेगा!

चलो रस्मे-वफ़ा हम भी उठा दें,
कोई दिन शहर में चर्चा रहेगा!

न जाएगा कभी दिल से तेरा गम,
ये जोगी दश्त² में बैठा रहेगा!

तेरे ख़स्ता, मिजाजो³ को हमेशा
जुनू⁴ तक⁶-महबबत⁵ का रहेगा

ये दश्ते-दिल है, कोई आए या जाए
बराबर एक सन्नाटा रहेगा

ہوائے یاس کا ہلکا سا جھونکا
جرے آنے سے پہلے آ رہے گا

ہم اک دن خود سے غافل ہو رہیں گے
جرا غم دل ہی میں رکھا رہے گا!

عدم کی سمت بڑھتا جائے گا دل
تجھے آواز بھی دیتا رہے گا

ابد تک ادھ گھسی آنکھوں میں تیری
کوئی جادو ، کوئی دھوکا رہے گا

☆

نُجھی ہے نُجھ میں کوئی شے ، اسے نہ غارت کر
جو ہو سکے تو کہیں دل لگا ، محبت کر

ادا یہ کس کئے پتے سے ٹو نے سیکھی ہے
ستم ہوا کا ہو اور شاخ سے شکایت کر

نہ ہو نخل یرے اندر کی ایک دنیا میں
بڑی خوشی سے برد بحر پر حکومت کر

हवाए-यास¹ का हल्का सा झोंका
तेरे आने से पहले आ रहेगा

हम इक दिन खुद से गाफिल² हो रहेंगे!
तेरा गम दिल ही में रक्खा रहेगा

अदम³ की सिम्त बढ़ता जाएगा दिल
तुझे आवाज भी देता रहेगा

अबद⁴ तक अधखुली आँखों में तेरी
कोई जादू, कोई धोका रहेगा

35.

छुपी है तुझमें कोई शय, इसे न गारत कर
जो हो सके तो कहीं दिल लगा, महब्बत कर

अदा ये किस कटे पंत्ते से तूने सीखी है
सितम हवा का हों और शाख से शिकायत कर

न हो मुखिल⁵ मेरे अन्दर की एक दुनिया में
बड़ी खुशी से बरो-बहर⁶ पर हुकूमत कर

1-निराशा की हवा 2-तापरथाह 3-परलोक 4-अनत काल 5-वाधक 6-अल और स्यल अर्थात् दुनिया

وہ اپنے آپ نہ سمجھے گا ، تیرے دل میں ہے کیا
خلش کو حرف بنا ، حرف کو حکایت کر

مرے بنائے ہوئے بُت میں روح بھونک دے اب
نہ ایک عمر کی محنت بری اکارت کر

کہاں سے آگیا تُو بزمِ کم یقیناں میں ،
یہاں نہ ہوگا کوئی خوش ، ہزار خدمت کرا!

کچھ اور چیزیں تُوں دنیا کو جو بدلتی ہیں
کہ اپنے درد کو اپنے لیے عبارت کر

مہیں عجب ایسی پل کا ہو منتظر وہ بھی ،
کہ تُو لے اُس کے بدن کو ذرا سی ہمت کر

خلوص تیرا بھی اب زد میں آگیا باقی
یہاں یہ روز کے قفسے ہیں ، جی بُرا مت کر

☆

ہوائیں زور سے چلتی تھیں ہنگامہ بلا کا تھا
میں سنانے کا ٹیکر منتظر تیری صدا کا تھا

वो अपने आप न समझेगा, तेरे दिल में है क्या
खलिश¹ को हर्फ बना, हर्फ को हिकायत² कर

मेरे बनाए हुए बुत में रुह फूँक दे अब
न एक उम्र की मेहनत मेरी अकारत कर

कहाँ से आ गया तू बज़्मे-कमयकीनाँ³ में,
यहाँ न होगा कोई खुश, हज़ार खिदमत कर!

कुछ और चीज़ें हैं दुनिया को जो बदलती हैं
कि अपने दर्द को अपने लिए इबारत⁴ कर

नहीं अजब इसी पल का हो मुन्तज़िर⁵ वो भी,
कि छू ले उसके बदन को...ज़रा सी हिम्मत कर

खुलूस⁶ तेरा भी अब ज़द में आ गया बानी
यहाँ ये रोज़ के किस्ते हैं, जी बुरा मत कर

36.

हवाएँ जोर से चलती थीं हंगामा बला का था
मैं सन्नाटे का पैकर⁷ मुन्तज़िर तेरी सदा का था

1-बुभन, टीस 2-दास्तान 3-अविश्वासियों की महफ़िल 4-शब्दबद्ध 5-प्रतीक्षित 6-निश्छलता 7-झींघा, आकृति

وہی اک موسم سفاک تھا ، اندر بھی باہر بھی
عجب سازش لہو کی تھی ، عجب فتنہ ہوا کا تھا

ہم اپنی پُپ کو انٹوں خانہ معنی سمجھتے تھے
کہاں دل کو خبر تھی ، امتحاں حرف و صدا کا تھا

غلط تھی راہ لیکن کس کو دم لینے کی مہلت تھی،
قدم جس سمت اُٹھتے تھے اُدھر ہی رُخ ہوا کا تھا

ہمارے دوست بننے کو ضرورت حادثے کی تھی
عجب اک مرحلہ سا درمیاں میں ابتدا کا تھا

ہم اپنے ذہن میں کیا کیا تعلق اس سے رکھتے تھے
وہاں سارا کرشمہ ایک بے معنی ادا کا تھا

مسافر تھا تھا لوٹ آئے راہ سے آخر
سمجھتے تھے جسے رہبر وہ اک جھوٹکا ہوا کا تھا

وہاں ٹھنڈی سماعت تھی سمندر کی طرح باتی
یہاں الفاظ پر سایہ کسی نجر صدا کا تھا!!

वही इक मीसमे-सफ़ाक¹ था, अन्दर भी बाहर भी
अजब साज़िश लहू की थी, अजब फ़ितना हवा का था

हम अपनी चुप को अफ़सूँ ख़ानए-मानी² समझते थे
कहाँ दिल को ख़बर थी, इम्तिहाँ हफ़ों-सदा का था

ग़लत थी राह लेकिन किसको दम लेने की मुहलत थी,
क़दम जिस सिम्त उठते थे उधर ही रुख़ हवा का था

हमारे दोस्त बनने को ज़रूरत हादसे की थी
अजब इक मरहला³ सा दरमियाँ से इब्तिदा⁴ का था

हम अपने ज़हन में क्या क्या तआल्लुक उससे रखते थे
वहाँ सारा करिश्मा एक बेमानी अदा का था

मुसाफ़िर तन्हा तन्हा लौट आए राह से आख़िर
समझते थे जिसे रहबर वो इक झोंका हवा का था

वहाँ ठण्डी समाअत⁵ थी समुन्दर की तरह बानी
यहाँ अल्फ़ाज़ पर साया किसी बंजर सदा का था

1-नक्तपाती मीसम 2-अर्ध का जादूगर 3-मोड़, पड़ाव 4-आदि, आरंभ 5-शवण

آج کیا کونٹے لمحات میسر آئے!
یاد تم اپنی عنایات سے بڑھ کر آئے!!

آشنائی جڑے جلووں سے مگر کیا تھی ضرور
اک نظر دیکھ لیں ہم رونقیں ، جی بھر آئے

کیا خبر ترک تعلق ہی اُسے ہو منظور
اب گلہ کرتے بھی اس جی کو بہت ڈر آئے

تُو ہی کچھ کہہ کہہ تے عہدِ وفا سے پہلے
غم وہ کیا تھا کہ ہم اک عمر بسر کر آئے!

تیرے قصے نہیں کم یوں تو زلانی کے لیے
اک اچھٹا سا تعلق بھی میسر آئے!

اپنی خاموش نگاہی کو نہ اک راز سمجھ
غم زدوں تک جڑے پیغام برابر آئے

کس نے دیکھی ہے مگر جنتِ فردا ، ہائی
یہ وہ دُنیا ہے کہ بس وہیام میں اکثر آئے

आज क्या लौटते लम्हात¹ मयस्सर आए!
याद तुम अपनी इनायात² से बढ़कर आए!!

आशनाई³ तेरे जल्वों से मगर क्या थी जरूर
इक नजर देख लें हम रौनकें, जी भर आए!

क्या खबर तर्कें-ताल्लुक⁴ ही उसे हो मंजूर
अब गिला करते भी इस जी को बहुत डर आए

तू ही कुछ कह कि तेरे अह्द-वफ़ा⁵ से पहले
ग़म वो क्या था कि हम इक उम्र बसर कर आए!

तेरे किस्से नहीं कम यूँ तो रुलाने के लिए
इक उचटता सा ताल्लुक भी मयस्सर आए!

अपनी ख़ामोश निगाही को न इक राज समझ
ग़मजदों⁶ तक तेरे पैग़ाम बराबर आए

किसने देखी है मगर जन्नते-फ़र्दा⁷ बानी
य' वो दुनिया है कि बस ध्यान में अक्सर आए

1-लम्हा का बहुवचन अर्थात् क्षण 2-कृपाएँ 3-मैत्री 4-संबंध विच्छेद 5-वफ़ा करने की प्रतिज्ञा 6-ग़म के मारे 7-भविष्य का स्वर्ग

وہ ، جسے اب تک سمجھتا تھا میں پتھر ، سامنے تھا
 اک پگھلتی موم کا سیال بیکر ، سامنے تھا

میں نے چاہا آنے والے وقت کا اک عکس دیکھوں
 بیکراں ہوتے ہوئے لمحے کا منظر ، سامنے تھا

اپنی اک پہچان دی آئی گئی باتوں میں اس نے
 آج وہ اپنے تعلق سے بھی بڑھ کر سامنے تھا

میں یہ سمجھا تھا کہ سرگرم سفر ہے کوئی طائر
 جب رُکی آمدی تو اک گرنا ہوا پہ سامنے تھا

میں نے کتنی بار چاہا خود کو لاؤں راستے پہ،
 میں نے پھر کوشش بھی کی لیکن مقدر سامنے تھا

سرد جنگل کی سیاہی پاٹ کر نکلے ہی تھے ہم
 آخری کڑیوں کی تہہ کرتا سمندر سامنے تھا

ٹوٹا تھا کچھ عجب قبر سفر پہلے قدم پہ،
 مڑ گئی تھی آنکھ ، ہنستا کھیلا گھر سامنے تھا!

वो, जिसे अब तक समझता था मैं पत्थर, सामने था
इक पिघलती मोम का सय्याल पैकर¹, सामने था

मैंने चाहा आने वाले वक़्त का इक अक्स देखूँ
बेकरों² होते हुए लम्हे का मंज़र, सामने था

अपनी इक पहचान दी आई गई बातों में उसने
आज वो अपने ताल्लुक से भी बढ़कर सामने था

मैं ये समझा था कि सरगर्मे-सफ़र है कोई तायर³
जब रुकी आँधी तो इक गिरता हुआ पर सामने था

मैंने कितनी बार चाहा खुद को लाऊँ रास्ते पर,
मैंने फिर कोशिश भी की लेकिन मुक़द्दर सामने था

सर्द जंगल की सियाही पाटकर निकले ही थे हम
आखिरी किरनों को तह करता समुन्दर सामने था

टूटना था कुछ अजब क़हरे-सफ़र पहले क़दम पर,
मुड़ गई थी आँख, हँसता खेलता घर सामने था!

پشت پر یاروں کی پسپائی کا نظارہ تھا شاید
دشمنوں کا مسکراتا ایک لشکر سامنے تھا

آنکھ میں اُترا ہوا تھا شام کا پہلا ستارا
رات خالی سر پہ تھی..... اور سرد بستر سامنے تھا

☆

تمام راستہ مٹھولوں بھرا ہے میرے لیے
کہیں تو کوئی دُعا مانگتا ہے میرے لیے

تمام شہر ہے دشمن تو کیا ہے میرے لیے
میں جاتا ہوں جِرا در گھلا ہے میرے لیے

مجھے پھینکنے کا غم تو رہے گا ہم سفر
مگر سفر کا تقاضا جدا ہے میرے لیے

وہ ایک عکس کہ پل بھر نظر میں ٹھہرا تھا
تمام عمر کا اب سلسلہ ہے میرے لیے

عجیب در گزری کا فِکار ہوں اب تک
کوئی کرم ہے نہ کوئی سزا ہے میرے لیے

पुश्त¹ पर यारों की पसपाई² का नज़ारा था शायद
दुश्मनों का मुस्कराता एक लश्कर सामने था

आँख में उतरा हुआ था शाम का पहला सितारा
रात खाली सर प' थी...और सर्द बिस्तर सामने था

39.

तमाम रास्ता फूलों भरा है मेरे लिए
कहीं तो कोई दुआ माँगता है मेरे लिए

तमाम शहर है दुश्मन तो क्या है मेरे लिए
मैं जानता हूँ तेरा दर खुला है मेरे लिए

मुझे बिछड़ने का गुम तो रहेगा हमसफ़री
मगर सफ़र का तकाजा जुदा है मेरे लिए

वो एक अक्स कि पल भर नज़र में ठहरा था
तमाम उग्र का अब सिलसिला है मेरे लिए

अजीब दरगुजरी³ का शिकार हूँ अब तक
कोई करम है न कोई सजा है मेरे लिए

گذر سکوں گا نہ اس خواب خواب بہتی سے
یہاں کی مٹی بھی زنجیر پا ہے میرے لیے

اب آپ جاؤں تو جا کر اُسے سمیٹوں میں
تمام سلسلہ بکھرا پڑا ہے میرے لیے

یہ حسنِ نغمِ سفر یہ ظلمِ خانہ رنگ
کہ آنکھ جھپکوں تو منظر نیا ہے میرے لیے

یہ کیسے کوہ کے اندر میں دُفن تھا باقی
وہ ابر بن کے برستا رہا ہے میرے لیے

☆

ادھر کی آئے گی اک رو ادھر کی آئے گی
کہ میرے ساتھ تو مٹی سفر کی آئے گی

ڈھلے گی شام جہاں کچھ نظر نہ آئے گا
پھر اُس کے بعد بہت یاد گھر کی آئے گی

نہ کوئی جا کے اُسے دکھ مرے سنائے گا
نہ کام دوستی اب شہر بھر کی آئے گی

गुज़र सकूँगा न इस छुवाब छुवाब बस्ती से
यहाँ की मिट्टी भी जंजीरे-पा¹ है मेरे लिए

अब आप जाऊँ तो जाकर उसे समेटूँ मैं
तमाम सिलसिला बिखरा पड़ा है मेरे लिए

ये हुस्ने-खुस्मे-सफ़र²...ये तिलिस्मे-खानाए-रंग³
कि आँख झपकूँ तो मंज़र नया है मेरे लिए

ये कैसे कोह के अंदर मैं दफ़न था बानी
वो अब⁴ बनके बरसता रहा है मेरे लिए

40.

इधर की आएगी इक रौ उधर की आएगी
कि मेरे साथ तो मिट्टी सफ़र की आएगी

ढलेगी शाम जहाँ... कुछ नज़र न आएगा
फिर उसके बाद बहुत याद घर की आएगी

न कोई जाके उसे दुख मेरे सुनाएगा
न काम दोस्ती अब शहर भर की आएगी

1-पौब की बेड़ी 2-यात्रांत का सौंदर्य 3-रंगों का जाबुई घर 4-बादल

ابھی بلند رکھو یارو آخری مشعل،
ادھر تو پہلی کرن کیا سحر کی آئے گی!

کچھ اور موڑ گورنے کی دیر ہے باقی،
صدا، نہ گرد کسی ہم سز کی آئے گی

وہ مناظر ہیں یہاں، جن میں کوئی رنگ نہ ہو..... بھاگ چلو
جاتے موسم کی فضا ہے، کہیں مانگے نہ لہو..... بھاگ چلو

کوئی آواز پس در ہے، نہ آہٹ سر کو..... بھاگ چلو
بے صدائی کا وہ عالم ہے کہ جم جائے لہو..... بھاگ چلو

یہ وہ بہتی ہے جہاں شام سے سو جاتے ہیں سب اہلِ وفا
شب کا ستارہ دکھائے گا عجب عالم ہو..... بھاگ چلو

کیا عجب مظر بے چہرگی ہر سمت نظر آتا ہے،
ہر کوئی اور کوئی ہے، نہ یہاں میں ہے نہ تو..... بھاگ چلو

پھر کسی حرفِ تمنا کو اڑا دے گا دھوئیں کے مانند،
وقت بیٹھا ہے یہاں بن کے کوئی شعبدہ ہو..... بھاگ چلو

अभी बुलंद रखो यारो आखिरी मशअल,
इधर तो पहली किरन क्या सहर की आएगी!

कुछ और मोड़ गुजरने की देर है बानी
सदा, न गर्द किसी हमसफ़र की आएगी

41.

वो मनाज़िर¹ हैं यहाँ, जिनमें कोई रंग न बू...भाग चलो
जाते मौसम की फ़ज़ा है, कहीं माँगे न लहू...भाग चलो

कोई आवाज़ पसे-दर² है, न आहट सरे-कू³...भाग चलो
बेसदाई का वो आलम है, कि जम जाए लहू...भाग चलो

ये वो बस्ती है जहाँ शाम से सो जाते हैं सब अहले-वफ़ा
शब का सन्नाटा दिखाएगा अजब आलमे-हू⁴...भाग चलो

क्या अजब मंज़रे-बेचेहरगी⁵ हर सिप्त⁶ नज़र आता है,
हर कोई और कोई है, न यहाँ मैं है न तू...भाग चलो

फिर किसी हर्फ़े-तमन्ना⁷ को उड़ा देगा धुएँ की मानिंद,
वक़्त बैठा है यहाँ बनके कोई शोबदा-जू⁸...भाग चलो

1-मंज़र (दृश्य) का ध्रुवचन 2-द्वार के पीछे 3-गली में 4-स्तब्धता का आलम 5-अपरूपता का दृश्य
6-ओर 7-अभिलाषा का स्वर 8-नायाबी, उल्टी

دوستو شکر کرو ، چاک جگر تک نہیں بات آئی ابھی
یہ گریبان تو ہو جائے گا سو بار زفونو..... بھاگ چلو

کسی تصویر کے پیچھے نہیں یاں کوئی تصور ہائی
ایک اک چیز ہے بیگانہ اور اک نمونہ..... بھاگ چلو

☆

رنگ، لپک سے عاری جسم، ادا سے خالی
یہ کیسی بستی ہے، عکسِ ہوا سے خالی

ہم سے پہلے شاید کوئی آیا نہ گیا،
اک اک راہ پڑی ہے نقشِ پا سے خالی

یوں نکلا ہوں گھر سے ، گھر کے ہر منظر سے
کچھ ٹوٹے اوپر سے، ہونٹ، دعا سے خالی

پھلے پہر نے بڑھ کر میری چیخِ سینٹی
کاسہ شب تھا شاید ایک صدا سے خالی

اب کے چلی وہ آندھی ، لمحہ روشن غائب
دن ، سنگھرش سے عاری رات ، خدا سے خالی

☆

दोस्तो शुक्र करो, चाके-जिगर¹ तक नहीं बात आई अभी
ये गिरेबान तो हो जाएगा सौ बार रफू...भाग चलो

किसी तस्वीर के पीछे नहीं याँ² कोई तसव्वुर बानी
एक इक चीज है बेगानए-इदराके-नुमू³...भाग चलो

42.

रंग, लपक से आरी⁴...जिस्म, अदा से ख़ाली
ये कैसी बस्ती है, अक्से-हवा⁵ से ख़ाली

हमसे पहले शायद कोई आया न गया,
इक इक राह पड़ी है नक्शे-पा⁶ से ख़ाली

यूँ निकला हूँ घर से, घर के हर मंज़र से
कुछ दूटे ऊपर से, होंट, दुआ से ख़ाली

पिछले पहर ने बढ़कर मेरी चीख़ समेटी
कासए-शब⁷ था शायद एक सदा से ख़ाली

अबके चली वो आँधी, लम्हए-रौशन⁸ गायब
दिन, संघर्ष से आरी....रात, ख़ुदा से ख़ाली

1-विदीर्ण हृदय 2-यहाँ का लघु रूप 3-विकास के बोध से अनजान 4-परे 5-हवा की परछाई 6-पदचिन्ह
7-रात रुपी भिक्षा पात्र 8-प्रकाशमान क्षण

جاؤ گری اُس پر کسی صورت نہ چلے گی
اے عشق ، تری سہی متانت نہ چلے گی

مجھ سا ترا دشمن بھی یہاں کون ہے ، کچھ سوچ
دو روز بھی اپنی یہ عداوت نہ چلے گی!

خوابیدہ سے لہجے میں سنالے ابھی قصے،
وہ درد اٹھے گا کہ نزاکت نہ چلے گی!

ٹو اپنے غم ذات کو کیسے ہی بیاں کر
آدروں کی تراشیدہ عبارت نہ چلے گی

مُحَلِّسِ ہوئی اک راہ پہ آنے کی ہے سب دیر
پھر ساتھ جڑے گرد مسافت نہ چلے گی

بہتی ہے یری جاں یہ عجب بند گھروں کی
چل دے کہ یہاں رسمِ محبت نہ چلے گی!

میں ترکِ وفا کر لوں، مگر مجھ کو بتا دو
اس حادثے سے کوئی روایت نہ چلے گی!

जादूगरी उस पर किसी सूरत न चलेगी
ऐ इश्क़, तेरी सइये-मतानत¹ न चलेगी

मुझ सा तेरा दुश्मन भी यहाँ कौन है, कुछ सोच
दो रोज़ भी अपनी ये अदावत न चलेगी,

ख़्वाबीदा² से लहजे में सुना ले अभी किस्से,
वो दर्द उठेगा कि नज़ाकत न चलेगी!

तू अपने ग़मे-जात³ को कैसे ही बयाँ कर
औरों की तराशीदा इबारत⁴ न चलेगी

झुलसी हुई इक राह प' आने की है सब देर
फिर साथ तेरे गर्दे-मुसाफ़त⁵ न चलेगी

बस्ती है मेरी जाँ ये अजब बंद घरों की
चल दे कि यहाँ रस्मे-महब्बत न चलेगी!

मैं तर्के-वफ़ा कर लूँ, मगर मुझको बता दो
इस हादसे से कोई रिवायत न चलेगी!

1-यमीरता का प्रयास 2-सोया हुआ, उनीदा 3-आत्म-पीड़ा 4-गढ़ा हुआ विन्यास 5-सफ़र की धूल

جو آئے جڑے دھیان میں دل باختہ کہہ دے
 بے ساختہ کہہ دے کہ حکایت نہ چلے گی
 ٹوٹے ہوئے خوابوں کا یہ درماں نہیں پائی
 شب بھر ترے پینے کی یہ عادت نہ چلے گی

☆

تیرگی نکا کی ہے میں کوئی صدا لگاؤں
 ایک فہنس ساتھ تھا اُس کا کچھ پتہ لگاؤں
 بپتے جانے کے بوا، بس میں کچھ نہیں تو کیا
 دشمنوں کے گھاٹ ہیں ناڈ کیسے جا لگاؤں
 وہ تمام رنگ ہے اُس سے بات کیا کروں
 وہ تمام خواب ہے اُس کو ہاتھ کیا لگاؤں
 کچھ نہ بن پڑے تو پھر ایک ایک دوست پر
 بات بات شک کروں، تہمتیں جدا لگاؤں
 منظر آس پاس کا ڈوبتا دکھائی دے
 میں کبھی جو دُور کی بات کا پتہ لگاؤں!

जो आए तेरे ध्यान में दिलबाड़ता¹ कह दे
बेसाख्ता² कह दे... कि हिकायत³ न चलेगी

टूटे हुए छ्वाबों का ये दरमाँ⁴ नहीं बानी
शब भर तेरे पीने की ये आदत न चलेगी

44.

तीरगी⁵ बला की है मैं कोई सदा लगाऊँ
एक शख्स साथ था उसका कुछ पता लगाऊँ

बहते जाने के सिवा, बस मैं कुछ नहीं तो क्या
दुश्मनों के घाट हैं नाव कैसे जा लगाऊँ

वो तमाम रंग है उससे बात क्या करूँ
वो तमाम छ्वाब है उसको हाथ क्या लगाऊँ

कुछ न बन पड़े तो फिर एक एक दोस्त पर
बात-बात शक करूँ, तोहमतें जुदा लगाऊँ

मंजूर आस-पास का डूबता दिखाई दे
मैं कभी जो दूर की बात का पता लगाऊँ!

ایسی تیری بزم کیا ایسا ضبط و نظم کیا
میرے جی میں آئی ہے آج قہقہہ لگاؤں

یہ ہے کیا جگہ میاں کہہ رہے ہیں سب کہ یاں
کچھ کشاں کشاں رہوں ، دل ذرا ذرا لگاؤں

☆

گرد میرے نہ فصلیں ترے کام آئیں گی
کچھ ہوائیں تو مری سمت دمام آئیں گی

یہ مسافت کہ چلے جائے گی رستہ رستہ
منزلیں یوں تو نئی گام بہ گام آئیں گی!

کچھ تو دل آپ ہی بھجنا سا چلا جاتا ہے
اور - کیا کیا نہ ہوائیں سر شام آئیں گی

اس اندھیرے میں نہ اک گام بھی زکنا یارو
اب تو اک دوسرے کی آہٹیں کام آئیں گی

بہن کرتی ہوئی سستوں سے نہ ڈرنا پائی،
ایسی آوازیں تو اس راہ میں عام آئیں گی!

☆

ऐसी तेरी बज़्म क्या...ऐसा ज़ब्तो-नज़्म¹ क्या
मेरे जी में आई है आज कहकहा लगाऊँ

ये है क्या जगह मियाँ कह रहे हैं सब कि यों²
कुछ कशाँ कशाँ³ रहूँ, दिल ज़रा ज़रा लगाऊँ

45.

गिर्द मेरे न फ़सीले⁴ तेरे काम आएँगी
कुछ हवाएँ तो मेरी सम्त मुदाम⁵ आएँगी

ये मुसाफ़त⁶ कि चले जाएगी रस्ता-रस्ता
मंजिलें यूँ तो नई ग़म-ब-ग़म⁷ आएँगी!

कुछ तो दिल आप ही बुझता-सा चला जाता है
और-क्या क्या न हवाएँ सरे-शाम आएँगी

इस अँधेरे में न इक ग़म भी रुकना यारो
अब तो इक दूसरे की आहटें काम आएँगी

बैन⁸ करती हुई सम्तों से न डरना बानी,
ऐसी आवाजें तो इस राह में आम आएँगी!

1-ध्ययस्या 2-यहाँ का लघु रूप 3-खिंचा-खिंचा 4-चारदीवारी 5-हमेशा 6-सफ़र 7-पग-पग पर 8-प्रताप

نظمیں

नज़्में

پناہ کہیں ملے!

شب کی آوارہ ہوا

ایک ڈائن کی طرح :

آسمانوں سے چڑلائی ہے گم گشتہ صدائیں.....

عرصہ آفاق کا تاریک شورا!

اجنبی دیسوں کے پیڑوں سے

اُڑلائی ہے پتے.....

بسکیاں بھرتے ہوئے!

تھک چکی ہے

اور باقی شب سکوں سے کاٹنے کے واسطے

چاہتی ہے

اپنے شانوں سے اُتارے

زہر آلودہ صداؤں،

پینتے پتوں کا بوجھ!

ڈھونڈتی ہے

کوئی دروازہ گھلا

کوئی کھڑکی ادھ گھنی

کوئی بستر..... جو کسی کے واسطے خالی پڑا ہو!

पनाह कहीं मिले!

शब की आवारा हवा

एक डायन की तरह :

आसमानों से चुरा लाई है गुमगस्ता¹ सदाएँ....

अर्सए-आफ़ाक² का तारीक शोर!

अजनबी देसों के पेड़ों से

उड़ा लाई है पत्ते....

सिसकियाँ भरते हुए!

थक चुकी है

और बाकी शब सुकूँ से काटने के वास्ते
चाहती है

अपने शानों³ से उतारे

ज़हर-आलूदा⁴ सदाओं,

चीखते पत्तों का बोझ!

ढूँडती है

कोई दरवाज़ा खुला

कोई खिड़की अधखुली

कोई बिस्तर...जो किसी के वास्ते खाली पड़ा हो!

1-खोई हुई आवाज़ें 2-दुनिया 3-कन्धों 4-विषमय

آج.....سب ایک جگہ پر

وقت کے آنکھن میں لاکھوں خستہ پاتا م

اوندھے منہ پڑے ہیں

حادثے اب ڈھونڈتے پھرتے ہیں اُن لمحات کو

.....جن سے رشتہ جوڑنا مشکل نہ تھا!

آج - ہے ساری فضا کا چہرہ خالی

آج - بستی کے کسی نظارے کو اظہار کی خواہش نہیں ہے

آج - پر بت سے کوئی پتھر لوہکا ہی نہیں ہے

آج - ہر جھونکا ہوا کا اس طرح سہا ہوا ہے

ایک بھی چیونٹی کے پر پلٹے نہیں ہیں!

آج - ہاں.....سارے پرندے چیتے ہیں

شک بیڑوں کی گھلی بانہوں میں اک زیور نہیں ہے

چاند نکلے گا تو ہم ننگے نظر آئیں گے سب اک دوسرے کو!!

معمول

ایک بڑھیا، شب گئے دلہیز پر بیٹھی ہوئی

تک رہی ہے اپنے اکلوتے جواں بچے کی راہ!

आज...सब एक जगह पर

वक्त के आँगन में लाखों खस्ता-पा अय्याम¹
 औंधे मुँह पड़े हैं
 हादसे अब ढूँडते फिरते हैं उन लम्हात को
 ...जिनसे रिश्ता जोड़ना मुश्किल न था!
 आज—है सारी फ़ज़ा का चेहरा ख़ाली
 आज—बस्ती के किसी नज़्ज़ारे को इज़हार की ख़्वाहिश नहीं है
 आज—पर्वत से कोई पत्थर लुढ़कता ही नहीं है
 आज—हर झोंका हवा का इस तरह सहमा हुआ है
 एक भी चींटी के पर हिलते नहीं हैं!
 आज—हाँ...सारे परिन्दे चीखते हैं
 खुश्क पेड़ों की खुली बाँहों में इक ज़ेवर नहीं है
 चाँद निकलेगा तो हम नंगे नज़र आएँगे सब इक-दूसरे को!!

मामूल

एक बुढ़िया, शब गए दहलीज़ पर बैठी हुई
 तक रही है अपने इकलौते जवाँ बच्चे की राह!

¹-यके-नादि दिन

سوچا سارا محلہ..... اور گلی کے موڑ پر
 بچھ چکا ہے لپ پ بھی!
 سرد تار کی کھڑی ہے..... جیسے دیوار مہیب!
 بوڑھی ماں کے جسم کے اندر مگر
 جگمگاتی ہیں ہزاروں مشعلیں!
 آنے والا لاکھ بے ہوشی کی حالت میں ہو
 لیکن
 راستہ گھر کا کبھی نہ ہوا نہیں!

اور بے آہٹ سڑک
 جانتی ہے.....
 کس کے قدموں سے ابھی محزوم ہوں!

دی برتھ آف کرایسٹ

مرا ہاتھ اک سمندر ہے
 مری سخت انگلیاں صدیوں ہرانی برف
 کی شفاف تاشیں ہیں!
 مرا چہرہ گذرتے وقت کا خالی جزیرہ ہے
 مرے دو بازوؤں کے درمیاں.....

सो चुका सारा मुहल्ला...और गली के मोड़ पर
 बुझ चुका है लैम्प भी!
 सर्द तारीकी खड़ी है...जैसे दीवारे-मुहीब!¹
 बूढ़ी माँ के जिस्म के अन्दर मगर
 जगमगाती हैं हज़ारों मशज़लें!
 आनेवाला लाख बेहोशी की हालत में हो
 लेकिन
 रास्ता घर का कभी भूला नहीं!
 और बेआहट सड़क
 जानती है...
 किसके कदमों से अभी महरूम हूँ!

दि बर्थ ऑफ़ क्राईस्ट

मेरा हाथ इक समुन्दर है

 मेरी सख्त उँगलियाँ सदियों पुरानी बर्फ
 की शफ़फ़ाफ़ काशें² हैं!

 मेरा चेहरा गुज़रते वक़्त का ख़ाली जज़ीरा³ है
 मेरे दो बाजूओं के दरमियाँ...

1-झीफ़नाक दीवार 2-स्वच्छ फ़ौक, टुकड़े 3-टापू

گہری - خلیج بے موج ہے!
 مرے سینے کا رخ آنسو دستانا
 مقفل آرزو کو سانس تک لینے نہیں دیتا!
 مجھے مت بھجو.....
 مجسم برف ہوں میں.....
 برف میں تحلیل ہونے دے
 مجھے سونے دے.....
 راتوں رات مجھ کو.....
 بھول میں تبدیل ہونے دے!

حرفِ غیر

میرے احباب میں اک شاعر کم نام بھی ہے
 ذہن ہے جس کا عجب راحت گاہ
 حادثے ایک زمانے کے جہاں آکے سکوں پاتے ہیں!
 جب چمک اٹھتے ہیں کچھ حادثے اظہار کی پیشانی پر
 وہ سمٹتا سا چلا جاتا ہے
 یعنی ہر نظم اُسے اور بھی ریگانہ بنا دیتی ہے!!
 شب..... نئی نظم لیے بیٹھا تھا احباب کے بیچ

गहरी—खंलीजे-बेतमव्युज¹ है!
 मेरे सोने का यखआलूद² सन्नाटा
 मुकफ़ल³ आरजू को साँस तक लेने नहीं देता!

मुझे मत छू...

मुजस्सम⁴ बर्क हूँ मैं...
 बर्फ में तहलील⁵ होने दे

मुझे सोने दे...

रातों-रात मुझको...
 फूल में तब्दील होने दे!

हर्फे-गैर⁶

मेरे अहबाब में इक शाइरे-कमनाम⁷ भी है
 ज़हन है जिसका अजब राहतगाह
 हादसे एक ज़माने के जहाँ आके सुकूँ पाते हैं!
 जब चमक उठते हैं कुछ हादसे इज़हार की पेशानी पर
 वो सिमटता सा चला जाता है
 यानी हर नज़्म उसे और भी बेगाना बना देती है!!
 शब...नई नज़्म लिए बैठा था अहबाब⁸ के बीच

1-विन लहरों की खाड़ी 2-बर्फ की तरह जमा हुआ 3-ताला बंद 4-सर से पाँव तक 5-परिणत
 6-अजनबी शब्द 7-अल्पज्ञात 8-पिय

اور سب..... ہمدن گوش..... اُسے سُلتے تھے
 نظم کے بعد وہ عالم تھا کہ ستا تانہ کروٹ لے پائے!
 (نوٹ: غیر پسندیدگی کی وجہ سے)
 اُس نے یوں دیکھا انہیں داد طلب نظروں سے
 جیسے اس آس میں ہو
 ٹُگل کے گرنے کی صدا فرش سے آئے گی ابھی!!

رقص

ناچ ہاں ناچ کہ ہر شورش وہ ہنگامہ پر
 پھیل جائے تری جمن جمن کا حسین پیرا ہن
 ناچ ہاں ناچ کہ سینے میں ترے
 ایک موتی کی طرح راز زمانے کا سمٹ کر رہ جائے!
 بازوؤں کو کبھی ہونے دے دراز
 جمع کرنے دے خدو خال کبھی اپنی حسین آنکھوں کو!
 فرش آواز پہ رکھا اپنے ہر اسرار قدم
 اور چمکتے ہوئے سنگیت کا جاڑو پی جا
 ناچ صد نغمہ و شادابی سے
 ناچتی جا اسی مستی میں کہ تو ایک کنول بن جائے

और सब... हमातनगोश¹ ...उसे सुनते थे
नज़्म के बाद वो आलम था कि सन्नाटा न करवट ले पाए!

(नोट : गैरपसंदीदगी की वजह से)

उसने यूँ देखा उन्हें दादतलब² नज़रों से
जैसे इस आस में हो
गुल के गिरने की सदा फर्श से आएगी अभी!!

रक्स³

नाच हॉ नाच कि हर शोरिशो-हंगामा⁴ पर
फैल जाए तेरी झन झन का हसीं पैराहन⁵
नाच हॉ नाच कि सीने में तेरे
एक मोती की तरह राज़ ज़माने का सिमटकर रह जाए!
बाजुओं को कभी होने दे दराज़⁶
जम्अ करने दे खदो-खाल⁷ कभी अपनी हसीं आँखों को!
फर्शो-आवाज़⁸ पे रख अपने पुरअसरार⁹ कदम
और चमकते हुए संगीत का जादू पी जा
नाच सदनशशा-ओ-शादाबी¹⁰ से
नाचती जा इसी मस्ती में कि तू एक कँवल बन जाए

1-तल्लीन होकर सुनना 2-दाद घाहने वाली, न्याय की याचक-दृष्टि 3-नृत्य 4-शोर-गुल 5-सुन्दर वस्त्र
6-प्रलम्ब 7-रूपाकार 8-आवाज़ की धरती 9-रक्षस्य से भरा 10-अत्यधिक मादकता और प्रसन्नता

اور تجھ کو کسی تالاب کے سینے میں اتار آئیں ہم
 بھوت آکر تری رنگت میں بسیرا کر لیں
 اور ہم.....
 بوڑھے درختوں کی گھن سال لگتی ہوئی شاخوں
 سے لپٹ کر روئیں
 ساہا سال لپٹ کر روئیں!

ہر جاوہ شہر

شہر کی اک اک سڑک
 پھاگتی آئی ہے لاکھوں حادثوں کی سرد دھول!
 جانے کتنے اجنبی اک دوسرے کے دوست بننے سے کنارہ کر گئے
 اور کتنے آشناؤں کے دلوں سے مٹ گئی پہچان بھی!
 سو ننگا ہیں..... لاکھ زخم
 چار سستی لاکھ ٹھوٹ!
 سو تماشوں کے پڑے نہیں جا بجا دھتے
 دہمیں
 گرد مسافت میں بٹھانے کے لیے
 برق پالمحوں کو تھامے دوڑتے جاتے ہیں ہم!

और तुझको किसी तालाब के सीने में उतार आएँ हम
 भूत आकर तेरी रंगत में बसेरा कर लें
 और हम.....
 बूढ़े दरख्तों की कुहन-साल¹ लटकती हुई शाखों
 से लिपटकर रोएँ
 सालहा-साल लिपटकर रोएँ!

हर जादए-शहर²

शहर की इक इक सड़क
 फाँकती आई है लाखों हादसों की सर्द धूल!
 जाने कितने अजनबी इक दूसरे के दोस्त बनने से किनारा कर गए
 और कितने आशनाओं के दिलों से मिट गई पहचान भी!
 सौ निगाहें...लाख ज़ख्म
 चार सन्ती लाख झूट!
 सौ तमाशों के पड़े हैं जा-ब-जा³ धब्बे
 जिन्हें
 गर्दे-मुसाफ़्त⁴ में छुपाने के लिए
 बर्फ-पा लम्हों⁵ को थामे दौड़ते जाते हैं हम!

1-पुरानी 2-शहर का हर रास्ता 3-जगह-जगह 4-सफ़र की धूल 5-नीग्रामी क्षण

لمحے دو لمحے کو..... دم لینے کی خاطر..... سُست ہو جائیں اگر
شہر کی اک اک سڑک.....

آنکھوں سے خون زلوائے گی

اور بنا کر ہم کو بھی اک داستاں.....

ڈہرائے گی - !

ہانپتی تہذیب کے اک اک مسافر سے کہے گی

دوڑتے جاؤ - یہی ہے زندگی

مت رکو اک دوسرے کے واسطے

بھاگتا ہے وقت

لیکن

لمحہ

دوڑتا ہے سب کو

لیکن

تباہ تھا!

کہیں کوئی.....

برے دائیں

تنگی صداؤں کی جلتی چتاؤں کا شمشان ہے

جس کے چاروں طرف

چھوٹی چھوٹی انائیں

लम्हे दो लम्हे को...दम लेने की खातिर...सुस्त हो जाएँ अगर
 शहर की इक इक सड़क...
 आँखों से खूँ रुलवाएगी
 और बनाकर हमको भी इक दास्ताँ...

दुहराएगी—!

हाँपती तहज़ीब इक इक मुसाफिर से कहेगी
 दौड़ते जाओ—यही है ज़िन्दगी
 मत रुको इक दूसरे के वास्ते
 भागता है वक़्त

लेकिन

लम्हा लम्हा

दौड़ना है सबको

लेकिन

तन्हा तन्हा!

कहीं कोई.....

मेरे दाएँ

नंगी सदाओं की जलती चिताओं का शमशान है
 जिसके चारों तरफ़
 छोटी छोटी अनाएँ¹

¹-अना (अह) का बहुवचन

قدم دو قدم ڈورا اک دوسرے سے کھڑی
دیکھتی ہیں تماشا

..... مگر ایک اک آنکھ میں

برف ہے
جو پگھلائی نہیں

..... ایک اک تن میں

تاگن بسی ہے
جو باہر نکلی نہیں !

مرے باتیں بھی

ٹھوٹے آدرشوں کی

..... جھوٹا جھوٹا سی اڑتی ہوئی ریت کا ایک میدان ہے

اور میدان کے اُس سرے پر

دکھوں کا سمندر ہے

..... جس کی ہر اک موج اور چاند میں جنگ ہے

موج نکوار ہے

چاند نکوار ہے

سالہا سال سے کوئی جیتا نہیں

کوئی ہارا نہیں

कदम दो कदम दूर इक दूसरे से खड़ी
देखती हैं तमाशा

...मगर एक-इक आँख में

बर्फ है

जो पिघलती नहीं

...एक-इक तन में

नागिन बसी है

जो बाहर निकलती नहीं !

मेरे बाएँ भी

झूटे आदर्शों की

...झोंका झोंका सी उड़ती हुई रेत का एक मैदान है

और मैदान के उस सिरे पर

दुखों का समुन्दर है

...जिसकी हर एक मौज और चाँद में जंग है

मौज तलवार है

चाँद तलवार है

सालहा-साल से कोई जीता नहीं

कोई हारा नहीं

مرے دائیں بائیں بھیانک نظارے ہیں لیکن
رواں میں ہوں جس راستے پر
اُسے کوئی شاید عادی رہا ہے!

عورت، کتا اور پڑوس

اک حسین سی عورت
اپنے نرم چہرے کو
مضطرب سا رکھتی ہے
جس کے فقرے فقرے میں
گونجتی ہے جھلاہٹ

اپنے گھر کے آنگن میں
جب ٹہلنے آتی ہے
دور سے اگر کوئی
دیکھ لے ذرا اُس کو
یا کوئی گذر جائے
اس کے گھر کے آگے سے
ناک بھوں چڑھاتی ہے
اور بڑبڑاتی ہے !

मेरे दाएँ बाएँ भयानक नज़ारे हैं लेकिन
 रवों में हूँ जिस रास्ते पर
 उसे कोई शायद दुआ दे रहा है!

औरत कुत्ता और पड़ौसी

इक हसीन सी औरत
 अपने नर्म चेहरे को
 मुज़्तरिब¹-सा रखती है
 जिसके फिकरे फिकरे में
 गूँजती है झल्लाहट

अपने घर के आँगन में
 जब टहलने आती है
 दूर से अगर कोई
 देख ले ज़रा उसको
 या कोई गुज़र जाए
 उसके घर के आगे से
 नाक-भौं चढ़ाती है
 और बड़बड़ाती है!

لیکن	اپنے	مٹتے	کو
پیار	سے	نکالتی	ہے
اور	لگا کے	چھاتی	سے
پُوم	پُوم	لیتی	ہے
اُس	کا	مضطرب	چہرہ
گول	ہوتا	جاتا	ہے

سادہ دیکھنے والے
اپنے گھر کی کھڑکی سے
چھپ کے دیکھ لیتے ہیں
کوئی اپنے کمرے سے
باہر آ نہیں سکتا
ہر پڑوسی ڈرتا ہے
اُس حسین عورت کی
لحہ کی مسرت بھی
اُس سے جھنجھکی - تو - پھر !!؟

ابدیت

.....مگر مری زندگی کے آنگن میں
سینکڑوں بے عمر ہیں

लेकिन अपने कुत्ते को
 प्यार से बुलाती है
 और लगाके छाती से
 चूम-चूम लेती है
 उसका मुज्तरिब चेहरा
 गोल होता जाता है

और देखने वाले
 अपने घर की खिड़की से
 छुपके देख लेते हैं
 कोई अपने कमरे से
 बाहर आ नहीं सकता
 हर पड़ोसी डरता है
 उस हसीन औरत की
 लम्हा की मुसरत¹ भी
 उससे छिन गई—तो—फिर!!!

अब्दुदियत²

...मगर मेरी ज़िन्दगी के आँगन में
 सैंकड़ों बेसहर शबें³

1-खुशी। 2-शाश्वतता। 3-दिन सुबह वाली रातें, प्रातःहीन रात्रि।

ایک ڈھیر بن کر سلگ رہی ہیں.....

اگر چہ سو بار ہو پھٹی ہے
اگر چہ سو بار دن ہوا ہے!

سفر مختصر

انتظار.....

ہر ستارے کے رو پہلے ہاتھ میں ہنستا تھا
ستارے کا بھول!

ایک دم آہٹ ہوئی
بھول کی ایک ایک ہتی ٹوٹ کر گرنے لگی
گر رہی ہیں پتیاں.....
آنے والے کی مسلسل آہٹیں
دیر سے مجھ کو سنائی دے رہی ہیں اس طرح.....
اب مرے گھر تک پہنچنے کے لیے باقی ہے
گویا دو قدم کا فاصلہ!!

آخری بس

آخری بس
تیرتی سی جا رہی ہے

एक ढेर बनकर सुलग रही हैं....
 अगरचे सौ बार पी फटी है
 अगरचे सौ बार दिन हुआ है!

सफ़रे-मुख़्तसर¹

इन्तिज़ार....
 हर सितारे के रुपहले हाथ में हँसता था
 सन्नाटे का फूल!
 एकदम आहट हुई
 फूल की एक एक पत्ती टूटकर गिरने लगी
 गिर रही हैं पत्तियाँ...

आनेवाले की मुसलसल² आहटें
 देर से मुझको सुनाई दे रही हैं इस तरह...
 अब मेरे घर तक पहुँचने के लिए बाकी है
 गोया दो कदम का फ़ासला!!

आख़िरी बस

आख़िरी बस
 तैरती सी जा रही है

1-छोटी सी यात्रा 2-लगातार

شب کے فرشِ مرمریں پر.....
 شبنم آگیاں دھند کی نیلی پگھائیں!
 بس کے اندر ہر کوئی بیٹھا ہے

اپنا سر جھکائے
 عشقی دن کی چبائے
 کیا ہوئی اک دوسرے سے بات کرنے کی
 وہ راحت
 وہ مسرت!
 آج دنیا - آخری بس کی طرح محوسر ہے
 سب مسافر
 قرب کے احساس سے نا آشنا بیٹھے ہوئے ہیں
 اب کسی کو اجنبی ہونا اگلتا نہیں ہے!

بساطِ اظہار

جاؤوئے اظہار کا ایک ایک بھنہ
 میرے ہونٹوں سے چمٹ کر رہ گیا ہے!
 یہ مرے الفاظ..... آتش ناک کنکر
 یہ تری ٹھنڈی سماعت..... اک سمندر

शब के फर्शें-मरमरीं पर...
 शबनम आर्गी¹ धुंद की नीली गुफ़ा में!
 बस के अन्दर हर कोई बैठा है
 अपना सर झुकाए
 खस्तगी² दिन की चबाए
 क्या हुई एक दूसरे से बात करने की
 वो राहत
 वो मुसर्त!
 आज दुनिया—आखिरी बस की तरह मह्वे-सफर³ है
 सब मुसाफिर
 कुर्ब⁴ के एहसास से नाआशना⁵ बैठे हुए हैं
 अब किसी को अजनबी होना बरा लगता नहीं है!

बिसाते-इज़हार⁶

जादूए-इज़हार⁷ का एक एक फितना
 मेरे होंटों से चिमटकर रह गया है!
 ये मेरे अल्फ़ाज़... आतिशनाक⁸ कंकर
 यह तेरी ठंडी समाअत... इक समुन्दर

1-ओस से तर 2-यकावट 3-यात्रा में लीन 4-निकटता 5-अपरिचित, अनजान 6-अभिव्यक्ति का सामर्थ्य 7-अभिव्यक्ति का जादू 8-अनिमय

اس سمندر میں سلگتے کنکروں کو
 پھینکتا آیا ہوں میں
 روزِ ازل سے
 ختم ہو جائیں گے جب کنکر
 تو میں خود کو اٹھا کر پھینک دوں گا
 اور جڑا ہو جاؤں گا!

چینا ہے مجھے.....

پھر خیال آیا کہ چینا ہے مجھے.....
 جس طرح ایک تھکا ماندہ پرند
 لاکھ ہو برف بہ جاں
 لاکھ ہو آہستہ سفر
 اک بلندی پہ تو ہوتا ہے ضرور
 زیرِ پرواز کوئی گہرا سمندر ہے تو کیا
 اُسے اوپر سے گذر جانا ہے!!

روایت

گہر کی محدود وسعت میں اُڑتی ہوئی
 دھول کی تتلیاں

इस समुन्दर में सुलगते कंकरों को
 फेंकता आया हूँ मैं
 रोज़े-अज़ल¹ से
 खत्म हो जाएँगे जब कंकर
 तो मैं खुद को उठाकर फेंक दूँगा
 और...तेरा हो जाऊँगा!

जीना है मुझे

फिर खयाल आया कि जीना है मुझे...
 जिस तरह एक थका माँदा परिन्द
 लाख हो बर्फ़-ब-जाँ²
 लाख हो आहिस्ता सफ़र
 इक बुलन्दी प' तो होता है ज़रूर
 ज़ेरे-परवाज़³ कोई गहरा समुन्दर है तो क्या
 उसे ऊपर से गुज़र जाना है!!

रिवायत

घर की महदूद वुसअत⁴ में उड़ती हुई
 धूल की तितलियाँ

1-अनादेरुह 2-शियल 3-उड़ान के लिए 4-सीमित विस्तार

بیٹھتی ہیں کبھی ریڈیو پر.....
 کبھی کرسیوں کے سکون بخش آغوش میں!
 آئینہ سے ہٹادیں اگر
 تو کتابوں کے شانوں پہ سو جائیں گی
 ڈھول کی تیلیاں.....
 تابد گھر کے اندر رہیں گی.....
 اگر روشنی ان کو باہر نٹائے
 تو یہ مسکراتی رہیں گی درتپے کے پاس!!

آخری موسم

زماں مکاں کے ہزار ہنگامے قلب خستہ کو اس طرح ڈھیر کر گئے ہیں
 کہ جیسے اک خشک خشک پتے کی کپکپاتی ہوئی رگوں سے
 چمک رہی ہو تمام ماحول کے مناظر کی ماندگی بھی
 ہر ایک جھونکے خشکی بھی
 یہ خشک پتہ
 ہوا کے مہوت دائروں میں زمیں سے سرچمک کے اپنی تمام رنگت بدل چکا ہے
 اب ایک پتھر کے بیخ زدہ اور سیاہ سینے پہ آ کے بے ہوش ہو گیا ہے!

बैठती हैं कभी रेडियो पर
 कभी कुर्सियों के सुकूँबख़्शा आगोश¹ में!
 आईने से हटा दें अगर
 तो किताबों के शानों² प' सो जाएँगी
 धूल की तितलियाँ...
 ता अबद³ घर के अन्दर रहेंगी...
 अगर रौशनी इनको बाहर बुलाए
 तो ये मुस्कराती रहेंगी दरीचे⁴ के पास!!

आखिरी मौसम

ज़माँ मकाँ⁵ के हज़ार हंगामे कल्बे-खस्ता⁶ को इस तरह ढेर कर गए हैं
 कि जैसे इक खुशक पत्ते की कपकपाती हुई रगों से
 चिपक रही हो तमाम माहील के मनाज़िर⁷ की माँदगी⁸ भी
 हर एक झोंके की खस्तगी भी
 ये खुशक पत्ता
 हवा के मबूहूत⁹ दायरों में ज़मीन से सर पटकके अपनी तमाम रंगत
 बदल चुका है
 अब एक पत्थर के यख़ज़दा¹⁰ और सियाह सीने प' आके बेहोश हो
 गया है!

1-नौद 2-कंधे 3-अनन्दकास तक 4-खिड़कियाँ 5-पेस-काल 6-भारत-थका दिल 7-दृश्य 8-थकान, ठहराव
 9-घक्ति, सव्य 10-हिमवत्

میں قلب خستہ کو لے کے سنگین دور کے فرش پر پڑا ہوں!!
مگر کیا یک کچھ ایسے ہو نکا یا قلب خستہ کو ایک خوابِ حسین نے آ کر
کہ جیسے بارش کا پہلا قطرہ
کچھ اتنی شدت سے ٹسک پتے پر آگرے "اُس کو توڑ ڈالے!!!"

मैं कल्बे-खस्ता को लेके संगीन दौर के फर्श पर पड़ा हूँ!!
मगर यकायक कुछ ऐसे चींकाया कल्बे-खस्ता को एक ख्याबे-हसीं¹
ने आकर
कि जैसे बारिश का पहला कतरा
कुछ इतनी शिद्दत से खुश्क 'पत्ते प' आ गिरे, उस को तोड़ डाले!!!



حساب رنگ

हिसाबे-रंग

وہ اسرار محفوظ بیدار باطن
 دم گفتگو صد سخن معتبر راز
 راج نرائن راز کے نام

वो असरार महफूज बेदार बातिन
 दमे-गुफ्तगू सदसुखन मोतबर 'राज'

राजनरायन 'राज' के नाम

مشفق محترم جناب ٹھا کر داس صاحب بھائیہ
کی نذر

मुश्फ़के-मोहतरम जनाब ठाकुर दास भाटिया
की नज़

حمد

نام ترا	سبز سٹوں، جنگل کا
نام ترا	شور، گھنے بادل کا
ڈور تری	پچپ، خود میں ڈوبوں کی
نام ترا	نعرہ، دکھی پاگل کا
عکس ترے	رنگ، طلائی حنائی
نام ترا	قصہ، ہر مشعل کا
پتکے ترے	نیند کا پہلا جھونکا
نام ترا	پہلا سُرا، پاپل کا
ذات تری	یاد، گئے وقتوں کی
نام ترا	خواب، آتے ہوئے کل کا

हम्द

सब्ज सुकूँ जंगल का नाम तेरा
शोर, घने बादल का नाम तेरा

घुप, खुद में डूबों की डोर तेरी
नारा, दुखी पागल का नाम तेरा

रंग, तिलाई, हिनाई अकस तेरे
किस्सा, हर मशअल का नाम तेरा

नींद का पहला झोंका पंख तेरे
पहला सुर, हलचल का नाम तेरा

याद, गए वक्तों की ज्ञात तेरी
छुवाब, आते हुए कल का नाम तेरा



وہ مری زندہ دلی کا جانے کیا مانگے حساب
جاتا موسم ہے، کوئی پتا ہر الیتا چلوں

वो मेरी ज़िन्दादिली का जाने क्या माँगे हिसाब
जाता मौसम है, कोई पत्ता हरा लेता चलूँ

غزلیں

ग़ज़लें

پہیم موج امکانی میں
اگلا پاؤں نئے پانی میں

صفِ شفق سے مرے بستر تک
ساتوں رنگ فراوانی میں

بدن، وصال آہنگ ہوا سا
قہ، عجیب پریشانی میں

کیا سالم پہچان ہے اُس کی
وہ کہ نہیں اپنے ثانی میں

لوک کے جانے کیا کہتا وہ
اُس نے سنا سب بے دھیانی میں

یاو تری، چھپے کہ سرِ شام
دُھند اتر جائے پانی میں

خود سے کبھی میل لیتا ہوں میں
سٹائے میں، ویرانی میں

1

पैहम¹ मीजे-इम्कानी² में
अगला पाँव नए पानी में

सफे-शफक³ से मेरे बिस्तर तक
सातों रंग फ़रावानी⁴ में

बदन, विसाल आहंग⁵ हवा सा
क़बा⁶, अजीब परेशानी में

क्या सालिम पहचान है उसकी
वो कि नहीं अपने सानी⁷ में

टोकके जाने क्या कहता वो
उसने सुना सब बेध्यानी में

याद तेरी, जैसे कि सरे-शाम
धुँद उतर जाए पानी में

ख़ुद से कभी मिल लेता हूँ मैं
सन्नाटे में, वीरानी में

آخر سوچا دیکھ ہی لیجے
کیا کرتا ہے وہ من مانی میں

ایک دیا آکاش میں بانی
ایک چراغ سا پیشانی میں

☆

2

کھٹا کہ پھر آسمان بھر تھی
خوشی سفر کی ، اڑان بھر تھی

وہ کیا بدن بھر خفا تھا مجھ سے
کہ آنکھ بھی پُچ گمان بھر تھی

افق کہ مگر ہو گیا محور
لکیر سی اک کہ دھیان بھر تھی

وہ موج کیا ٹوٹ کر گری ہے
تو کیا یہ بس امتحان بھر تھی

وہ اک فسانہ زبان بھر تھا
یہ اک سماعت کہ کان بھر تھی

आखिर सोचा देख ही लीजे
क्या करता है वो मनमानी में

एक दिया आकाश में बानी
एक चराग सा पेशानी में

2

फ़जा कि फिर आसमान भर थी
खुशी सफ़र की, उड़ान भर थी

वो क्या बदन भर ख़फ़ा था मुझसे
कि आँख भी चुप गुमान भर थी

उफुक¹ कि फिर हो गया मुनव्वर²
लकीर सी इक कि ध्यान भर थी

वो मौज क्या टूटकर गिरी है
तो क्या ये बस इम्तिहान भर थी

वो इक़ फ़साना ज़बान भर था
ये इक़ समाअत³ कि कान भर थी

سبب کہ اب تک وہ پوچھتا ہے
یری اُداسی کہ آن بھر تھی

کھلا سمندر کہ چاند بھر تھا
ہوا ، کہ شب ، بادبان بھر تھی

ہمیں نے ہمار کر دکھائی
وہ اک زکاوٹ : چٹان بھر تھی

شفق بنی آسماں میں جا کر
جو ٹوں کی ٹوند ، اک نشان بھر تھی

نہ لوٹ پایا ، وہ جانتا تھا
کہ واپسی درمیان بھر تھی

کسی غزل میں نہ آئی پائی
وہ اک اذیت کہ جان بھر تھی

☆

3

خاک و خوں کی دستوں سے باخبر کرتی ہوئی
اک نظر امکاں ہزار امکاں سفر کرتی ہوئی

सबब कि अब तक वो पूछता है
मेरी उदासी कि आन भर थी

खुला समुन्दर कि चाँद भर था
हवा, कि शब, बादबान¹ भर थी

हमीं ने मिसमार² कर दिखाई
वो इक रुकावट : चटान भर थी

शफ़क़³ बनी आसमाँ में जाकर
जो खूँ की बूँद, इक निशान भर थी

न लौट पाया, वो जानता था
कि वापसी दरभियान भर थी

किसी गुज़ल में न आई बानी
वो इक अजीयत⁴ कि जान भर थी

3

खाको-खूँ⁵ की वुसअतो⁶ से बाख़बर करती हुई
इक नज़र इम्काँ हजार इम्काँ सफ़र करती हुई

اک عجب بے چین منظر ، آنکھ میں ڈھلتا ہوا
اک غلش ، سفاک سی ، سینے میں گھر کرتی ہوئی

اک کتاب صد ہنر ، تشریح زائل کا شکار
ایک مہمل بات ، جاذب کا اثر کرتی ہوئی

جسم اور اک نیم پوشیدہ ہوس آمادگی
آنکھ اور سیر لباس مختصر کرتی ہوئی

تنگی کا زہر سینے کو سیہ کرتا ہوا
اک طلب اپنے نئے کو تیز تر کرتی ہوئی

وہ نگاہ اپنے لیے ہے صد حساب آرزو
اور مجھے بیگانہ نفع و ضرر کرتی ہوئی

ایک تہذیبی شکایت تیرے میرے درمیاں
خود بسر ہوتی ہوئی مجھکو بسر کرتی ہوئی

☆

4

اے لحو ، میں کیوں لحو لزاں ہوں بتاؤ
کس جاگتے باطن کا میں امکاں ہوں بتاؤ

इक अजब बेचैन मंज़र आँख में ढलता हुआ
इक खलिश सफ़ाक¹ सी, सीने में घर करती हुई

इक किताबे-सदहुनर², तश्रीहे-ज़ाइल³ का शिकार
एक मुहमल⁴ बात, जादू का असर करती हुई

जिस्म और इक नीमपोशीदा⁵ हवस आमादगी⁶
आँख और सैरे-लिबासे-मुख़तसर करती हुई

तिशनी का ज़हर सीने को सियह करता हुआ
इक तलब अपने नशे को तेज़तर करती हुई

वो निगाह अपने लिए है सद⁷ हिसाबे-आरज़ू
और मुझे बेगानए-नफ़ओ-ज़रर⁸ करती हुई

एक तहजीबी शिकायत तेरे मेरे दरमियाँ
ख़ुद बसर होती हुई मुझको बसर करती हुई

4

ऐ लम्हो, मैं क्यों लम्हए-लर्जा⁹ हूँ बताओ
किस जागते बातिन¹⁰ का मैं इम्काँ हूँ, बताओ

1-जानलेवा चुमने 2-सैकड़ों हुनर वाली किताब 3-व्यर्थ व्याख्या 4-निरर्थक 5-आधा ठँका-छिपा
6-यासना की ओर प्रवृत्त 7-औ 8-ताम-हानि से बेख़बर (यह शेर 'हिसाबे-रंग' में शामिल नहीं है लेकिन
'शफ़क़ शय्यर' में मिलता है। सं. 1) 9-कम्पित क्षण, 10-अर्तर्पन

میں ایک کھیلے باب تصور کی رسائی
میں کس کے لیے اس قدر آساں ہوں بتاؤ

کس لس کی تحریر ہوں محراب ہوا پر
کس لفظ کا مفہوم فرواں ہوں بتاؤ

کس منظر اثبات کے ہونٹوں کی ضیا ہوں
کس چپ کی میں آوازِ فروزاں ہوں بتاؤ

میں سلسلہ در سلسلہ اک نامہ روشن
کس حرفِ بشارت کا دبستاں ہوں بتاؤ

کس بوسہ بے ساختہ کا ہوں میں تقدس
کس سینہ بے داغ کا ارماں ہوں بتاؤ

میں صبح کے نظارہ اول کی ٹھک ٹھک
میں کس کا یہ سرمایہ ارزاں ہوں بتاؤ

☆

5

عجیب رونا سسکتا نواحِ جاں میں ہے
یہ اور کون مرے ساتھ امتحاں میں ہے

मैं एक खुले बाबे-तसव्वुर¹ की रसाई²
मैं किसके लिए इस कदर आसाँ हूँ बताओ

किस लम्स की तहरीर हूँ मेहराबे-हवा पर
किस लफ्ज का मफ़हूमे-फ़रावाँ³ हूँ बताओ

किस मंजरे-इसबात⁴ के होंठों की जिया⁵ हूँ
किस चुप की मैं आवाजे-फ़रोजाँ⁶ हूँ बताओ

मैं सिलसिला दर सिलसिला इक नामए-रौशन⁷
किस हर्फ़े-बशारत⁸ का दबिस्ताँ⁹ हूँ बताओ

किस बोसए- बेसाख़्ता¹⁰ का हूँ मैं तक़दुस¹¹
किस सीनए-बेदाग़ का अरमाँ हूँ बताओ

मैं सुब्ह के नज़्ज़ारए-अव्वल की ख़ूनक बू¹²
मैं किसका ये सरमायए-अरजाँ¹³ हूँ बताओ

5

अजीब रोना सिसकना नवाहे-जाँ¹⁴ में है
ये और कौन मेरे साथ इम्तिहाँ में है

1-कल्पना-द्वार 2-पहुँच 3-अर्थ की प्रचुरता 4-सकारात्मक दृश्य 5-रौशनी, प्रकाश 6-रौशन आवाज़
7-प्रकाशित पत्र 8-सुझ-सुवरी देने वाले हर्फ़ 9-पाठशाला 10-अनायास लिया गया चुम्बन 11-पवित्रता
12-कैब गंध 13-सस्ती (मूख्यहीन) पूँजी-सम्पत्ति 14-जाँ के चारों ओर

یہ رات گزرے تو دیکھوں طرف طرف کیا ہے
ابھی تو میرے لیے سب کچھ آسماں میں ہے

کئے گا سر بھی اسی کا کہ یہ عجب کردار
کبھی الگ بھی ہے ، شامل بھی داستاں میں ہے

تمام شہر کو ہسار کر رہی ہے ہوا
میں دیکھتا ہوں وہ محفوظ کس مکاں میں ہے

نہ جانے کس سے تری گفتگو رہی بائی
یہ ایک زہرا! کہ اب تک تری زباں میں ہے

☆

6

ہم ہیں ، منظر یہ آسمانوں کا ہے
اک عتاب آتے جاتے زمانوں کا ہے

ایک زہرا پ غم ، سینہ سینہ سفر
ایک کردار ، سب داستاںوں کا ہے

کس مسلسل افق کے مقابل ہیں ہم
کیا عجب سلسلہ امتحاںوں کا ہے

ये रात गुज़रे तो देखूँ तरफ़ तरफ़ क्या है
अभी तो मेरे लिए सब कुछ आसमाँ में है

कटेगा सर भी इसी का कि ये अजब किरदार
कभी अलग भी है, शामिल भी दास्ताँ में है

तमाम शहर को मिसमार¹ कर रही है हवा
मैं देखता हूँ वो महफूज़ किस मकाँ में है

न जाने किससे तेरी गुफ़्तगू रही बानी
ये एक ज़हर! कि अब तक तेरी ज़बाँ में है

6

हम हैं, मंज़र सियह आसमानों का है
इक इताब² आते जाते ज़मानों का है

एक ज़ह्राबे-ग़म³ सीना सफ़र
एक किरदार, सब दास्तानों का है

किस मुसल्लल उफुक के मुकाबिल हैं हम
क्या अजब सिलंसिला इम्तिहानों का है

1-कहना 2-झोप 3-दुखली विष

پھر ہوئی ہے ہمیں مٹیوں کی تلاش
 ہم ہیں ، اڑتا سرب ڈھلانوں کا ہے
 کون سے معرکے ہم نے سر کر لیے
 یہ نشہ سا ہمیں کن کانوں کا ہے
 یہ الگ بات ، وہ کچھ بتائے نہیں
 لیکن اس کو پتہ سب خزانوں کا ہے
 سب چلے دور کے پانیوں کی طرف
 کیا نظارہ کھلے بادبانوں کا ہے
 اُس کی نظروں میں سارے مقامات ہیں
 پر اُسے شوق اندھی اڑانوں کا ہے
 آدھ بائی کہ خولجہ کے در کو چلیں
 آستانہ ہزار آستانوں کا ہے

☆

7

کچھ نہ کچھ ساتھ اپنے یہ اندھا سرب لے جائے گا
 پاؤں میں زنجیر ڈالوں گا تو سرب لے جائے گا

फिर हुई है हमें मिट्टियों की तलाश
हम हैं, उड़ता सफ़र अब ढलानों का है

कौन से भारके¹ हमने सर कर लिए
ये नशा सा हमें किन तकानों² का है

ये अलग बात वो कुछ बताए नहीं
लेकिन उसको पता सब खज़ानों का है

सब चले दूर के पानियों की तरफ़
क्या नज़ारा खुले बादबानों³ का है

उसकी नज़रों में सारे मुक़ामात⁴ हैं
पर उसे शौक अँधी उड़ानों का है

आओ बानी कि ख़ाजा के दर को चलें
आस्ताना⁵ हजार आस्तानों का है

7

कुछ न कुछ साथ अपने ये अन्धा सफ़र ले जाएगा
पाँवों में जंजीर डालूँगा तो सर ले जाएगा

اندر اندر یک یک اٹھے گا طوفانِ نفی
 سب نشاطِ نفع ، سب رنجِ ضرر لے جائے گا
 ایک پیلا رنگ باقی رہ گیا ہے آنکھ میں
 ڈوہتا منظر اُسے دامن میں بھر لے جائے گا
 گھونٹتا ہے شہر کے سب سے حسین بازار میں
 اک اذیت ناک محرومی وہ گھر لے جائے گا
 منتظر اک لمحہ سادہ اُمیدی کا ہوں میں
 جانے کب آئے گا ، سینے کے بھنور لے جائے گا
 اب نہ لائے گا کوئی اُس کا پتہ میرے لیے
 اور وہاں کوئی نہ اب میری خبر لے جائے گا
 اس قدر خالی ہوا بیٹھا ہوں اپنی ذات میں
 کوئی جھوٹا آئے گا! جانے کدھر لے جائے گا

☆

آج اک لہر بھی پانی میں نہ تھی
 کوئی تصویرِ روانی میں نہ تھی

अन्दर अन्दर यक ब यक उड़ेगा तूफ़ाने-नफ़ी¹
सब निशाते-नफ़अ², सब रंजे-जरर³ ले जाएगा

एक पीला रंग बाकी रह गया है आँख में
डूबता मंजर उसे दामन में भर ले जाएगा

घूमता है शहर के सबसे हसीं बाजार में
इक अजीयतनाक महरूमि⁴ वो घर ले जाएगा

मुत्तिजर⁵ इक लम्हए-सादाउमीदी⁶ का हूँ मैं
जाने कब आएगा, सीने के भँवर ले जाएगा

अब न लाएगा कोई उसका पता मेरे लिए
और वहाँ कोई न अब मेरी खबर ले जाएगा

इस क़दर खाली हुआ बैठा हूँ अपनी ज़ात में
कोई झोंका आएगा! जाने किधर ले जाएगा

8

आज इक लहर भी पानी में न थी
कोई तस्वीर रवानी में न थी

1-ईकार का तूफ़ान 2-प्राप्ति (लाभ) की प्रसन्नता 3-हानि का दुख 4-कष्टदायी वचन 5-प्रतीक्षा 6-निश्चल उम्मीद का क्षण

دولہ مصرعہ اول میں نہ تھا
حرکت مصرعہ ثانی میں نہ تھی

کوئی آہنگ نہ الفاظ میں تھا
کیفیت کوئی معانی میں نہ تھی

خوں کا نم سادہ نوائی میں نہ تھا
خوں کی تُو شوخ بیانی میں نہ تھی

کوئی مفہوم تصور میں نہ تھا
کوئی بھی بات کہانی میں نہ تھی

رنگ اب کوئی خلاؤں میں نہ تھا
کوئی پہچان نشانی میں نہ تھی

خوش بھینی میں نہ تھا اب کوئی نور
ضو کوئی خندہ گمانی میں نہ تھی

جی سلکنے کا دھواں خط میں نہ تھا
روشنی حرف زبانی میں نہ تھی

رنج بھولے ہوئے وعدے کا نہ تھا
لذت اب یاد دہانی میں نہ تھی

वलवला मिस्रए-अव्वल¹ में न था
हरकत मिस्रए-सानी² में न थी

कोई आहंग³ न अल्फ़ाज में था
कैफ़ियत कोई मआनी में न थी

खूँ का नम सादानवाई⁴ में न था
खूँ की बू शोख़बयानी में न थी

कोई मफ़हूम⁵ तसव्वुर में न था
कोई भी बात कहानी में न थी

रंग अब कोई खलाओं में न था
कोई पहचान निशानी में न थी

खुशयकीनी में न था अब कोई नूर
जौ⁶ कोई खंदागुमानी⁷ में न थी

जी सुलगने का धुआँ ख़त में न था
रौशनी हफ़े-जबानी में न थी

रंज भूले हुए वादे का न था
लज़्जत अब याद दहानी⁸ में न थी

لو کہ جامد سی غزل بھی لکھ دی
آج کچھ زندگی باقی میں نہ تھی

☆

9

اس بید سیاہی کے پھلنے کی خبر دے
دے پہلی اذیاں ، رات کے ڈھلنے کی خبر دے

اے صاحبِ اول کے ضیا ساز فرشتے
رنگوں کی سواری کے نکلنے کی خبر دے

طاہر کو دے آزاد اُڑانوں کی فضائیں
کھسار کو دریا کے اُچھلنے کی خبر دے

ہر آن صداؤں کو نئے راگ عطا کر
ہر لمحہ مناظر کے بدلنے کی خبر دے

سب کو سفر دست پندی کا دے مژدہ
اب گھاٹ کی سب کشتیاں چلنے کی خبر دے

☆

लो कि जामिद¹ सी गज़ल भी लिख दी
आज कुछ जिन्दगी बानी में न थी

9

इस तुन्द² सियाही के पिघलने की ख़बर दे
दे पहली अज़ों रात के ढलने की ख़बर दे

ऐ साअते-अव्वल³ के ज़ियासाज⁴ फरिश्ते
रंगों की सवारी के निकलने की ख़बर दे

ताइर⁵ को दे आज़ाद उड़ानों की फ़जाएँ
कुहसार⁶ को दरिया के उछलने की ख़बर दे

हर आन सदाओं को नए राग अता⁷ कर
हर लम्हा मनाज़िर⁸ के बदलने की ख़बर दे

सबको सफ़रो-सम्तपसन्दी⁹ का दे मुज़्दा¹⁰
अब घाट की सब कश्तियाँ चलने की ख़बर दे

1-अड़, गतिहीन 2-गहरी, गाढ़ी 3-पहली घड़ी 4-रीशनी फैलाने वाला 5-परिन्दा 6-पर्वतमाला 7-प्रवाह
8-दर्ज़र (दुश्म) का घुसवचन 9-यात्रा और दिशा-प्रवृत्त 10-खुशख़बरी

سیرِ شبِ لامکاں اور میں
ایک ہوئے رفتگاں اور میں

سانسِ خلاؤں نے لی ، سینہ بھر
پھیل گیا آسماں اور میں

سر میں سلگتی ہوا ، تھنہ تر
دم سے اُلجھتا دھواں اور میں

ہمِ ابد کی تلاشِ طویل
حسنِ شروع گماں اور میں

میری فراوانیاں ، تو ہے تو
اب ہے نشاطِ زیاں اور میں

دونوں طرف جنگلوں کا سکوت
شور بہت درمیاں اور میں

خاک و خلا بے چراغ اور شب
نقش و نوا بے نشاں اور میں

सैरे-शबे-लामकाँ¹ और मैं
एक हुए रफतगाँ² और मैं

साँस खलाओं ने ली, सीना भर
फैल गया आसमाँ और मैं

सर में सुलगती हवा, तिश्नातर
दम से उलझता धुआँ और मैं

इस्मे-अबद³ की तलाशे-तवील⁴
हुस्ने-शुरूए-गुमाँ⁵ और मैं

मेरी फ़रावानियाँ⁶, नौ-ब-नौ⁷
अब है निशाते-ज़ियाँ⁸ और मैं

दोनों तरफ़ जंगलों का सुकूत⁹
शोर बहुत दरभियाँ और मैं

खाको-खला¹⁰ बेचराग़ और शब
नक़शो-नवा¹¹ बेनिशाँ और मैं

1-देशातीत रूपी रात की सैर 2-गुज़रे हुए लोग 3-अन्तिम संज्ञा (नाम) 4-अत्यधिक खोज 5-शंका के आरंभ का सौंदर्य 6-आधिक्य 7-नई-नई 8-स्वप्न का हर्ष 9-चुप्पी 10-घरा और अंतरिक्ष 11-चिन्ह और ध्वनि

پھر مرے دل میں کوئی تازہ کھوٹ
پھر کوئی سخت امتحاں اور میں

کب سے بھٹکتے ہیں باہم الگ
لحزہ کم مہرباں اور میں

دور چھتوں پر برستا تھا تھر
چپ رہے کیوں تم یہاں اور میں

غیر مطالب کہیں اور ڈھونڈ
سہل بہت شرح جاں اور میں

☆

11

دک رہا تھا بہت یوں تو پیرہن اُس کا
ذرا سے لمس نے روشن کیا بدن اُس کا

وہ خاک اڑانے پہ آئے تو سارے دشت اُس کے
چلے گداز قدم تو چن چن اُس کا

وہ جھوٹ سچ سے پرے ، رات ، کچھ سناٹا تھا
دلوں میں راست اُترتا گیا سخن اُس کا

फिर मेरे दिल में कोई ताज़ा खोट
फिर कोई सख्त इम्तिहाँ और मैं

कब से भटकते हैं बाहम¹ अलग
लम्हए-कममेहरबाँ² और मैं

दूर छतों पर बरसता था क़हर
चुप रहे क्यों तुम यहाँ और मैं

गैर मताल्लिब³ कहीं और ढूँड
सहल⁴ बहुत शर्हे-जाँ⁵ और मैं

11

दमक रहा था बहुत यूँ तो पैरहन⁶ उसका
ज़रा से लम्स⁷ ने रीशन किया बदन उसका

वो खाक उड़ाने प' आए तो सारे दस्त उसके
चले गुदाज़ क़दम⁸ तो चमन चमन उसका

वो झूठ सच से परे, रात कुछ सुनाता था
दिलों में रास्त⁹ उतरता गया सुख़न उसका

1-परस्पर 2-अत्यल्प कृपास्तु शय्य 3-अभिप्राय रहित 4-आसान 5-आत्मनिव्यक्ति 6-लिवात 7-स्पर्श
8-नाजुक क़दम. धीमे क़दमों से 9-सीधा

عجیب آب و ہوا کا وہ رہنے والا ہے
ملے گا خواب و خلا میں کہیں وطن اُس کا

تری طرف سے نہ کیا کیا ستم ہوئے اُس پر
میں جانتا ہوں ، بہت دوست بھی نہ بن اُس کا

وہ روز ، شام سے شمعیں دھواں دھواں اُس کی
وہ روز ، صبح اجالا کرن کرن اُس کا

بری نظر میں ہے محفوظ آج بھی بائی
بدن گسا ہوا ، ملبوس بے شکن اُس کا

☆

کہا نہ تھا کہ انکشافِ حال کر نہ پاؤگے
خن خن میں بات کا خیال کر نہ پاؤگے

بہت چلو فساد پا ، یہ خاک ہے نمو ادا
تمام کیمیا کہ پامال کر نہ پاؤگے

اگر ہمارے درمیاں سے اب ہوا گزر گئی
تو پھر یہی رفاقتیں بحال کر نہ پاؤگے

अजीब आबो-हवा का वो रहने वाला है
मिलेगा ख़्वाबो-ख़ला में कहीं वतन उसका

तेरी तरफ़ से न क्या क्या सितम हुए उस पर
मैं जानता हूँ, बहुत दोस्त भी न बन उसका

वो रोज़, शाम से शम्में धुआँ धुआँ उसकी
वो रोज़, सुब्ह उजाला किरन किरन उसका

मेरी नज़र में है महफूज़¹ आज भी बानी
बदन कसा हुआ, मलबूस-बेशिकन² उस का

कहा न था कि इन्क़िशाफ़े-हाल³ कर न पाओगे
सुख़न-सुख़न⁴ में बात का ख़याल कर न पाओगे

बहुत चलो फ़साद-पा⁵, ये ख़ाक़ है नुमू अदा⁶
तमाम कीमिया⁷ कि पायमाल⁸ कर न पाओगे

अगर हमारे दरमियाँ से अब हवा गुज़र गई
तो फिर यही रफ़ाक़ते⁹ बहल कर न पाओगे

1-सुरक्षित 2-बिना सख़वट का लियारा 3-ख़ल प्रकट करना 4-बात-घात 5-विध्वंसकारी चाल 6-उगने या पैदा करने की प्रवृत्तिवाली 7-लियास 8-रौंदना 9-मैत्री

یہ ایک پل جو کھو دیا تو کچھ نہ یاد آئے گا
کہ عمر بھر شمار ماہ و سال کر نہ پاؤ گے

دریدہ منظری کے سلسلے گئے ہیں دُور تک
پکٹ چلو ، نظارۂ زوال کر نہ پاؤ گے

☆

کیا دُھند تجھ میں ہے کہ تو چُپ ہے ، اُداس بھی
اک لمحے کا حساب نہیں تیرے پاس بھی

اِن مٹیوں پہ نقش ہے کس کے قدم کا زہر
اب دُور دُور تک نہیں پیلی سی گھاس بھی

اے دوست مت دکھا کوئی تصویر ہولناک
میرے لیے بہت ہے ذرا سا ہراس بھی

اک مُوند میرے ٹوں کی اڑی تھی طرف طرف
اب سارے خاکداں میں چمک بھی ہے باس بھی

کیا دُور منظری سا دکھائی دیا کہ پھر
خوش آسکا نہ لمحۂ خندہ حواس بھی

ये एक पल जो खो दिया तो कुछ न याद आएगा
कि उम्र भर शुमारे-माहो-साल¹ कर न पाओगे

दरीदामंजरी² के सिलसिले गए हैं दूर तक
पलट चलो नजारए-जवाल³ कर न पाओगे

क्या धुँद तुझमें है कि तू चुप है, उदास भी
इक लम्हे का हिसाब नहीं तेरे पास भी

इन मिट्टियों प' नक़्श है किसके क़दम का ज़हर
अब दूर दूर तक नहीं पीली सी घास भी

ऐ दोस्त मत दिखा कोई तस्वीरे-हीलनाक
मेरे लिए बहुत है ज़रा सा हिरास⁴ भी

इक बूँद मेरे खूँ की उड़ी थी तरफ़ तरफ़
अब सारे खाकदाँ⁵ में चमक भी है बास भी

क्या दूदमंजरी⁶ सा दिखाई दिया कि फिर
ख़ुश आ सका न लम्हए-ख़न्दाहवास⁷ भी

1-वर्ष-मास की गणना। 2-दृश्य का छिन्न-भिन्न होना। 3-पतन का नज़ारा। 4-पय। 5-धरती।
6-धूपपित्त दृश्य 7-सुद्विग्न आनंद का क्षण

اک موج وہ اٹھی کہ سفینہ اُلٹ گیا
ڈوبا کبھی کے ساتھ تلاطم شناس بھی

اچھا کہ اب کوئی نہیں میرا شریکِ جام
پی لوں گا زہر بھی ، میں بجھالوں گا پیاس بھی

پھر اپنے اپنے راستوں سے ہم نہ لوٹ پائے
سچ نکلا میرا ڈر بھی ، تمہارا قیاس بھی

کل تک نہ انتہا مری برہم صدا کی تھی
اب بن کے رہ گیا ہوں سراپا سپاس بھی

باتی شکن شکن سا تمہارا ڈروں بھی ہے
کچھ پارہ پارہ سا ہے تمہارا لباس بھی

☆

محراب نہ قدیل ، نہ اسرار نہ تمثیل
کہہ اے درقِ تیرہ ، کہاں ہے تری تفصیل

اک دُھند میں گم ہوتی ہوئی ساری کہانی
اک لفظ کے باطن سے ابھرتی ہوئی تاویل

इक मौज वो उठी कि सफ़ीना उलट गया
डूबा सभी के साथ तलातुम शनास¹ भी

अच्छा कि अब कोई नहीं मेरा शरीके-जाम
पी लूँगा ज़हर भी मैं बुझा लूँगा प्यास भी

फिर अपने अपने रास्तों से हम न लौट पाए
सच निकला मेरा डर भी, तुम्हारा क़यास भी

कल तक न इन्तिहा मेरी बरहम सदा की थी
अब बनके रह गया हूँ सरापा सिपास² भी

बानी शिकन-शिकन³ सा तुम्हारा दरूँ⁴ भी है
कुछ पारा-पारा⁵ सा है तुम्हारा लिबास भी

14

मेहराब न कंदील, न असरार⁶ न तम्सील⁷
कह ऐ वरके-तीरा⁸, कहाँ है तेरी तफ़सील

इक धुँद में गुम होती हुई सारी कहानी
इक लफ़्ज़ के बातिन⁹ से उलझती हुई तावील¹⁰

1-उत्ताल सहरों को पहचानने वाला 2-आपादमस्तक कृतज्ञता 3-टूटा-टूटा हुआ 4-अन्तर (दिल)
5-दुकड़े-दुकड़े 6-रहस्य 7-दृष्टांत 8-स्याह पृष्ठ 9-भीतर, मर्म 10-तर्क

میں آخری پرتو ہوں کسی غم کے افق پر
اک زرد تماشے میں ہوا جاتا ہوں تحلیل

ولائدہ وقت آنکھ کو منظر نہ دکھا اور
ڈنڈے ہے ہمارے ابھی اک خواب کی تشکیل

آساں ہوئے سب مرحلے اک موجہ پا سے
برسوں کی فضا ایک صدا سے ہوئی تبدیل

☆

نہ جانے کل ہوں کہاں ، ساتھ اب ہوا کے ہیں
کہ ہم پرندے مقاماتِ گم شدہ کے ہیں

ستم یہ دیکھ کہ خود معتبر نہیں وہ نگاہ
کہ جس نگاہ میں ہم مستحق سزا کے ہیں

قدم قدم پہ کہے ہے یہ جی کہ ٹوٹ چلو
تمام مرحلے دشوار انتہا کے ہیں

لصیل شب نے عجب جھانکتے ہوئے چہرے
رکرن رکرن کے ہیں پیاسے ہوا ہوا کے ہیں

मैं आखिरी परतौ¹ हूँ किसी ग़म के उफ़ुक पर
इक ज़ुर्द तमाशे में हुआ जाता हूँ तहलील²

वामन्दए-वक्त³ आँख को मंज़र न दिखा और
जिम्मे है हमारे अभी इक ख़्वाब की तश्कील⁴

आसाँ हुए सब मरहले⁵ इक मौजए-पा⁶ से
बरसों की फ़ज़ा एक सदा से हुई तब्दील

न जाने कल हों कहाँ, साथ अब हवा के हैं
कि हम परिन्दे मुक़ामाते-गुमशुदा⁷ के हैं

सितम ये देख कि खुद मोतबर⁸ नहीं वो निगाह
कि जिस निगाह में हम मुस्तहक⁹ सज़ा के हैं

क़दक क़दम प' कहे है ये जी कि लौट चलो
तमाम मरहले दुश्वार इन्तिहा के हैं

फ़सीले-शब¹⁰ से अजब झाँकते हुए चेहरे
किरन किरन के हैं प्यासे हवा हवा के हैं

1-चमक, आभा 2-विलीन 3-वक्त का मारा हुआ 4-रूपायित करना 5-पड़ाव 6-पौच रूपी लहर 7-खोये हुए स्थान 8-मरोतेमंद 9-शुद्धार 10-रात की चारदीवारी

کہیں سے آئی ہے بانی کوئی خبر شاید
یہ تیرے ہوئے ساپے کسی صدا کے ہیں

☆

عکس کوئی کسی منظر میں نہ تھا
کوئی بھی چہرہ کسی در میں نہ تھا
صبح اک بوند گھٹاؤں میں نہ تھی
چاند بھی شب کو سمندر میں نہ تھا
کوئی جھنکار رگِ گل میں نہ تھی
خواب کوئی کسی پتھر میں نہ تھا
شیع روشن کسی کھڑکی میں نہ تھی
خطر کوئی کسی گھر میں نہ تھا
کوئی وحشت بھی مرے دل میں نہ تھی
کوئی سودا بھی مرے سر میں نہ تھا
تھی نہ لالتِ سخنِ اول میں
ذائقہ حرفِ مکرر میں نہ تھا

कहीं से आई है बानी कोई ख़बर शायद
ये तैरते हुए साये किसी सदा के हैं

अक्स¹ कोई किसी मंज़र में न था
कोई भी चेहरा किसी दर में न था

सुबूह इक बूँद घटाओं में न थी
चाँद भी शब को समुन्दर में न था

कोई झंकार रगे-गुल² में न थी
ख़्वाब कोई किसी पत्थर में न था

शम्ज रीशन किसी खिड़की में न थी
मुन्तज़िर³ कोई किसी घर में न था

कोई वहशत भी मेरे दिल में न थी
कोई सीदा⁴ भी मेरे सर में न था

थी न लज़्जत सुखने-अव्वल में
जायका हर्फ़े-मुकरर⁵ में न था

پیاس کی دُھند بھی ہونٹوں پہ نہ تھی
 اوس کا قطرہ بھی ساغر میں نہ تھا
 منہی بھر اُون نہ تھی بھیڑوں پر
 نغمہ بھر گوشت کبوتر میں نہ تھا
 بھون میں تھی نہ سلگتی ہوئی لو
 برف کا لس دبہر میں نہ تھا
 چاند تارے کسی گردش میں نہ تھے
 دل کسی شوق کے چلر میں نہ تھا
 اب گرہ کوئی مقدر میں نہ تھی
 غم کوئی گیسوئے اہتر میں نہ تھا
 راہ طائف تھی چادر کی طرح
 یعنی کچھ بھی بری ٹھوکر میں نہ تھا
 خود روی قلب قلندر میں نہ تھی
 بے دھڑک حوصلہ لنگر میں نہ تھا
 دن میں تھا کارِ جنوں کا نہ سرور
 شب کا آرام بھی بستر میں نہ تھا

प्यास की धुंद भी होंटों प' न थी
ओस का कतरा भी सागर में न था

मुट्ठी भर ऊन न थी भेड़ों पर
लुकमा भर गोश्त कबूतर में न था

जून में थी न सुलगती हुई लू
बर्फ का लम्स¹ दिसम्बर में न था

चाँद-तारे किसी गर्दिश में न थे
दिल किसी शौक के चक्कर में न था

अब गिरह कोई मुकद्दर में न थी
खम कोई गेसू-ए-अब्त² में न था

राह शफ़फ़ाफ़ थी चादर की तरह
यानी कुछ भी मेरी ठोकर में न था

खुदरवी³ क़ल्बे-क़लन्दर⁴ में न थी
बेधड़क हौसला लश्कर में न था

दिन में था कारे-जुनूँ⁴ का न सुरूर
शब का आराम भी बिस्तर में न था

شاہ کردار تھا غائب ، یعنی
 ذکرِ دل شوق کے دفتر میں نہ تھا
 یوں تو ہم ڈرتے تھے غم سے اب بھی
 پر کوئی خاص مزہ ڈر میں نہ تھا
 بعض طائر تو منڈیروں پہ نہ تھے
 رزق کا بہہ اکثر میں نہ تھا
 میری پلکوں سے سفر کرتا ہوا
 تھا کوئی سایہ کہ دم بھر میں نہ تھا
 اک جھک بعد کی بارش میں نہ تھی
 اک دھواں صحنِ محور میں نہ تھا
 کوئی تشبیہ علامت میں نہ تھی
 استعارہ کوئی پیکر میں نہ تھا
 کیا عجب فصل تھی ویرانی کی
 پھول تک دستِ پیہر میں نہ تھا
 اب ہوا جاتی کہیں کیا لے کر
 کچھ بھی ماحول مکدر میں نہ تھا

शाह किरदार था ग़ायब, यानी
ज़िंक्रे-दिल शौक के दफ़्तर में न था

यूँ तो हम डरते थे गुम से अब भी
पर कोई ख़ास मज़ा डर में न था

बाज़ ताइर¹ तो मुँडेरों पर न थे
रिज़्क² का हमहमा³ अक्सर में न था

मेरी पलकों से सफ़र करता हुआ
था कोई साया कि दम भर में न था

इक महक बाद की बारिश में न थी
इक धुआँ सहने-मुनव्वर⁴ में न था

कोई तश्बीह⁵ अलामत⁶ में न थी
इस्तिआरा⁷ कोई पैकर⁸ में न था

क्या अजब फस्त थी वीरानी की
फूल तक दस्ते-पयम्बर⁹ में न था

अब हवा जाती कहीं क्या लेकर
कुछ भी माहौले-मुकद्दर¹⁰ में न था

1-परिन्दा 2-खाद्य पदार्थ 3-सक्रियता 4-रीशन ऑगन 5-उपमा 6-प्रतीक 7-रूपक 8-रूपाकार
9-सदृशवाक्य के ह्रास 10-गन्दा परिवेश

یوں اکیلے کا سفر تھا ہائی
میں بھی خود اپنے برابر میں نہ تھا

☆

17

دل میں خوشبو سی اتر جاتی ہے ، سینے میں نور سا ڈھل جاتا ہے
خواب اک دیکھ رہا ہوتا ہوں ، پھر یہ منظر بھی بدل جاتا ہے

چاہتا ہوں کہ میں اُٹھ کر دیکھوں ، چھت سے آکاش کا منظر دیکھوں
ابھی چھت تک ہی پہنچتی ہے آنکھ ، پاؤں زینے سے پھسل جاتا ہے

خواب کی گمشدہ تعبیر ہوں میں ، اک عجب ضبط کی تصویر ہوں میں
پھر بھی ان برف سی آنکھوں میں کبھی ، کوئی غم ہے کہ پگھل جاتا ہے

اک ڈھواں جو نہ بکھرنے دے مجھے ، خاک میں بھی نہ اترنے دے مجھے
جب سیاحی کی طرف بڑھتا ہوں ، اک دیا سا کہیں جل جاتا ہے

راہ چلتا ہوں ارادوں کے ساتھ ، شوق کے ساتھ ، مرادوں کے ساتھ
پاؤں ہوتے ہیں قریب منزل ، وقت ہاتھوں سے نکل جاتا ہے

☆

यूँ अकेले का सफ़र था बानी
 मैं भी खुद अपने बराबर में न था

17

दिल में खुशबू सी उतर जाती है, सीने में नूर सा ढल जाता है
 ख़्वाब इक देख रहा होता हूँ फिर ये मंज़र भी बदल जाता है

चाहता हूँ कि मैं उठकर देखूँ, छत से आकाश का मंज़र देखूँ
 अभी छत तक ही पहुँचती है आँख, पाँव ज़ीने से फिसल जाता है

ख़्वाब की गुमशुदा ताबीर हूँ मैं, इक अजब ज़ब्त की तस्वीर हूँ मैं
 फिर भी इन बर्फ़ सी आँखों में कभी, कोई ग़म है कि पिघल जाता है

इक धुआँ जो न बिखरने दे मुझे, खाक में भी न उतरने दे मुझे
 जब सियाही की तरफ़ बढ़ता हूँ, इक दिया सा कहीं जल जाता है

राह चलता हूँ इरादों के साथ, शौक के साथ, मुरादों के साथ
 पाँव होते हैं क़रीबे-मंज़िल, वक़्त हाथों से निकल जाता है

لباس اُس کا علامت کی طرح تھا
 بدن ، روشن عبارت کی طرح تھا
 فضا صیقل سماعت کی طرح تھی
 سکوت اس کا ، امانت کی طرح تھا
 ادا موج تجسس کی طرح تھی
 نفس خوشبو کی شہرت کی طرح تھا
 بساط رنگ تھی منہی میں اُس کی
 قدم اُس کا بشارت کی طرح تھا
 گریزاں آنکھ دعوت کی طرح تھی
 تکلف اک عنایت کی طرح تھا
 خلش بیدار نغمے کی طرح تھی
 رگوں میں خوں مصیبت کی طرح تھا
 تصور پر حنا بکھری ہوئی تھی
 سماں آغوشِ خلوت کی طرح تھا

लिबास उसका, अलामत¹ की तरह था
बदन, रौशन इबारत की तरह था

फजा सैकल² समाअत³ की तरह थी
सुकूत⁴ उसका, अमानत की तरह था

अदा मौजे-तजस्सुस⁵ की तरह थी
नफस⁶, ख़ुशबू की शुहरत की तरह था

बिसाते-रंग थी मुट्ठी में उसकी
क़दम उसका बशारत⁷ की तरह था

गुरेज़ों⁸ आँख दावत की तरह थी
तकल्लुफ़ इक इनायत की तरह था

खलिश⁹ बेदार¹⁰ नश्वे की तरह थी
रगों में ख़ूँ मुसीबत की तरह था

तसव्वुर पर हिना बिखरी हुई थी
समाँ आगोशे-खल्वत¹¹ की तरह था

1-प्रतीक 2-बन्धकदार 3-सपन 4-चुप्पी 5-खोज की उमंग 6-सौत 7-खुश खबरी 8-उपेक्षा करने वाली
9-चुमन 10-जाग्रत 11-सन्धई की गोद

ہوں اندھی ضرورت کی طرح تھی
وہ خود دائمِ محبت کی طرح تھا

وہی اسلوبِ سادہ ، شرحِ دل کا
کسی زندہ روایت کی طرح تھا

☆

اس طرح نارسائی بھی کب تھی، یہ کیا امتحاں ہے
گاہ بجز صدا، گاہ پامال چُپ درمیاں ہے

کون جھوٹکا چھپا رہ گیا تھا، پرانی رتوں کا
کس سلگتی ہوئی باس کا میرے اندر دھواں ہے

میں خلاؤں میں اڑتا ورق تیرے اقرار کا ہوں
نقش جس پر تیرے بوسہ ادلیں کا نشاں ہے

تم کسی لمحے سے رشتہ قائم نہیں کر سکے ہو
کیا پتہ ہے تمہیں، وقت کتنا بڑا مہریاں ہے

دیکھ اک بوندِ خوں کے بکھرنے کا نایاب منظر
رت بدلتی ہے، گلزار ہوتا ہوا آسماں ہے

हवस अन्धी जरूरत की तरह थी
 वो खुद दाइम¹ महब्बत की तरह था

वही उस्तूबे-सादा² शर्हे-दिल³ का
 किसी जिन्दा रिवायत⁴ की तरह था

इस तरह नारसाई⁵ भी कब थी, ये क्या इम्तिहाँ है
 गाह⁶ बंजर सदा, गाह पामाल⁷ चुप दरमियाँ है

कौन झोंका छुपा रह गया था, पुरानी रुतों का
 किस सुलगती हुई बास का मेरे अन्दर धुआँ है

मैं खलाओं में उड़ता वरक तेरे इकरार का हूँ
 नक़श जिस पर तेरे बोसए-अव्वली⁸ का निशाँ है

तुम किसी लम्हे से रिश्ता कायम नहीं कर सके हो
 क्या पता है तुम्हें, वक़्त कितना बड़ा मेहरबाँ है

देख इक बूँद छूँ के बिखरने का नायाब मंज़र
 रुत बदलती है, गुलनार होता हुआ आसमाँ है

1-समेझा 2-सहज शैली 3-दिल की अभिव्यक्ति 4-परम्परा 5-अप्राप्ति, पहुँच से परे 6-कभी 7-पद दलित
 8-पदस्त घुम्बन

آج آسان ہیں سارے مفہوم اُس کے لئے بھی
زور و اب وہ بیٹھا ہے، میری طرح بے زباں ہے

کب سے ہیں منتظر ایک سوغات کے ہم بھی بانی
جس کے ہاتھوں سے بٹتے ہیں سکھ دکھ سبھی وہ کہاں ہے

☆

خود چاک، باطن خبر ایک لمحہ
عالم بہ عالم سفر ایک لمحہ

مسماں آنکھ اور خس ڈھیر منظر
عادت، طبق طاق و در ایک لمحہ

لرزاں ہے کب سے لہو کے افق پر
زہراب میں تر بہ تر ایک لمحہ

شک ایک لمحہ کہ پہلے بھی کیا تھا
آئندہ کیا ہو، یہ ڈر ایک لمحہ

پیلے خلاؤں میں دیکھا کیے ہم
ڈھونڈا کیے ہم دگر ایک لمحہ

आज आसान हैं सारे मफ़हूम¹ उसके लिए भी
रू-ब-रू अब वो बैठा है, मेरी तरह बेजबाँ है

कब से हैं मुन्तज़िर² एक सौगात के हम भी बानी
जिसके हाथों से बँटते हैं सुख दुख सभी, वो कहाँ है

खुदचाक³, बातिन ख़बर⁴ एक लम्हा
आलम-ब-आलम सफ़र एक लम्हा

मिसमार⁵ आँख और ख़स ढेर मंज़र⁶
ग़ारत, तबक़ ताको-दर⁷ एक लम्हा

लर्ज़ा है कब से लहू के उफ़ुक़ पर
ज़हराब⁸ में तर-ब-तर एक लम्हा

शक़ एक लम्हा कि पहले भी क्या था
आइन्दा क्या हो, ये डर एक लम्हा

पीले ख़लाओं में देखा किये हम
दूँडा किये हम दिगर एक लम्हा

1-आशय 2-प्रतीकारत 3-आत्मविदीर्ण 4-आत्मबोध रखने वाला 5-ध्वस्त 6-यास-पूस के ढेर वाला दृश्य
7-उल्ल, ताखा और द्वार 8-झड़तीला पानी

چکی تو تھی مثلِ برقِ تجسس
 برہم ، برہنہ ، نظر ایک لہو
 کیا کیا باطین اُٹا گیا ہے
 لمحات سے ٹوٹ کر ایک لہو

☆

کوئی بھولی ہوئی شے طاقِ ہر منظر پہ رکھی تھی
 ستارے چھت پہ رکھے تھے شکنِ بستر پہ رکھی تھی
 لرز جاتا تھا باہر جھانکنے سے اُس کا تن سارا
 سیاہی جانے کن راتوں کی اُس کے در پہ رکھی تھی
 وہ اپنے شہر کے بنتے ہوئے کردار پر چپ تھا
 عجب اک لاپتہ ذات اُس کے اپنے سر پہ رکھی تھی
 کہاں کی سیر ہفت افلاک ، اوپر دیکھ لیتے تھے
 حسین اُجلی کپاسی برفِ ہالِ دہر پہ رکھی تھی
 کوئی کیا جانتا کیا چیز کس پر بوجھ ہے ہائی
 ذرا سی اوس یوں تو سینہ پتھر پہ رکھی تھی

चमकी तो थी मिस्ले-बर्के-तजस्सुस¹
बरहम², बरहना³ नजर एक लम्हा

क्या क्या बिसातें उलटता गया है
लम्हात से टूटकर एक लम्हा

21

कोई भूली हुई शय ताके-हर मंजर प' रक्खी थी
सितारे छत प' रक्खे थे शिकन बिस्तर प' रक्खी थी

लरज जाता था बाहर झॉकने से उसका तन सारा
सियाही जाने किन रातों की उसके दर प' रक्खी थी

वो अपने शहर के मिटते हुए किरदार पर चुपचाप
अजब इक लापता जात⁴ उसके अपने सर प' रक्खी थी

कहाँ की सैरे-हफत-अफलाक⁵, ऊपर देख लेते थे
हँसी उजली कपासी-बर्फ बालो-पर⁶ प' रक्खी थी

कोई क्या जानता क्या चीज किस पर बोझ है बानी
जरा सी ओस यूँ तो सीनए-पत्थर प' रक्खी थी

1-खोज की धिजली की तरह 2-झुठ 3-नंगा 4-व्यक्तित्व 5-सात आसमान की सैर 6-पंख

وہی دردِ مسلسل ، وہی صرفِ دعا میں
بسر ہوتی ہوئی شب ، بسر ہوتا ہوا میں

اکیلا اپنا محرم کہ اپنا دوسرا میں
نظر میں ، آئینہ میں ، ساعت میں صدا میں

میانِ محشرستاں ، عجب بے واسطہ میں
نہیں اُس کی خبر میں ، نہیں اپنا پتہ میں

میں آساں بھی کٹھن بھی ، مگر تم کون میرے
میں آپ اپنا تذبذب ، خود اپنا فیصلہ میں

سکوں نا آشنا لوگ ، یہ آپس میں جدا لوگ
بہت کچھ دیکھتا ہوں سرِ راہے کھڑا میں

میں کیا ہوں ، کس جگہ ہوں ، کہو وابستگیاں کچھ
نہ تھی کی مہک میں ، نہ پر بت کی ہوا میں

تسہیں جب تو ثنا ہو، خوشی سے لوٹ آنا
دفا قائمِ مِلوں گا، یہی میں، طے شدہ میں

वही दर्दे-मुसल्लसल¹, वही सफ़े-दुआ² में
बसर होती हुई शब, बसर होता हुआ मैं

अकेला अपना महरम³ कि अपना दूसरा मैं
नज़र मैं, आईना मैं, समाअत⁴ मैं सदा मैं

मियाने-महशरिस्ताँ⁵, अजब बेवास्ता मैं
नहीं उसकी खबर मैं, नहीं अपना पता मैं

मैं आसाँ भी कठिन भी, मगर तुम कौन मेरे
मैं आप अपना तज़ब्ज़ुब⁶, खुद अपना फ़ैसला मैं

सुकूँ नाआशना⁷ लोग, ये आपस में जुदा लोग
बहुत कुछ देखता हूँ सरे-राहे खड़ा मैं

मैं क्या हूँ, किस जगह हूँ, कंहो वाबस्ताग़ों⁸ कुछ
न भिट्टी की महक मैं, न परबत की हवा मैं

तुम्हें जब लौटना हो, खुशी से लौट आना
वफ़ा कायम मिलूँगा, यही मैं, तयशुदा मैं

1-निरंतर दर्द 2-प्रार्थनारत 3-राजदार 4-शरण 5-प्रलय स्थल के बीच 6-कलमकलम, किंकर्तव्यविपुल
7-दीन से अपरिचित 8-सम्बद्ध लोग

ہاتھ تھے روشنائی میں ڈوبے ہوئے اور لکھنے کو کوئی عبارت نہ تھی
 ذہن میں کچھ لکیریں تھیں، خاکہ نہ تھا، کچھ نشان تھے نظر میں علامت نہ تھی

زرد پتے کہ آگاہِ تقدیر تھے، ایک زائل تعلق کی تصویر تھی!
 شاخ سے سب کو ہوتا تھا آخر جُدا! ایسی اندھی ہوا کی ضرورت نہ تھی

اک رفاقت تھی زہریلی ہوتی ہوئی، راستہ منظر خود دو راہے کا تھا
 پھر وہ اک دوسرے سے جُدا ہو گئے، دونوں بچپ تھے کہ دونوں کو حیرت نہ تھی

ایک آراستہ گھر میں تھا کب سے میں، ایک صد برگ منظر میں تھا کب سے میں
 میری خاطر تھیں کیا کیا ہنر کاریاں! اک نظر دیکھنے کی بھی فرصت نہ تھی

آج رکھا ہے لمحہ ترے ہاتھ پر، لمبے اول کی لذت کو محفوظ کر
 کل نہ کہنا فلک خوش تعاون نہ تھا، کل نہ کہنا زمیں خوبصورت نہ تھی

کتنا پانی بہا لے گئی ہے ندی! کتنے منظر اڑا لے گئی ہے ہوا
 اک خزانہ کہ اب تک نہ خالی ہوا، اک زیاں تھا کہ جس کی شکایت نہ تھی

ایک اک لفظ کے سینہ زرد سے فصل صد رنگ معنی اگانا پڑی
 اپنی تقدیر میں کوئی ورثہ نہ تھا! نام اپنے کوئی بھی وصیت نہ تھی

हाथ थे रोशनाई में डूबे हुए और लिखने को कोई इबारत न थी
जहन में कुछ लकीरें थीं, खाक़ न था, कुछ निशान थे नज़र में अलामत न थी

जर्द पत्ते कि आगाहे-तक़दीर¹ थे, एक जायल तअल्लुक² की तस्वीर थे!
शाख़ से सब को छोना था आख़िर जुदा! ऐसी अंधी हवा की ज़रूरत न थी

इक रफ़ाक़त³ थी ज़हरीली होती हुई, रास्ता मुन्तज़िर⁴ ख़ुद दोराहे का था
फिर वो इक दूसरे से जुदा हो गए, दोनों घुप थे कि दोनों को डेरत न थी

एक आरास्ता⁵ घर में था कब से मैं, एक सदधर्ग⁶ भंज़र में था कब से मैं
मेरी खातिर थी क्या क्या हुनरकारियाँ! इक नज़र देखने की भी फुर्सत न थी

आज रक्खा है लम्हा तेरे हाथ पर, लम्से-अव्वल⁷ की लज़ज़त को महफूज़ कर
कल न कहना फलक ख़ुश-तआउन⁸ न था, कल न कहना ज़मीं ख़ूबसूरत न थी

कितना पानी बहा ले गई है नदी! कितने मंज़र उड़ा ले गई है हवा
इक ख़ज़ाना कि अब तक न ख़ाली हुआ, इक ज़िर्वा⁹ था कि जिसकी शिकायत न थी

एक-इक लफ़्ज़ के सीनए-जर्द¹⁰ से, फस्ले-सदरंग माअनी¹¹ उगाना पड़ी
अपनी तक़दीर में कोई विरसा न था! नाम अपने कोई भी बसीयत न थी

1-भाग्य से परिचित 2-टूटे हुए संबंध 3-मैत्री 4-प्रतीक्षारत 5-सजा हुआ 6-शतदल 7-पहला स्पर्श
8-अच्छ सहयोगी 9-नुकसान 10-दुःख भरा सीना 11-सौ रंगों वाले अर्थ की फसल

آسماں کھلتی جاے گی منظر بدلتا جاے گا
آنکھ کھلتی جاے گی منظر بدلتا جاے گا

پھیلتی جاے گی چاروں سمت اک خوش روئی
ایک موسم میرے اندر سے نکلتا جاے گا

میری راہوں میں حسین کرنیں بکھرتی جائیں گی
آخری تارا پس کہسار ڈھلتا جاے گا

بھولتا جاؤں گا گوری ساعتوں کے حادثے
قہر آئندہ بھی میرے سر سے ملتا جاے گا

راہ اب کوئی ہو، منزل کی طرف لے جاے گی
پاؤں اب کیسا پڑے، خود ہی سنبھلتا جاے گا

اک سماں کھلتا ہوا سا! اک فضا بے داغ سی
اب یہی منظر مرے ہمراہ چلتا جاے گا

بھوکے گی اب نہ میرے ہاتھ طوفانی ہوا
جس دیے کو اب جلا دوں گا وہ جلتا جاے گا

आसमाँ का सर्द सन्नाटा पिघलता जाएगा
आँख खुलती जाएगी मंजर बदलता जाएगा

फैलती जाएगी चारों सम्त इक खुशरौनकी
एक मौसम मेरे अन्दर से निकलता जाएगा

मेरी राहों में हसीं किरनें बिखरती जाएँगी
आखिरी तारा पसे-कुहसार¹ ढलता जाएगा

भूलता जाऊँगा गुजरी साअतों के हादसे
कहरे-आइन्दा² भी मेरे सर से टलता जाएगा

राह अब कोई हो, मंजिल की तरफ ले जाएगी
पाँव अब कैसा पड़े, खुद ही सँभलता जाएगा

इक समाँ खुलता हुआ सा! इक फ़ज़ा बेदाग़ सी
अब यही मंजर मेरे हमराह चलता जाएगा

छू सकेगी अब न मेरे हाथ तूफ़ानी हवा
जिस दिये को अब जला दूँगा वो जलता जाएगा

1-पर्वतमाला की पृष्ठभूमि 2-भविष्य का कहर

اے دوست میں خاموش کسی ڈر سے نہیں تھا
قائل ہی تری بات کا اندر سے نہیں تھا

ہر آنکھ کہیں دور کے منظر پہ لگی تھی
بیدار کوئی اپنے برابر سے نہیں تھا

کیوں ہاتھ ہیں خالی کہ ہمارا کوئی رشتہ
جنگل سے نہیں تھا کہ سمندر سے نہیں تھا

اب اُس کے لیے اس قدر آسان تھا سب کچھ
واقف وہ مگر سہی مکرر سے نہیں تھا

موسم کو بدلتی ہوئی اک موج ہوا تھی
مایوس میں باقی ابھی منظر سے نہیں تھا

☆

یہ ذرا سا کچھ اور ایک دم بے حساب سا کچھ
سر شام سینے میں ہانپتا ہے سراب سا کچھ

ऐ दोस्त मैं ख्रामोश किसी डर से नहीं था
 कायल ही तेरी बात का अन्दर से नहीं था

हर आँख कहीं दूर के मंजर प' लगी थी
 बेदार¹ कोई अपने बराबर से नहीं था

क्यों हाथ हैं ख्राली कि हमारा कोई रिश्ता
 जंगल से नहीं था कि समुन्दर से नहीं था

अब उसके लिए इस कदर आसान था सब कुछ
 वाकिफ़ वो मगर सइए-मुकरर² से नहीं था

मौसम को बदलती हुई इक मौजे-हवा थी
 मायूस मैं बानी अभी मंजर से नहीं था

ये ज़रा सा कुछ और एकदम बेहिसाब सा कुछ
 सरे-शाम सीने में होंपता है सराब³ सा कुछ

وہ چمک تھی کیا جو پکھل گئی ہے نواحِ جاں میں
کہ یہ آنکھ میں کیا ہے فعلہٗ زیرِ آب سا کچھ

کبھی مہرباں آنکھ سے پرکھ اس کو، کیا ہے یہ شے
ہمیں کیوں ہے سینے میں اس سبب اضطراب سا کچھ

وہ فضا نہ جانے سوال کرنے کے بعد کیا تھی
کہ پہلے تو تھے لب، ملا ہو شاید جواب سا کچھ

مرے چار جانب یہ کھینچ گئی ہے قات کیسی
یہ ڈھواں ہے ختم سفر کا یا ٹوٹے خواب سا کچھ

وہ کہے ذرا کچھ تو دل کو کیا کیا خلل ستائے
کہ نہ جانے اُس کی ہے بات میں کیا خراب سا کچھ

نہ یہ خاک کا اجتناب ہی کوئی راستہ دے
نہ اُڑان بھرنے دے، سر پہ یہ بیچ و تاب سا کچھ

سر شرح و اظہار جانے کیسی ہوا پٹی ہے
کہ بکھر گیا ہے سخن سخن، انتخاب سا کچھ

یہ بہار بے ساختہ چلی آئی ہے کہاں سے
تن زرد میں کھیل اٹھا ہے پیلے گلاب سا کچھ

वो चमक थी क्या जो पिघल गई है नवाहे-जों¹ में
कि ये आँख में क्या है शोलए-जेरे-आब² सा कुछ

कभी मेहरबाँ आँख से परख इसको, क्या है ये शै
हमें क्यों है सीने में इस सबब इज्तिराब³ सा कुछ

वो फ़ज़ा न जाने सवाल करने के बाद क्या थी
कि हिले तो ये लब, मिला हो शायद जवाब-सा कुछ

मेरे चार जानिब ये खिंच गई है क़नात⁴ कैसी
ये धुआँ है खल्मे-सफ़र का या टूटे ख़्वाब सा कुछ

वो कहे ज़रा कुछ तो दिल को क्या क्या ख़लल सताए
कि न जाने उसकी है बात में क्या ख़राब सा कुछ

न ये ख़ाक का इज्तिनाब⁵ ही कोई रास्ता दे
न उड़ान भरने दे, सर प' ये पेचो-ताब सा कुछ

सरे-शरहो-इज़हार⁶ जाने कैसी हवा चली है
कि बिखर गया है सुखन सुखन, इन्तिखाब⁷ सा कुछ

ये बहार बेसाख़्ता⁸ चली आई है कहाँ से
तने-ज़र्द⁹ में खिल उठा है पीले गुलाब सा कुछ

1-प्राणों के आत-पात 2-आँसुओं में छिपी बिंगारी 3-धेवीनी 4-कपड़े की दीवार 5-उपेक्षा, दूरी
6-अभिव्यक्ति के दौरान 7-घयन 8-अनायास 9-कुच्छलाया वदन

ارے کیا بتائیں ہوئے امکان کے کھیل کیا ہیں
کہ دلوں میں بنتا ہے ، ٹوٹتا ہے ، جناب سا کچھ

بھی ایک پل بھی نہ سانس لی کھل کے ہم نے باقی
رہا عمر بھر بسکہ جسم و جاں میں عذاب سا کچھ

☆

خطائے بسیار ہوں ، سزا دے
دلیلی بے کار ہوں ، سزا دے

میں حرفِ اثبات کا ہوں قاتل
نفسی کا اظہار ہوں ، سزا دے

نہیں ہے اب کچھ بھی مثلِ دیوار
میں آر ہوں پار ہوں ، سزا دے

نہ پوچھ اجداد کیا تھے میرے
میں ننگ ہوں ، عار ہوں ، سزا دے

تمام وزن و وقار زائل،
زوالِ معیار ہوں ، سزا دے

अरे क्या बताएँ हवाए-इम्कॉ¹ के खेल क्या हैं
कि दिलों में बनता है दूटता है, हबाब² सा कुछ

कभी एक पल भी न साँस ली खुलके हमने बानी
रहा उम्र भर बस कि जिस्मो-जाँ में अज़ाब सा कुछ

ख़ताए-बिसयार³ हूँ, सज़ा दे
दलीले-बेकार हूँ, सज़ा दे

मैं हफ़े-इस्बात⁴ का हूँ कातिल
नफी⁵ का इज़हार हूँ, सज़ा दे

नहीं है अब कुछ भी मिस्ले-दीवार
मैं आर हूँ पार हूँ, सज़ा दे

न पूछ अज़्दाद⁶ क्या थे मेरे
मैं नंग⁷ हूँ, आर⁸ हूँ, सज़ा दे

तमाम वज़नो-विकार⁹ ज़ाइल,¹⁰
ज़वाले-मेयार¹¹ हूँ, सज़ा दे

1-संभावना रूपी डवा 2-बुलबुला 3-बहुत सी भूलें 4-सकारण्यक शब्द 5-नकार 6-पूर्वज 7-शुद्र 8-तुच्छ
9-प्रतिष्ठा 10-नष्ट, बर्बाद 11-स्तर की गिरावट

طرب طرب ساری لذتوں میں
 میں زہر کی دھار ہوں ، سزا دے
 جو سارے قہقہے کی وجہ غم ہے
 وہی میں کردار ہوں ، سزا دے

☆

بہت کچھ منظر اک بات کا تھا
 کہ لمحہ لاکھ امکانات کا تھا
 بچا لی تھی ضیا اندر کی اُس نے
 وہی اک آشنا اب رات کا تھا
 رفاقت کیا ، کہاں کے مشترک خواب
 کہ سارا سلسلہ شبہات کا تھا
 بگولے اُس کے سر پر چینچے تھے
 مگر وہ آدمی پُپ ذات کا تھا
 جانی ہاتھ کا منظر تھا باقی
 کہ تابندہ ورق اثبات کا تھا

तरब-तरब¹ सारी लज़्जतों में
मैं ज़हर की धार हूँ, सज़ा दे

जो सारे किस्से की वज्हे-ग़म है
वही मैं किरदार हूँ, सज़ा दे

बहुत कुछ मुन्तज़िर² इक बात का था
कि लम्हा लाख इम्कानात³ का था

बचा ली थी ज़िया⁴ अन्दर की उसने
वही इक आशना अब रात का था

रफ़ाक़त⁵ क्या, कहीं के मुश्तरक ख़्वाब⁶
कि सारा सिलसिला शुब्हात⁷ का था

बगूले उसके सर पर चीखते थे
मगर वो आदमी चुप जात का था

हिनाई हाथ का मंज़र था बानी
कि ताबिन्दा⁸ वरक़ इस्बात⁹ का था

کیا گزشتہ و امکاں کے ہے درمیاں دیکھتے جائیں ہم
 خود کہ ہیں ایک سرمایہ رانگاں دیکھتے جائیں ہم
 اک مسلسل سیہ پوش ہوتے چرخوں کا ہے جس شب
 آگہی چاک اپنی صدا کا دھواں دیکھتے جائیں ہم
 اس ندی کے ادھر کے کنارے کا سیدھا سفر پیش ہے
 آنکھ کہتی ہے چپ چاپ آب رواں دیکھتے جائیں ہم
 کوئی سنگ سیہ اپنی ٹھوکر سے جب تک نہ ٹو کے ہمیں
 جاہ جاہ بڑھے جائیں اور آسماں دیکھتے جائیں ہم
 کچھ دھڑکتے ہوئے سلسلے کیا ہمارے علاوہ بھی ہیں
 اور کس کس کو حاصل نہیں ہے زباں دیکھتے جائیں ہم
 ہم تری زد سے محفوظ رہ پائیں گے کیا دیار خراب
 اس سے پہلے کہ ہم بھی ٹھنڈے ہوں، سماں دیکھتے جائیں ہم
 آتی جاتی ہو اب ہمارے دریدہ لباسوں میں ہے
 شے جو دل میں ہے، ٹوٹے تو سارا زیاں دیکھتے جائیں ہم

क्या गुज़स्ता-ओ-इम्काँ¹ के है दरमियाँ देखते जाएँ हम
खुद कि हैं एक सरमायए-रायगाँ² देखते जाएँ हम

इक मुसल्सल³ सियहपोश होते चरागों का है जश्ने-शब⁴
आगही चाक⁵ अपनी सदा का धुआँ देखते जाएँ हम

इस नदी के इधर के किनारे का सीधा सफ़र पेश है
आँख कहती है चुपचाप आबे-रवाँ⁶ देखते जाएँ हम

कोई संगे-सियह⁷ अपनी ठोकर से जब तक न टोके हमें
जादा जादा⁸ बढ़े जाएँ और आसमाँ देखते जाएँ हम

कुछ घड़कते हुए सिलसिले क्या हमारे अलावा भी हैं
और किस किस को हासिल नहीं है ज़बाँ देखते जाएँ हम

हम तेरी ज़द⁹ से महफूज़ रह पाएँगे क्या दयारे-ख़राब¹⁰
इससे पहले कि हम भी खण्डर हों, समाँ देखते जाएँ हम

आती जाती हवा अब हमारे दरीदा¹¹ लिबासों में है
शय जो दिल में है, टूटे तो सारा ज़ियाँ¹² देखते जाएँ हम

1-अतीत और भविष्य 2-व्यर्थ की पूँजी 3-तगातार 4-रात का जश्न 5-ज्ञान-विदीर्ण 6-प्रवाहित जल, बहता पानी 7-फ़ज़ला पत्थर 8-राह दर राह 9-निशाना 10-निर्जन स्थल 11-फटा हुआ 12-नुकसान

اک ڈھیر راکھ میں سے شرر چُن رہا ہوں میں
 خوابوں کے درمیان خبر چُن رہا ہوں میں
 کیا دل خراش کام ہوا ہے مرے سپرد
 اک زرد رُت کے برگ و ثمر چُن رہا ہوں میں
 اک خواب تھا کہ ٹوٹ گیا خوں کے جس میں
 اب ٹیند دھڑکنوں کے بھنور چُن رہا ہوں میں
 کیا جانے اُس کے عَط میں دھواں کیا ہے حرف حرف
 مفہوم چُن رہا ہوں ، اثر چُن رہا ہوں میں
 اے رمز آشنائے تجسس ، ادھر بھی دیکھ
 اندھے سمندروں سے گہر چُن رہا ہوں میں
 وہ مستقل ٹھہار ہے چاروں طرف کہ اب
 گہر کے تمام روزن و در چُن رہا ہوں میں
 باقی نظر کا زاویہ بدلا ہے اس طرح
 اب ہر فضا سے چیز دگر چُن رہا ہوں میں

इक ढेर राख में से शरर¹ चुन रहा हूँ मैं
ख्वाबों के दरमियान खबर चुन रहा हूँ मैं

क्या दिलखराश² काम हुआ है मेरे सुपुर्द
इक जर्द रुत के बर्गों-समर³ चुन रहा हूँ मैं

इक ख्वाब था कि टूट गया खूँ के हब्स⁴ में
अब तुन्द⁵ धड़कनों के भँवर चुन रहा हूँ मैं

क्या जाने उसके खत में धुआँ क्या है हर्फ हर्फ
मफहूम⁶ चुन रहा हूँ, असर चुन रहा हूँ मैं

ऐ रम्ज आशनाए-तजस्सुस,⁷ इधर भी देख
अन्धे समुन्दरों से गुहर⁸ चुन रहा हूँ मैं

वो मुस्तकिल⁹ गुबार है चारों तरफ़ कि अब
घर के तमाम रीजनो-दर¹⁰ चुन रहा हूँ मैं

बानी नज़र का जाविया¹¹ बदला है इस तरह
अब हर फज़ा से चीजे-दिगर¹² चुन रहा हूँ मैं

1-खिंगारी 2-इदय विदारक 3-पत्ते और फल 4-कैद 5-तेज़ 6-अर्ध, आशय 7-जिज्ञासा के रहस्य से परिचित 8-भोती 9-स्वार्थ 10-रीजनदान और दरवाज़ा 11-दृष्टिकोण 12-दूसरी अर्थात् अनोखी वस्तु

آج کھلا ، آنکھ میں نقشہ سراپوں کا تھا
 میں تھا اور اب سلسلہ ٹوٹتے خوابوں کا تھا
 کس نے اچھالا نہ تھا ، زہر میں ڈوبا سوال
 اور کہ اب انتظار سب کو جوابوں کا تھا
 خاک و خلا کی بہار ، ہم نے بھی دیکھی کہ جشن
 پیلے ستاروں کا تھا ، زرد گلابوں کا تھا
 پاؤں تلے آنچ سی تشنہ زمینوں کی تھی
 سر پہ نظارہ عجب اڑتے سحابوں کا تھا
 ایک سلگتی سی دُھند خوں میں بکھرنے لگی
 کھٹکیوں کی تھی بات، ذکر شرابوں کا تھا
 اب نہ کہیں بستیاں گوشہ نشینوں کی تھیں
 اور نہ تماشا کہیں خانہ خرابوں کا تھا
 اس نے دعا کے لیے ہاتھ اٹھائے نہ تھے
 لمحہ جو گزرا ابھی لاکھ ٹواہوں کا تھا

आज खुला, आँख में नशशा सराबों¹ का था
 मैं था और अब सिलसिला टूटते ख्वाबों का था

किसने उछाला न था, ज़हर में डूबा सवाल
 और कि अब इन्तिज़ार सबको जवाबों का था

खाको-खला² की बहार, हमने भी देखी कि जश्न
 पीले सितारों का था, ज़र्द गुलाबों का था

पाँवों तले आँच सी तिश्ना ज़मीनों की थी
 सर प' नज़ारा अजब उड़ते सहाबों³ का था

एक सुलगती सी धुँद खूँ में बिखरने लगी
 तिश्नगियों की थी बात, जिक्र शराबों का था

अब न कहीं बस्तियाँ गोशानशीनों⁴ की थीं
 और न तमाशा कहीं खाना-खराबों का था

उसने दुआ के लिए हाथ उठाए न थे
 लम्हा जो गुज़रा अभी लाख सवाबों⁵ का था

سب کی زبانوں پہ رات دعوے فقیری کے تھے
اور دلوں میں تمکھیں حشر حسابوں کا تھا

خاک میں خوشبو نہ تھی، گلیوں میں جگنو نہ تھے
خالی و تنہا تھے ہم، شہر عذابوں کا تھا

☆

وہ بات بات پہ جی بھر کے بولنے والا
اُلجھ کے رہ گیا ڈوری کو کھولنے والا

لو سارے شہر کے پتھر سمیٹ لائے ہیں ہم
کہاں ہے ہم کو شب و روز تولنے والا

ہمارا دل کہ سمندر تھا؛ اُس نے دیکھ لیا
بہت اُداس ہوا، زہر گھولنے والا

کسی کی موج فراواں سے کھا گیا کیا مات
وہ اک نظر میں دلوں کو ٹولنے والا

وہ آج پھر یہی ڈہرا کے چل دیا ہائی
میں بھول کے نہیں اب تجھ سے بولنے والا

सब की ज़बानों प' रात दावे फ़कीरों के थे
और दिलों में कहीं हथ्र हिसाबों का था

खाक में खुशबू न थी, गलियों में जुगनू न थे
खाली-ओ-तन्हा थे हम, शहर अज़ाबों का था

वो बात बात प' जी भर के बोलने वाला
उलझके रह गया डोरी को खोलने वाला

लो सारे शहर के पत्थर समेट लाए हैं हम
कहाँ हैं हम को शबो-रोज़ तोलने वाला

हमारा दिल कि समुन्दर था : उसने देख लिया
बहुत उदास हुआ, ज़हर घोलने वाला

किसी की मौजे-फ़रावों¹ से खा गया क्या मात
वो इक नज़र में दिलों को टटोलने वाला

वो आज फिर यही दुहरा के चल दिया बानी
मैं भूलके नहीं अब तुझसे बोलने वाला

صدائے دل عبادت کی طرح تھی
نظر، شمع شکایت کی طرح تھی

بہت کچھ کہنے والا پُپ کھڑا تھا
فضا اجلی سی حیرت کی طرح تھی

کہا دل نے کہ بڑھ کے اس کو چھو لوں
ادا خود ہی اجازت کی طرح تھی

نہ آیا وہ برے ہمراہ یوں تو
مگر اک شے رفاقت کی طرح تھی

میں تیز و سُست بڑھتا جا رہا تھا
ہوا، حرفِ ہدایت کی طرح تھی

نہ پُچھ اُس کی نظر میں کیا تھے معیار
پسند اُس کی رعایت کی طرح تھی

ملا اب کے وہ اک چہرہ لگائے
مگر سب بات عادت کی طرح تھی

सदाए-दिल, इबादत की तरह थी
नज़र, शम्प-शिकायत की तरह थी

बहुत कुछ कहने वाला चुप खड़ा था
फ़ज़ा उजली सी हैरत की तरह थी

कहा दिल ने कि बढ़के उसको छू लूँ
अदा ख़ुद ही इजाज़त की तरह थी

न आया वो मेरे हमराह यूँ तो
मगर इक शय रिफ़ाक़त¹ की तरह थी

मैं तेज़ी-सुस्त बढ़ता जा रहा था
हवा, हफ़े-हिदायत² की तरह थी

न पूछ उसकी नज़र में क्या थे मेयार
पसन्द उसकी, रिआयत की तरह थी

मिला अब कि वो इक चेहरा लगाए
मगर सब बात आदत की तरह थी

1-मेज़ी 2-निर्देश देने वाले शब्द

نہ لڑتا میں کہ تھی چھوٹی سی اک بات
مگر ایسی کہ تہمت کی طرح تھی

کوئی شے تھی : بنی جو حُسنِ اظہار
برے دل میں اذیت کی طرح تھی

☆

اپنے سینے میں کہیں میری دفا ، محفوظ کرلے
میں کہوں تیرا ہوں میں ، میرا کہا محفوظ کرلے

اس تعلق سے تجھے شاید کبھی میں یاد آؤں
شام کی اُردی چمک ، گم سُم ہوا محفوظ کرلے

اپنے آنچل پر سجالے میری کچھ سیال یادیں
میں سلکتا رنگ ہوں ، میری ضیا محفوظ کرلے

اس رواں پانی سے اک رشتہ ہے میری دھڑکتوں کا
اس ندی کی ریشمی سی نم صدا محفوظ کرلے

کچھ نہ کچھ میرا یہاں چاروں طرف بکھرا پڑا ہے
پھول سے مہتاب تک سب سلسلہ محفوظ کرلے

न लड़ता मैं कि थी छोटी सी इक बात
मगर ऐसी कि तुहमत की तरह थी

कोई शय थी : बनी जो हुस्ने-इज़हार¹
मेरे दिल में अजीयत² की तरह थी

अपने सीने में कहीं मेरी वफ़ा, महफूज़ कर ले
मैं कहूँ तेरा हूँ मैं, मेरा कहा महफूज़ कर ले

इस ताल्लुक से तुझे शायद कभी मैं याद आऊँ
शाम की ऊदी³ चमक, गुमसुम हवा महफूज़ कर ले

अपने आँचल पर सजा ले मेरी कुछ सव्याल⁴ यादें
मैं सुलगता रंग हूँ, मेरी ज़िया⁵ महफूज़ कर ले

इस रवाँ पानी से इक रिश्ता है मेरी धड़कनों का
इस नदी की रेशमी सी नम सदा महफूज़ कर ले

कुछ न कुछ मेरा यहाँ चारों तरफ़ बिखरा पड़ा है
फूल से महताब⁶ तक सब सिलसिला महफूज़ कर ले

ایک رستہ درمیاں رہنے دے جیسے کوئی ڈوری
اک سرا مجھ کو تھا دے ، دوسرا محفوظ کر لے

آخری بار اُس پہاڑی شانت مندر چل مرے ساتھ
اور بوجھل شام کی پہلی دعا محفوظ کر لے

☆

کیا کہوں کیا تھی اُڑان خود میں خبر میں نہ تھا
گم شدگی کے ہوا کچھ بھی سفر میں نہ تھا

آج دکھائی دیا جانے یہ کیا فاصلہ
تجھ کو خبر اس کی ہو ، میری نظر میں نہ تھا

کوئی عجب موج دُود اُس کی پُپ آنکھوں میں تھی
میں اُسے قائل کروں ، میرے ہنر میں نہ تھا

ادھ کھلی کھڑکی سے ہم دستیں دیکھا کیے
گھر سے نکلے نہ تھے ، چین بھی گھر میں نہ تھا

اتنے قریب آشنا ، ہم کہ ہوئے تھے نہ جب
کیا ترے دل میں نہ تھا ، کیا مرے سر میں نہ تھا

एक रस्ता दरमियाँ रहने दे जैसे कोई डोरी
इक सिरा मुझको थमा दे दूसरा महफूज़ कर ले

आखिरी बार उस पहाड़ी शान्त मन्दिर चल मेरे साथ
और बोझिल शाम की पहली दुआ महफूज़ कर ले

क्या कहूँ क्या थी उड़ान खुद मैं ख़बर में न था
गुमशुदगी के सिवा कुछ भी सफ़र में न था

आज दिखाई दिया जाने ये क्या फ़ासला
तुझको ख़बर इसकी हो, मेरी नज़र में न था

कोई अजब मौजे-दूद¹ उसकी चुप आँखों में थी
मैं उसे कायल करूँ मेरे हुनर में न था

अधखुली खिड़की से हम वुसअते² देखा किए
घर से निकलते न थे, चैन भी घर में न था

इतने क़रीब आशना हम कि हुए थे न जब
क्या तेरे दिल में न था, क्या मेरे सर में न था

سارے نشے بچھ گئے ، اب کوئی لطفِ سُرّاعِ
خیر و سکوں میں نہ تھا ، خوف و خطر میں نہ تھا

سارے مکاں ، لامکاں خالی و بے نقش تھے
برق ، خلا میں نہ تھی سانپ ، کھنڈر میں نہ تھا

ایک کو پھر ایک سے کوئی شکایت نہ تھی
دیکھ کے چُپ تھے سبھی ، کون بھنور میں نہ تھا

ریت بنی خود سراب ، رنگ بنا خود گلاب
کوئی بھی منظر کہ خواب ، میرے اثر میں نہ تھا

☆

مست اڑتے پرندوں کو آواز مت دو کہ ڈر جائیں گے
آن کی آن میں سارے اوراقِ منظر بکھر جائیں گے

شام: چاندی سی اک یاد پلکوں پہ رکھ کر چلی جائے گی
اور ہم روشنی روشنی اپنے اندر اتر جائیں گے

کون ہیں ، کس جگہ ہیں کہ ٹوٹا ہے جن کے سفر کا نشہ
ایک ڈوبی سی آواز آتی ہے پیہم کہ گھر جائیں گے

सारे नशे बुझ गए, अब कोई लुत्फे-सुराग¹
खैरो-सुकूँ² में न था, खौफो-खतर³ में न था

सारे मकौं, लामकौं⁴ खाली-ओ-बेनकश⁵ थे
बर्क, खला में न थी, साँप खण्डर में न था

एक को फिर एक से कोई शिकायत न थी
देखके चुप थे सभी, कौन भँवर में न था

रेत बनी खुद सराब,⁶ रंग बना खुद गुलाब
कोई भी मंजर कि ख़ाब, मेरे असर⁷ में न था

मस्त उड़ते परिंदों को आवाज़ मत दो कि डर जाएँगे
आन की आन में सारे औराके-मंजर⁸ बिखर जाएँगे

शाम : चाँदी सी इक याद पलकों प' रखकर, चली जाएगी
और हम रीशनी रीशनी अपने अंदर उतर जाएँगे

कौन हैं, किस जगह हैं कि दूटा है जिनके सफ़र का नशा
एक डूबी सी आवाज़ आती है पैहम⁹ कि घर जाएँगे

1-आनने का आनंद 2-शांति 3-मय 4-देहातीत 5-पहचान से परे 6-मृगतुष्णा 7-अधीन 8-दृश्य रूपी पृष्ठ 9-आरम्भार

اے ستارو جس میں اپنی جانب سے شاید نہ کچھ دے سکیں
ہم مگر راستوں میں رکھے سب چراغوں کو بھر جائیں گے

وقت میں اک جگہ سی بناتے ہوئے تیرہ لمحے بھی
کوئی اندھی کہانی مرے دل پہ تحریر کر جائیں گے

ہم نے سمجھا تھا موسم کی بے رحمیوں کو بھی ایسا کہاں
اس طرح برف گرتی رہے گی کہ دریا ٹھہر جائیں گے

آج آیا ہے اک عمر کی کڑھتوں میں عجب دھیان سا
یوں فراموشیاں کام کر جائیں گی ، زخم بھر جائیں گے

☆

دیکھیے کیا کیا ستم موسم کی من مانی کے ہیں
کپے کیسے خشک نکلے منتظر پانی کے ہیں

کیا تماشا ہے کہ ہم سے اک قدم اٹھتا نہیں
اور جتنے مرطے باقی ہیں ، آسانی کے ہیں

وہ بہت سفاک سی دھوئیں مچا کر چل دیا
اور اب جھگڑے یہاں اُس فتنے طوفانی کے ہیں

ऐ सितारो तुम्हें अपनी जानिब से शायद न कुछ दे सकें
हम मगर रास्तों में रखे सब चरागों को भर जाएँगे

वक़्त में इक जगह सी बनाते हुए तीरा लम्हे¹ यही
कोई अंधी कहानी मेरे दिल प' तहरीर कर जाएँगे

हमने समझा था मौसम की बेरहमियों को भी ऐसा कहाँ
इस तरह बर्फ़ गिरती रहेगी कि दरिया ठहर जाएँगे

आज आया है इक उम्र की फुर्कतों² में अजब ध्यान सा
यूँ फ़रामोशियाँ³ काम कर जाएँगी, ज़ख़म भर जाएँगे

37

देखिए क्या-क्या सितम मौसम की मनमानी के हैं
कैसे-कैसे खुशक खित्ते⁴ मुन्तज़िर⁵ पानी के हैं

क्या तमाशा है कि हमसे इक क़दम उठता नहीं
और जितने मरहले⁶ बाकी हैं, आसानी के हैं

वो बहुत सफ़ाक सी धूमें मचाकर चल दिया
और अब झगड़े यहाँ उस शख़से-तूफ़ानी⁷ के हैं

1-अंधकारमय क्षण 2-जुदाई 3-विस्मृतियाँ 4-क्षेत्र 5-प्रतीक्षित 6-पड़ाव 7-तीखे स्वभाव वाला व्यक्ति

اک ، عدم تاثیر لہجہ ہے مری ہر بات کا
اور جانے کتنے پہلو میری دیرانی کے ہیں

اُس کی عادت ہے گھرے رہنا دھوئیں کے جال میں
اُس کے سارے روگ اک اندھی پریشانی کے ہیں

☆

ہمیں ، لپکتی ہوا پر سوار ، لے آئی
کوئی تو موج تھی دریا کے پار لے آئی

وہ لوگ جو کبھی باہر نہ گھر سے جھانکتے تھے
یہ شب انہیں بھی سر رہ گزار لے آئی

افق سے تا بہ افق پھیلتی بکھرتی گھٹا
گئی رُتوں کا چمکتا غبار لے آئی

متاعِ وعدہ سنبھالے رہو کہ آج بھی شام
وہاں سے ایک نیا انتظار لے آئی

اُداس شام کی یادوں بھری سلگتی ہوا
ہمیں پھر آج پُرانے دیار لے آئی

इक, अदम-तासीर लहजा है मेरी हर बात का
और जाने कितने पहलू मेरी वीरानी के हैं

उसकी आदत है धिरे रहना धुएँ के जाल में
उसके सारे रोग इक अंधी परेशानी के हैं

हमें, लपकती हवा पर सवार, ले आई
कोई तो मौज थी दरिया के पार ले आई

वो लोग जो कभी बाहर न घर से झाँकते थे
ये शब उन्हें भी सरे-रहगुज़ार ले आई

उफुक से ता-ब-उफुक¹ फैलती बिखरती घटा
गई रुतों का चमकता गुबार ले आई

मताए-वादा² सँभाले रहो कि आज की शाम
वहाँ से एक नया इन्तिज़ार ले आई

उदास शाम की यादों भरी सुलगती हवा
हमें फिर आज पुराने दयार ले आई

1-कित्तिय से कित्तिय तक 2-वचन रुपी पूँजी

نہ شب سے دیکھی گئی برگِ آخری کی تھکن
 کہ یوں اوس سے اس کو اتار لے آئی
 میں دیکھتا تھا شفق کی طرف ، مگر تنہا
 پروں پہ رکھ کے عجب رنگ زار لے آئی
 بہت دنوں سے نہ سوئے تھے ہم اور آج ہوا
 کہیں سے نیند کی خوشبو اُدھار لے آئی
 وہ اک ادا کہ نہ پہچان پائے ہم باقی
 ذرا سی بات تھی ، آفت ہزار لے آئی

☆

دیکھتا تھا میں پلٹ کر ہر آن
 کس صدا کا تھا نہ جانے امکان
 اُس کی اک بات کو تنہا مت کر
 وہ کہ ہے ربطِ نوا میں گنجان
 ٹوٹ بکھری : کوئی شے تھی ایسی
 جس نے قائم کی ہماری پہچان

न शब से देखी गई बर्गे-आखिरी¹ की थकन
कि बूँद ओस से उसको उतार ले आई

मैं देखता था शफक² की तरह, मगर तितली
परों प' रखके अजब रंगज़ार³ ले आई

बहुत दिनों से न सोए थे हम और आज हवा
कहीं से नींद की खुशबू उधार ले आई

वो इक अदा कि न पहचान पाए हम बानी
ज़रा सी बात थी, आफत हज़ार ले आई

देखता था मैं पलटकर हर आन⁴
किस सदा का था न जाने इम्कान⁵

उसकी इक बात को तन्हा मत कर
वो कि है रक्ते-नवा⁶ में गुंजान⁷

टूट बिखरी : कोई शय थी ऐसी
जिसने कायम की हमारी पहचान

1-आखिरी पत्ता 2-उषा की लक्ष्मि 3-रंगों की शक्ति 4-पल 5-संभावना 6-आवाज़ का संबंध
7-सपन

لوگ منزل پہ تھے ہم سے پہلے
تھا کوئی راستہ شاید آسان

سب سے کمزور ، اکیلے ہم تھے
ہم پہ تھے شہر کے سارے بہتان

اوس سے پیاس کہاں بُجھتی ہے
موسلا دھار برس ! میری جان

کیا عجب شہرِ غزل ہے بائی
لفظِ شیطان ، سخن بے ایمان

☆

پھر وہی ٹو ساتھ میرے ، پھر وہی بستی پرانی
ایک اک رستہ ہے تیری رونقِ پا کی کہانی

اے گلِ آوارگی تیری مہک تاروں سے کھیلے
اے ندی بہتا رہے دائم ترا بیدار پانی

سبز ، نیلی دُھند میں ڈوبے پہاڑوں سے اترتی
کیا عجب منظر بہ منظر روشنی ہے ، داستانی

लोग मंजिल प' थे हमसे पहले
था कोई रास्ता शायद आसान

सबसे कमजोर, अकेले हम थे
हम पे थे शहर के सारे बोहतान¹

ओस से प्यास कहाँ बुझती है
मूसलाधार बरस! मेरी जान

क्या अजब शहरे-गजल है बानी
लफज शैतान, सुखन² बेईमान

फिर वही तू साथ मेरे, फिर वही बस्ती पुरानी
एक इक रस्ता है तेरी रौनके-पा की कहानी

ऐ गुले-आवारगी तेरी महक तारों से खेले
ऐ नदी बहता रहे दायम तेरा बेदार पानी

सब्ज, नीली, धुंध में डूबे पहाड़ों से उतरती
क्या अजब मंजर-ब-मंजर रौशनी है, दास्तानी

اک گھنے سرشار حاصل کی فضا ہے اور دونوں
اب نہیں ہے درمیاں کوئی بھی منزل، استحالی

میں کہ تھا منکر ترا، اور اب کہ میں قائل کھڑا ہوں
اے وصال! لہ لہ، اے عطائے آسمانی

☆

ہر خلش اور خواب کو ایک علامت کہوں
دُھند کو امکاں کہوں، گرد کو شہرت کہوں

برقی ہوں کوند جا، راکھ بنا دے مجھے
جا کے ہواؤں سے میں اپنی ضرورت کہوں

آج بری آنکھ میں نقہ نہ جانے ہے کیا
ریت کو منظر کہوں، دشت کو وسعت کہوں

ایک ہی جیب جنوں لائی خلا میں مجھے
اب کسے منزل کہوں، کس کو مسافت کہوں

ہوں کہ تمہارے لیے اس کے نہ معنی ہوں اور
کچھ مری چپ میں جو ہے، میں کسی صورت کہوں

इक घने सरशार हासिल की फ़ज़ा है और दोनों
अब नहीं है दरमियाँ कोई भी मंज़िल, इम्तिहानी

मैं कि था मुन्किर तेरा, और अब कि मैं कायल खड़ा हूँ
ऐ विसाले-लम्हा लम्हा, ऐ अताए-आस्मानी¹

41

हर खलिश और ख़्वाब को एक अलामत कहूँ
धुँद को इम्कों² कहूँ, गर्द को शोहरत कहूँ

बर्के-हवस³ कौंद जा, राख बना दे मुझे
जाके हवाओं से मैं अपनी जरूरत कहूँ

आज मेरी आँख में नशशा न जाने है क्या
रेत को मंज़र कहूँ, दशत⁴ को वुसअत⁵ कहूँ

एक ही जस्ते-जुनूँ⁶ लाई खला में मुझे
अब किसे मंज़िल कहूँ, किसको मुसाफत⁷ कहूँ

यूँ कि तुहारे लिए इसके न मानी हों और
कुछ मेरी चुप में जो है, मैं किसी सूरत कहूँ

1-ईश्वर 2-संभावना 3-हवस की बिकली 4-अंगल 5-विस्तार 6-उन्माद रूपी छलौंग 7-सफ़र, यात्रा

صبح کی پہلی کرن ڈھوپ بچھاتی گئی
میں ترے خط کی اسے شوخ عبارت کہوں

ناف میں گل ہے ابھی ، گل میں ہے خوشبو ابھی
صر صر شب کے حضور ، حرف سلامت کہوں

☆

اب آر پار دھیان کی مشعل کہاں ہے زیب
مخچان درد کا مرے اندر دھواں ہے زیب

گاڑھے سیاہ میں ہے لہو کی لپک نہ لہر
کیوں اس قدر بھی نقشِ نفس بے نشاں ہے زیب

کیوں بے اثر ہے میری دعا صحنِ صبح میں
کیوں شب کدے میں میری فغاں رائگاں ہے زیب

کیوں مٹھی بھر سراب سے نقصانِ دشت ہے
کیوں آنکھ بھر نمی سے چمن کا زیاں ہے زیب

کیوں بادباں پہ بوجھ ہے اک بوند اوس بھی
کس آبِ ناتواں میں سفینہ رواں ہے زیب

सुबह की पहली किरन धूप बिछाती गई
मैं तेरे खत की इसे शोख इबारत कहूँ

नाफ¹ में गुल है अभी, गुल में है खुशबू अभी
सरसरे-शब² के हुज़ूर, हफ़े-सलामत कहूँ

अब आर पार ध्यान की मशअल कहाँ है 'जेब'
गुंजान³ दर्द का मेरे अन्दर घुआँ है 'जेब'

गाढ़े सियाह में है लहू की लपक न लहर
क्यों इस कदर भी नक़्शे-नफ़स⁴ बेनिशाँ है 'जेब'

क्यों बेअसर है मेरी दुआ सहने-सुबह⁵ में
क्यों शबकदे⁶ में मेरी फुगाँ⁷ रायगाँ⁸ है 'जेब'

क्यों मुद्ठी भर सराब⁹ से नुक़साने-दशत¹⁰ है
क्यों आँख भर नमी से चमन का ज़ियाँ¹¹ है 'जेब'

क्यों बादबाँ¹² प' बोझ है इक बूँद ओस भी
किस आबे-नातवाँ¹³ में सफ़ीना रवाँ है 'जेब'

1-नाभि 2-रात की गर्म हवा 3-अत्यधिक 4-सीस का चिन्ह 5-सुबह रूपी आँगन 6-रात रूपी घर
7-बीस-फुकार 8-व्यर्थ 9-मृगतृष्णा 10-जंगल की छानि 11-नुक़सान 12-पतवार 13-कमज़ोर पानी

کیوں بار بار مجھ سے پھڑتا ہے ، کون ہے
کیوں موڑ موڑ میرے لیے استحاں ہے زیب

کیوں ایک خواب روز کی نیندوں پہ ہے محیط
کیوں اک ورق ہی میرے لیے داستاں ہے زیب

اب ارض شش جہت ہے ، نہ دریائے ہفت موج
مسار آنکھ میں عدم آساں ہے زیب

تا عمر تیرے نام سے لکھوں غزل غزل
اک درد مشترک کا سخن درمیاں ہے زیب
☆ زیب غورنی

جانے وہ کون تھا اور کس کو صدا دیتا تھا
اُس سے پھڑا ہے کوئی ، اتنا پتہ دیتا تھا

کوئی کچھ پوچھے تو کہتا کہ ہوا سے بچنا
خود بھی ڈرتا تھا بہت ، سب کو ڈرا دیتا تھا

क्यों बार बार मुझसे बिछड़ता है, कौन है
क्यों मोड़ मोड़ मेरे लिए इन्तिहाँ है 'जेब'

क्यों एक ख्वाब रोज़ की नींदों प' है मुहीत¹
क्यों इक वरक ही मेरे लिए दास्ताँ है 'जेब'

अब अर्जे-शशजिहत² है, न दरियाए-हफ्त मौज³
मिसमार⁴ आँख में अदमे-आस्माँ⁵ है 'जेब'

ताउम्र तेरे नाम से लिक्खूँ गजल गजल
इक दर्दे-मुश्तरक⁶ का सुखन दरमियाँ है 'जेब'
जेब गौरी

जाने वो कौन था और किसको सदा देता था
उससे बिछड़ा है कोई, इतना पता देता था

कोई कुछ पूछे तो कहता कि हवा से बचना
खुद भी डरता था बहुत, सबको डरा देता था

1-बैरे हुए 2-बटुपुजी धरा 3-सप्ततरंगी नदी 4-ध्वस्त 5-आकाश की अनुपस्थिति 6-साझा दर्द

اُس کی آواز کہ بے داغ سا آئینہ تھی
 تلخ جملہ بھی وہ کہتا تو مزہ دیتا تھا
 دن بھر ایک ایک سے وہ لڑتا جھگڑتا بھی بہت
 رات کے پچھلے پہر سب کو دعا دیتا تھا
 وہ کسی کا بھی کوئی نفع نہ سمجھنے دیتا
 دیکھ لیتا کہیں امکاں تو ہوا دیتا تھا
 اک ہنر تھا کہ جسے پا کے وہ پھر کھو نہ سکا
 ایک اک بات کا احساس نیا دیتا تھا
 جانے بستی کا وہ اک موڑ تھا کیا اُس کے لیے
 شام ڈھلتے ہی وہاں شمع جلا دیتا تھا
 ایک بھی شخص بہت تھا کہ خبر رکھتا تھا
 ایک تارا بھی بہت تھا کہ ضیا دیتا تھا
 رُخ ہوا کا کوئی جب پوچھتا اُس سے ہائی
 منھ ہی بھر خاک ، خلا میں وہ اڑا دیتا تھا!

उसकी आवाज कि बेदाग सा आईना थी
तल्लू जुमला भी वो कहता तो मज़ा देता था

दिन भर एक एक से वो लड़ता-झगड़ता भी बहुत
रात के पिछले पहर सब को दुआ देता था

वो किसी का भी कोई नशशा न बुझने देता
देख लेता कहीं इम्काँ¹ तो हवा देता था

इक हुनर था कि जिसे पाके वो फिर खो न सका
एक इक बात का एहसास नया देता था

जाने बस्ती का वो इक मोड़ था क्या उसके लिए
शाम ढलते ही वहाँ शम्भ जला देता था

एक भी शरूस बहुत था कि खबर रखता था
एक तारा भी बहुत था कि ज़िया² देता था

रुख हवा का कोई जब पूछता उससे बानी
मुट्ठी भर खाक, खला³ में वो उड़ा देता था ।

حال سنا تا تھا وہ ایک زمانے کا
 رستہ بھول گیا گھر لوٹ کے جانے کا
 ماضی سے ابھریں وہ زندہ تصویریں
 اتر گیا سب لقمے تھے پرانے کا
 ڈھانپ دیا سارا آکاش پرندے نے
 کیا دل کش منظر تھا پر پھیلانے کا
 گرم ، خشک رنگوں سے لاکھ وہ روپ بھرے
 ایک سخن : اُس کی پہچان بتانے کا
 ذرا ذرا سے زیاں پہ رو پڑتا ہوں میں
 بار مرے ، میں نہیں ہوں بھرے خزانے کا
 پڑھتے پڑھتے ایک لفظ سے پھیلی دُھند
 سمجھا دیا پھر اُس نے لپٹ سرہانے کا

हाल सुनाता था वो एक ज़माने का
रस्ता भूल गया घर लौटके जाने का

माज़ी¹ से उभरीं वो जिंदा तस्वीरें
उतर गया सब नशशा नए पुराने का

ढोंप दिया सारा आकाश परिंदे ने
क्या दिलकश मंज़र था पर फैलाने का

गर्म, खुनक² रंगों से लाख वो रूप भरे
एक सुखन उसकी पहचान बताने का

ज़रा ज़रा से ज़ियाँ¹ प' रो पड़ता हूँ मैं
यार मेरे, मैं नहीं हूँ भरे खजाने का

पढ़ते-पढ़ते एक लफ़्ज़ से फ़ैली धुँद
बुझा दिया फिर उसने लैम्प सरहाने का

صبح کے سبز فیم سی نوا کس کی تھی
جو ترمیمِ نغمہ فضا کس کی تھی

سارے رنگوں پہ عکسِ حنا کس کا تھا
سارے منظر پہ حادی ادا کس کی تھی

ایک بے داغ باطن سے نکلی ہوئی
بات ، بے ساختہ ، بے خطا کس کی تھی

شوخ و شائستہ موج فراواں ، مدام
اک تمنا زیادہ ذرا کس کی تھی

کون زنجیر سا تھا محافظِ مرا
ہم دی ، مرحلہ مرحلہ کس کی تھی

ہم کہ اک دوسرے کے سوا کس کے تھے
یعنی دھڑکن سے دھڑکن جدا کس کی تھی

راستے تھے ڈھلے منظروں کی طرح
آہ بن کر جو برسی ، دعا کس کی تھی

सुबह के सब्ज नम सी नवा¹ किसकी थी
मह्वे-तर्तीबे-नगमा² फ़ज़ा किसकी थी

सारे रंगों प' अक्से-हिना³ किसका था
सारे मंजर प' हावी अदा किसकी थी

एक बेदाग़ बातिन⁴ से निकली हुई
बात, बेसाख़्ता⁵ बेख़ता किसकी थी

शोख़ो-शाइस्ता⁶ मौजे-फ़रावाँ⁷, मुदाम⁸
इक तमन्ना ज़्यादा ज़रा किसकी थी

कौन जंजीर सा था मुहाफ़िज़⁹ मेरा
हमदमी¹⁰, मरहला मरहला किसकी थी

हम कि इक-दूसरे के सिवा किसके थे
यानी धड़कन से धड़कन जुदा किसकी थी

रास्ते थे धुले मंज़रों की तरह
अन्न बनकर जो बरसी, दुआ किसकी थी

1-आवाज़ 2-गीत की क्रमबद्धता में लीन 3-मैहंदी की छाया 4-अंतर्मन 5-अनायास 6-चपल एवं गंभीर
7-आधिक्य की लहर 8-सदैव 9-रखक 10-साथ

نظمیں

नज़्में

۳۱ دسمبر

اے خبر نشہ
 وضاحت زخم
 معنی کے پرندے
 سبز، سیندوری
 پلائی، ہر گیس ریشم
 ترے چاروں طرف
 وام حروف
 پھانک، تقدیس زیاں
 ویراں دسمبر کی
 سب آخر کا
 خوش لذت سفوف
 اور توانائی تراشیدہ ہندوں پر
 ٹانگ، خواہش کے غبارے
 آسانی استعارے
 طے شدہ مفہوم
 اپنے حلق سے نیچے اتار
 جھانک روشن آنکھ سے
 آفاقہٴ اسرار کے
 آبی دھوئیں میں!

31 दिसम्बर

ऐ ख़बर-तिशना¹
 वज़ाहत-ज़ख़्म²
 मानी के परिन्दे
 सब्ज़, सिन्दूरी
 तिलार्ई,³ सुर्मगीं रेशम
 तेरे चारों तरफ़
 दामे-हुल्फ⁴
 फाँक, तकदीसे-ज़ियाँ⁵
 वीरों दिसम्बर की
 शबे-आख़िर का
 खुशलज़्ज़त सफ़ूफ़⁶
 और तवानाई⁷ तराशीदा⁸ परों पर
 टाँक, ख़्वाहिश के गुबारे
 आस्मानी इस्तिआरे⁹
 तयशुदा मफ़हूम¹⁰
 अपने हल्क़ से नीचे उतार
 झाँक रौशन आँख से
 आफ़ाके-पुर असरार¹¹ के
 आबी धुएँ में!

1-ख़बर का प्यारा 2-घाव का कात्थ जानने वाला 3-स्वर्णिम 4-शब्द-आल 5-हानि की पावनता
 6-स्वादिष्ट चूर्ण 7-शक्ति 8-तराशा हुआ 9-रूपक 10-निश्चित अर्थ 11-रहस्यमयी संसार

دل نہ کر لیکن اُداس
 دیکھ اپنے پاؤں کے اُوپر تلے
 آراستہ
 فصل گداز.....
 اُجلی کپاس !!

کوئی خواب خواب سا قاصد

لب زرد پر
 کوئی حمد ہے کہ گلہ
 کہو
 مری پہلی آنکھ میں
 بچتے خوں کا
 الاؤ ہے کہ بٹلا
 کہو
 مرے دست و بازو
 میں آج بھی
 کوئی لہس قید ہے
 اور سینے کی
 بے وقاری
 کے اندروں
 کوئی حرف اپنا ہی صید ہے

दिल न कर लेकिन उदास
 देख अपने पाँव के ऊपर तले
 आरास्ता¹
 फस्ले-गुदाज़....
 उजली कपास!!

कोई ख़्वाब ख़्वाब सा फ़ासला

लबे-ज़र्द² पर
 कोई हम्द³ है कि गिला
 कहो
 मेरी पीली आँख में
 बुझते-खूँ का
 अलाव है कि तिला⁴
 कहो
 मेरे दस्तो-बाज़ू
 मैं आज भी
 कोई लम्स⁵ कैद है
 और सीने की
 बेवकारी⁶
 के अन्दरूँ⁷
 कोई हर्फ़ अपना ही सैद⁸ है

1-गुस्ताबित 2-पीले छेठ 3-ईश्वर की स्तुति 4-सोना 5-स्पर्श 6-अप्रतिष्ठा 7-भीतर 8-कैदी

کہ جسے رسائی
 نہ مل سکی
 یہ مری جھجک کی
 نمدید ہے کہ صلہ
 کہو
 کبھی ایک بات نہ کہہ سکوں
 کبھی اب، کہ چیخ
 کے روپڑوں
 مجھے چاہیے وہی
 دود دود سا
 ایک قرب کے درمیاں
 کوئی خواب خواب سا
 فاصلہ
 کوئی آج مجھ سے
 وہ بات پوچھے
 کہ جس کے معنی دور
 جانتا ہوں میں اب
 کہ ہزار شعلوں
 کی راکھ پر
 کسی نوند آنسو
 کے تیل میں
 یہ گنوائے رشتوں
 کا سرد پھول کھلا

कि जिसे रसाई¹
 न मिल सकी
 ये मेरी झिझक की
 बुरीद² है कि सिला
 कहो
 कभी एक बात न कह सकूँ
 कभी अब कि चीख
 के रो पडूँ
 मुझे चाहिए वही
 दूद दूद³ सा
 एक कुर्ब⁴ के दरमियाँ
 कोई ख्वाब ख्वाब सा
 फासला
 कोई आज मुझसे
 वो बात पूछे
 कि जिसके मानिए-दूर⁵
 जानता हूँ मैं अब
 कि हज़ार शोलों
 की राख पर
 किसी बूँद आँसू
 के सैल⁶ में
 ये गवाँए रिश्तों
 का सदर्द फूल खिला

کہو
 لب زرد پر
 کوئی حمد ہے کہ گلہ
 کہو!

دھڑکی آواز اس طرف ہے

اُجاڑی دھوپ
 آدھی ساعت
 کہنا مکمل علاقہ
 داغ داغ آنکھیں
 یہ ٹیلہ ٹیلہ
 اُترتی بھیڑیں
 کہاں ہے
 جو ان کے ساتھ ہوتا تھا
 اک فرشتہ
 کئی پھٹی زرد
 شام سے
 کون بڑھ کے پوچھے
 کہ ایک اک برگ
 آگہی کا
 ہوا کے پیلے

कहो
 लबे-ज़र्द पर
 कोई हम्द है कि गिला
 कहो!

इधर की आवाज़ इस तरफ़ है

उजाड़ सी धूप
 आधी साजत
 कि नामुकम्मल अलामतें¹
 दाग़ दाग़ आँखें
 ये टीला टीला
 उतरती भेड़ें
 कहाँ है
 जो इनके साथ होना था
 इक फरिश्ता
 कटी-फटी ज़र्द
 शाम से
 कौन बढ़के पूछे
 कि एक इक बर्ग²
 आगही³ का
 हवा के पीले

1-अधुरे प्रतीक 2-पत्ता 3-ज्ञान

لرزتے ہاتھوں سے گر رہا ہے
 تمام موسم بکھر رہا ہے
 کہ دھیمے دھیمے سے آتی شب کا
 یہ آبی منظر
 خشک ساشیشہ
 کہ وادی وادی کے درمیاں ہے
 اگر ادھر کی صدا ہے کوئی
 تو اُس طرف ہے!
 ادھر کی آواز
 اِس طرف ہے!!

نہ قائل ہوتے ہیں، نہ ذائل

نجر چہرے
 جن پر
 نہ بارش کی پہلی بوند کا
 اظہار اکتا ہے
 نہ آتے جاتے لُحوں کا
 کوئی اقرار..... انکار
 نہ اطمینان، نہ ڈر
 آنکھیں
 جن میں کوئی نگاہ

लरज़ते हाथों से गिर रहा है
 तमाम मौसम बिखर रहा है
 कि धीमे धीमे से आती शब का
 ये आबी मंज़र¹
 खुनक सा शीशा
 कि वादी वादी के दरमियों है
 अगर उधर की सदा है कोई
 तो उस तरफ़ है!
 इधर की आवाज़
 इस तरफ़ है!!

न कायल होते हैं न जायल

बंजर चेहरे
 जिन पर
 न बारिश की पहली बूँद का
 इज़हार उगता है
 न आते जाते लम्हों का
 कोई इकरार-इंकार
 न इत्मीनान, न डर
 आँखें
 जिनमें कोई निगाह

1-आर्द्रता से भरा दृश्य

پلوں سے نہیں الجھتی
 باقی حواس بھی
 خوشبو اور خوشبو کی شہرت سے
 آواز اور آواز کی قوت سے
 یکسر عاری ہیں
 کون ہیں یہ لوگ
 کس موج فضولیت کی زد میں آگئے ہیں
 چپ کھڑے ہیں
 اور ہم
 دن بھر میں
 شہر کے سارے
 فرشتوں اور شیطانوں سے
 مل کر ٹوٹ آتے ہیں
 مگر یہ چپ کھڑے ہیں
 نہ قائل ہوتے ہیں
 نہ زائل!
 ان سے ہمارا تعلق
 ابھی تک واضح نہیں ہوا
 تعلق اس لیے
 کہ ہم مزدور ہیں
 اور یہ جاننے کا
 اشتیاق رکھتے ہیں

पुलकों से नहीं उलझती
 बाकी हवास भी
 खुशबू और खुशबू की शोहरत से
 आवाज़ और आवाज़ की कुव्वत से
 यक्सर आरी¹ हैं
 कौन हैं ये लोग
 किस मौजे-फ़जूलियत² की ज़द³ में आ गए हैं
 चुप खड़े हैं
 और हम
 दिन भर में
 शहर के सारे
 फ़रिश्तों और शैतानों से
 मिलकर लौट आते हैं
 मगर ये चुप खड़े हैं
 न कायल होते हैं
 न ज़ायल
 इनसे हमारा तआल्लुक
 अभी तक वाज़ेह⁴ नहीं हुआ
 तआल्लुक इसलिए
 कि हम मज़दूर हैं
 और ये जानने का
 इश्तियाक⁵ रखते हैं

ہمیں کیا کام ملے گا
ان کے لیے ٹاور بنانے کا
کہ ان کے لیے قبریں کھودنے کا !!

ایک شبِ رقص (خانہ بدوشوں کے درمیان)

اک سننا تاوا ترہ
شب کا حسین قیام، مجلس کا
رنگ زارہ کہ جس میں
سمٹ کے آگیا
سارا کشادہ شب

اد پر

سیاہ دُھند، سرے پر
کوئی بلندی مشعل
کہ نم نواز

یک نئے کے ساتھ
کھلتے ہوئے

دَف گداز، راز

آواز

اور شعلہ آواز

جسم جسم

آواز

हमें क्या काम मिलेगा
 इनके लिए टावर बनाने का
 कि इनके लिए कब्रें खोदने का!!

एक शबे-रक्स
 (खानाबदोशों के दरमियान)

इक सनसनाता दायरा
 शब का हसीं कयाम,¹ तनफ़फ़ुस² का
 रंगज़ार³, कि जिसमें
 सिमटके आ गया
 सारा कुशादे-शब⁴
 ऊपर
 सियाह धुँद, सिरे पर
 कोई बुलन्द सी मशूअल
 कि नम नवाज़⁵
 इक लय के साथ
 खुलते हुए
 दफ़गुदाज़ राज⁶
 आवाज़
 और शोलए-आवाज़
 जिस्म जिस्म
 आवाज़

1-रुहरव 2-सौंस 3-रंग वाटिकर 4-रात्रि-विस्तार 5-नमी देनेवाली 6-डफ़ली को पिघलाने वासा रछस्य

جس طرح کوئی
 معجز بکف طلسم
 اک رقص
 درمیاں
 کہ چھٹے ہوئے
 حواس
 اک جسم
 برق برق
 مسلسل پھنوری ناف
 تحلیل، خود طواف
 اک نوندرنگ
 سُرخ دھواں، تشنہ، تشنہ تر
 سیال جسم
 سارے عناصر کے زوہر و
 صدمت آنکھ
 اور شب لامکاں کی سیر
 رقص و نوا کے
 سیل میں اہتر طلا کی پیر
 سُرخ انگلیاں
 کہ جن کی آووں سے
 لپٹی رات
 یہ بازوؤں کے درمیاں

जिस तरह कोई
 खंजर-बकफ¹ तिलिस्म
 इक रक्स²
 दरमियाँ
 कि चटखकते हुए
 हवास³
 इक जिस्म
 बर्क बर्क
 मुसल्लसल⁴ भँवर सी नाफ⁵
 तहलील,⁶ खुदतवाफ⁷
 इक बूँद रंग
 सुर्ख धुआँ, तिश्ना, तिश्नातर⁸
 सय्याल⁹ जिस्म
 सारे अनासिर¹⁰ के रू-ब-रू
 सद सप्त¹¹ आँख
 और शबे-लामकाँ¹² की सैर
 रक्सो-नवा¹³ के
 सैल¹⁴ में अब्तर¹⁵ तिलाई¹⁶ पैर
 सुर्ख उँगलियाँ
 कि जिनकी लौवों से
 लिपटती रात
 ये बाजुओं के दरमियाँ

1-खंजर में खंजर लिप 2-नाच 3-इंद्रियों 4-अनवरत 5-नाभि 6-विलीन 7-अपना परिक्रमा करनेवाला
 8-बहुत अधिक प्यासा 9-तरल 10-तत्व 11-सौ दिशावाली 12-देहातीत रात्रि 13-नृत्य-संगीत 14-बाफ़
 15-मुर्दसाग्रस्त 16-स्वर्षिम

اک روشنی
سن سن، شر شر
برہم
برہنہ اور برہنہ، برہنہ تر.....

نفی سارے حسابوں کی

لپکتا سُرخ امکاں
جو مجھے آئندہ کی
دہلیز پر لا کر کھڑا کرنے کی خواہش میں
مچلتا ہے
مرے ہاتھوں کو چھو کر
مجھ سے کہتا ہے
تمھاری انگلیوں میں
خون کم کیوں ہے
تمھارے ناخنوں میں
زردیاں کس نے سجائی ہیں
کلائی سے
ٹپکتی ہڈیوں پر
اُدن کم کیوں ہے
میں اُس سے
تا تو ایں ہی اک صد میں

इक रीशनी
 सन सन, शरर शरर¹
 बरहम²
 बरहना³ और बरहना, बरहनातर....

नफी सारे हिसाबों की

लपकता सुर्ख इम्कों
 जो मुझे आइन्दा की
 दहलीज़ पर लाकर खड़ा करने की ख्वाहिश में
 मचलता है
 मेरे हाथों को छूकर
 मुझसे कहता है
 तुम्हारी उँगलियों में
 खून कम क्यों है
 तुम्हारे नाखुनों में
 जर्दियों किसने सजाई हैं
 कलाई से निकलती हड्डियों पर
 ऊन कम क्यों है
 मैं उससे
 नातवाँ⁴ सी इक सदा में

پوچھتا ہوں
 اس سے پہلے تم کہاں تھے.....
 اس سے پہلے بھی یہی ساری زمینیں تھیں
 یہی سب آسمان تھے
 اور میری آنکھ میں
 نیلے، ہرے کے درمیاں
 اک رنگ شاید اور بھی تھا
 اب ہرے اندر نہ جھانکو
 میرے باطن میں مسلسل تیرتی ہے، اونگھتی دُنیا سراہوں کی
 نئی سارے حسابوں کی !!

کیا زمینوں کا اپنا سفر کچھ نہیں؟

اک الجھتے ہوئے رنگ میں
 شعلہ نیم تشکیک، آدھے یقین
 کے کھرتے، ہڈ اسرار آہنگ میں
 ایک آواز باریک
 سنتا ہوں میں
 تشنہ سے تشنہ تر
 جنگلوں کی حتائی مہک
 پر بتوں کا طلائی غبار
 اک سفر ساز سودا، مگر

पूछता हूँ
 इससे पहले तुम कहाँ थे....
 इससे पहले भी यही सारी ज़मीनें थीं
 यही सब आस्माँ थे
 और मेरी आँख में
 नीले, हरे के दरमियाँ
 इक रंग शायद और भी था
 अब मेरे अन्दर न झाँको
 मेरे बातिन¹ में मुसल्लसल² तैरती है, ऊँघती दुनिया सराबों³ की
 नफी⁴ सारे हिसाबों की!!

क्या ज़मीनों का अपना सफ़र कुछ नहीं?

इक उलझते हुए रंग में
 शोलए-नीम तश्कीक,⁵ आधे यर्की
 के बिखरते, पुरअसरार आहंग⁶ में
 एक आवाज़े-बारीक
 सुनता हूँ मैं
 तिश्ना से तिश्नातर
 जंगलों की हिनाई महक
 पर्वतों का तिलाई गुबार⁷
 इक सफ़र साज़ सौदा,⁸ मगर

1-हृदय 2-अनवरत 3-मरीचिका 4-त्रंकार 5-अर्द्ध शंका का शोला 6-रहस्यमयी ध्वनि 7-स्वर्षिण धूल
 8-यात्रा की उर्णग जगाने वाला उन्नाद

اوجھتی روشنی

بے سفر

بے ٹکان

لحہ نیم سوز

آرزوئے فرار

آہ

اک ملک سے

دوسرے ملک تک

تیز جھونکوں

کے معمورہ شام میں

بُعد بے نام میں

نصف جاں

مُودہ محروم

کاغذ کی کزور

اک پھڑ پھڑاہٹ

کہ جیسے کراہ !

پیٹ میں

خاروخس بھی نہیں

اور اگتا ہے

ماہ

آنکھ میں

بے وطن

ऊँघती रौशनी
 बेसफर
 बेतकान¹
 लम्हए-नीमसोज²
 आरजूए-फरार³
 आह
 इक मुल्क से
 दूसरे मुल्क तक!
 तेज झोंकों
 के मामूरए-शाम⁴ में
 बोदे-बेनाम⁵ में
 निस्फ जाँ⁶
 मुज्दा महरूम⁷
 कागज़ की कमज़ोर
 इक फड़फड़ाहट
 किं जैसे कराह!
 पेट में
 खारो-खस⁸ भी नहीं
 और उगता है
 माह⁹
 आँख में
 बेवतन

1-बकान रहित 2-अधजला क्षण 3-मुक्ति की कामना 4-शाम सपी बस्ती 5-बेनाम दूरी 6-अधमरा
 7-शुण सदिस से वचित 8-घास-पात 9-चौद

اک نگاہ
 کوئی راہ
 کوئی راہ !!
 اوس کے
 خوابِ زرتاب میں
 اک کنول
 ذہن کے پیاسے تالاب میں
 ابر کے
 ٹوٹے کا بہت منتظر
 تازہ پانی
 کی ٹوند
 اور ٹوند
 اور ٹوندوں کے
 دائم سفر
 چھوٹے چھوٹے
 حفاظت کدوں، جیسے
 مردہ دیاروں
 کی سوراخ سوراخ
 تاریخ خوردہ
 فصیلوں کو
 مہار کر!
 اے چراغِ مہِ وسال

इक निगाह
 कोई राह!
 कोई राह!!
 ओस के
 ख्वाबे-ज़रताब¹ में
 इक कँवल
 जेहन के
 प्यासे तालाब में
 अब्र के
 टूटने का बहुत मुन्तज़िर
 ताज़ा पानी
 की बूँद
 और बूँद
 और बूँदों के
 दायम सफ़र²
 छोटे-छोटे
 हिफ़ाज़तकदों,³ जैसे
 मुर्दा दयारों
 की सूराख़ सूराख़
 तारीख़ख़ुर्दा⁴
 फ़सीलों⁵ को
 मिसमार⁶ कर!

1-स्वर्णिम खन 2-अपेक्षा का सफ़र 3-मुपक्षित स्थल 4-इतिहास का ख़ाया हुआ 5-बारदीवारी 6-ध्वस्त
 7-समय का चराग़

اونچے مناروں
 کی ٹھنڈی سلوں
 سے اتر
 اور یقیں تشنہ
 خاکِ سیہ
 کو ذرا
 روشنی میں پرکھ
 کون ذرے
 کہاں دفن ہیں
 کون سرحد
 کہاں ختم ہے
 کون ہے
 جو ہمیں روکتا ہے
 لہو کے تعلق
 کی آواز کو
 روکتا ہے
 یہیں.....
 یا وہیں.....
 کیا زمینوں کا
 اپنا سفر
 کچھ نہیں!!؟

ऐ चरागे-महो-साल⁷
 ऊँचे भिनारों
 की ठण्डी सिलों
 से उतर
 और यकीं तिश्ना¹
 खाके-सियह²
 को ज़रा
 रौशनी में परख
 कौन ज़रे
 कहाँ दफ़न है
 कौन सरहद
 कहाँ खत्म है
 कौन है
 जो हमें टोकता है
 लहू के ताल्लुक
 की आवाज़ को
 रोकता है
 यहीं....
 या वहीं.....
 क्या ज़मीनों का
 अपना सफ़र
 कुछ नहीं?!!

1-विश्वास की प्यासी 2-स्याह मिट्टी अर्थात् अत्याचार से भरा संसार

گزشتہ و گزراں، گزشتہ

کوئی بار بار گرہنگی
 کبھی سُست پا کہ گریز پا
 سوئے رفتگاں
 کبھی تیز پا
 ابھی ایک لمحہ کہ حال ہے
 ضمیر فساد کا
 خیر کا
 دم دوست کا
 غم غیر کا
 کسی قہر کا
 کسی لہر کا
 کوئی لطف ہے نہ ملام ہے
 یہ متاع دید و شنید
 جیسے
 لہو کی ساری خرید
 کوئی سمیٹ لے
 یہ طویل عمروں
 کے فیصلے
 کہ..... ثوابِ صدہ و سال

गुज़श्ता-ओ-गुज़राँ, गुज़श्ता

कोई बार बार गुज़श्तगी¹
 कभी सुस्तपा² कि गुरेज़पा³
 सूए-रफ़्तगाँ⁴
 कभी तेज़पा
 अभी एक लम्हा कि हाल है
 ख़बरे-फ़साद का
 ख़ैर का
 दमे-दोस्त का
 ग़मे-ग़ैर का
 किसी कहर का
 किसी लहर का
 कोई लुत्फ़ है न मलाल है
 ये मताए-दीदो-शनीद⁵
 जैसे
 लहू की सारी ख़रीद
 कोई समेट ले
 ये तवील⁶ उम्रों
 के फ़ैसले
 कि सवाबे-सद महो-साल⁷

1-गुज़रने की क्रिया 2-धीमे क़दम 3-तेज़ क़दम 4-मृत लोगों की ओर 5-देखी-सुनी पूँजी 6-लम्बी
 7-बहुत लम्बे समय का पुण्य

پیچھے
 حروف قید توقعات
 کے سلسلے
 کہ ہے بات بات
 میں ذکر جن کا
 بہت ضروری
 یہ لاکھ قرب
 کی ناصبوری
 یہ ڈر، کہ لمحہ کے ساتھ ہی
 گنہیں بیت جائیں نہ آپ ہم
 کہ یہ آپ ہم، یہ ہمہ ہم
 یہ طرح طرح کے
 معاہدات شریک دوم
 یہ سفر سفر و خاک و نور
 قدم قدم
 کبھی اک نگاہ
 کہ دیکھتی ہے مقامِ دور
 یہ اک چمک
 کہ چلی گئی ہے جہت کے پار
 جو لوٹی ہے تو بے وقار!
 کہیں ڈو و شوق بھی رہ گیا
 صف رنگ فکر بھی رہ گئی

जैसे
 हुरूपे-कैदे-तवक्कुवात¹
 के सिलसिले
 कि है बात-बात
 में ज़िक्र जिनका
 बहुत ज़रूरी
 ये लाख कुर्ब²
 कि नासबूरी³
 ये डर, कि लम्हा के साथ ही
 कहीं बीत जाएँ न आप हम
 कि ये आप हम, ये हमा-बहम⁴
 ये तरह तरह के
 मुआहिदाते-शरीके-दम⁵
 ये सफ़र-सफ़र रहे-खाको-नूर
 कदम-कदम
 कभी इक निगाह
 कि देखती है मुक़ामे-दूर
 ये इक चमक
 कि चली गई है जेहत⁶ के पार
 जो लौटती है तो बेवकार⁷
 कहीं दूदे-शौक⁸ भी रह गया

1-अपेक्षा की शर्त के शब्द 2-निकटता 3-बेवैनी 4-तमाम साथ 5-दोस्तों की संधि 6-दिशा 7-नुक़
 8-इच्छा का धर्मा 9-चिंतन के रंगों की रेखा

کہیں رہ گیا ہے
 جلال آرزو و طلب
 کہیں رہ گئی ہے
 قلندری
 کہیں رہ گئے ہیں
 تمام مرحلے صبح کے
 کہیں رہ گئی ہے
 سکوت شب کی
 دعاگری
 کہ تمام روشنیاں ہیں رفتہ
 تمام اسم و نشان
 گزشتہ
 عظیم لفظ و بیاں
 گزشتہ
 متاع خوش ہنراں
 گزشتہ
 ردائے رنگ
 ادائے عکس
 صدائے خلق
 لوائے شخص
 گزشتہ و گزراں، گزشتہ
 کبھی کبھی

सफे-रंगे-फिक्र^१ भी रह गई
 कहीं रह गया है
 जलाले-आरजू-ओ-तलब^१
 कहीं रह गई है
 कलन्दरी
 कहीं रह गए हैं
 तमाम मरहले सुबूह के
 कहीं रह गई है
 सकूते-शब^२ की
 दुआगिरी
 कि तमाम रौशनियों हैं रफ़्ता^३
 तमाम इस्मो-निशों^४
 गुज़श्ता^५
 अज़ीम लफ़्जो-बयों
 गुज़श्ता
 मताए-ख़ुशहुरों^६
 गुज़श्ता
 रिदाए-रंग^७
 अदाए-अक्स^८
 सदाए-ख़ल्क^९
 नवाए-शाख़्स^{१०}
 गुज़श्ता-ओ-गुज़रों गुज़श्ता
 कभी कभी

1-इच्छा व आकांक्षा का तेज 2-रात की चुप्पी 3-मिट जानेवाला 4-नामोनिशों 5-मिटने वाला
 6-फलाकार की पूंजी 7-रंग की चादर 8-छाया की भंगिमा 9-अन स्वर 10-व्यक्ति की पुकार

یہ خیال آئے
 تمام مجزے بیشتر ہو گئے تمام
 ہمارے سے
 کی اب نہیں کوئی آبرو
 کوئی افتخار، مقام، نام
 کبھی، جو لمحہ قبل کے
 کہیں اندروں میں
 ذرا سا جھانکیں
 تو یوں لگے
 کہ گئیوں کے ساتھ
 چلا گیا ہے تمام وقت
 بساط ساری بشارتوں کی
 الٹ چکی ہے
 وہ زندگی ہے
 کہ سب کہیں نہ کہیں
 نسب سے جڑے ہوئے ہیں
 کہ سارے تذکرے
 طے شدہ ہیں
 گریختگی سے
 وفا کا عہد
 ہزار عہد سے ہو رہا ہے
 جو ہم سے پہلے گزر چکا ہے

ये खयाल आए
 तमाम मोअजजे¹ पेशतर हो गए तमाम
 हमारे हिस्से
 कि अब नहीं कोई आबरू
 कोई इफ़ित्खार² मुक़ाम, नाम
 कभी जो लम्हए-क़ब्ल³ के
 कहीं अन्दरूँ में
 ज़रा सा झाँकें
 तो यूँ लगे
 कि गयों के साथ
 चला गया है तमाम वक़्त
 बिसात सारी बशारतों⁴ की
 उलट चुकी है
 वो ज़िन्दगी है
 कि सब कहीं न कहीं
 नसब⁵ से जुड़े हुए हैं
 कि सारे तज़िकरे⁶
 तयशुदा हैं
 गुजश्तगी से
 वफ़ा का अह्द⁷
 हज़ार अह्द से हो रहा है
 जो हमसे पहले गुज़र चुका है

1-चमत्कार 2-गीरव 3-पूर्व क्षण 4-ख़ुशख़बरी 5-नाम, वंश 6-मृतांत 7-वचन

وہی دوبارہ گزر رہا ہے
کہ یہ بار بار کی رنگی
کبھی سست پا کہ گریز پا
سوئے رفتگاں
کبھی تیز پا.....
ابھی ایک لمحہ کہ حال ہے
کہ بسر شدہ کو
بسر کریں
کہ یہی ہمارا کمال ہے !!

वही दोबारा गुज़र रहा है
कि ये बार-बार की रफ़्तगी
कभी सुस्तपा कि गुरेज़पा
सूए-रफ़्तगौं
कभी तेज़पा....
अभी एक लम्हा कि हाल है
कि बसरशुदा को
बसर करें
कि यही हमारा कमाल है!!

ن.م.دراشد کے انتقال پر

یہ رات ہے کہ حرف و ہنر کا زیاں کدہ
 اظہار اپنے آپ میں مہمل ہوئے تمام
 اب میں ہوں اور لکھ لاکھ لاہوت کا سفیر
 مجھ دعا ہوا مرے اندر کوئی فقیر
 سینے پہ کیسا بوجھ ہے ، ہوتا نہیں سبک
 ہونٹوں کے زاویوں میں پھنسا ہے ”خدا.....خدا“
 کیا لفظ ہے کہ چہرہ سے ہوتا نہیں ادا،
 کمزور ہاتھ ہیں کہ نہیں اٹھتے سوائے بام
 اظہار اپنے آپ میں زائل ہوئے تمام
 صرف آنکھ ہے کہ دکھتی ہے چاند ، نصف گول
 اے خاموشی کی شاخ پہ بیٹھے پرند بول !

नून.मीम. राशिद के इन्तिक़ाल पर

ये रात है कि हफ़ों-हुनर का जियँकदा
 इज़हार अपने आप में मुहमल हुए तमाम
 अब मैं हूँ और लम्हए-लाहूत का सफ़ीर
 मह्वे-दुआ हुआ मेरे अन्दर कोई फ़कीर
 सीने प' कैसा बोझ है, होता नहीं सुबक
 होंटों के ज़ावियों में फँसा है "खुदा...खुदा"
 क्या लफ़ज़ है कि जीभ से होता नहीं अदा,
 कमज़ोर हाथ हैं कि नहीं उठते सूए-बाम
 इज़हार अपने आप में ज़ायल हुए तमाम
 सिर्फ़ आँख है कि देखती है चाँद, निस्फ़ गोल
 ऐ ख़ामुशी की शाख़ प' बैठे परिंद....बोल!



شوق شجر

शफ़क़ शजर

نئی غزل
اور نئی غزل کے قارئین کے نام
جنہوں نے میری آواز کو پہچانا
اور
مجھے، میری انفرادیت کا احساس دلایا
بانی

नई ग़ज़ल
और नई ग़ज़ल के क़ारईन के नाम
जिन्होंने मेरी आवाज़ को पहचाना
और
मुझे, मेरी इन्फ़रादियत का अहसास दिलाया

बानी

ہری سُنہری خاک

نئی غزلیں

हरी सुनहरी ख़ाक
नई ग़ज़लें



ہری، سُنہری خاک اُڑانے والامیں
شفق شجر تصویر بنانے والامیں
بانی



हरी सुनहरी खाक उड़ाने वाला मैं
शफ़क़ शजर तस्वीर बनाने वाला मैं
‘बानी’

ہری، سنہری خاک اڑانے والا نہیں
شوق شجر تصویر بنانے والا نہیں

خلا کے سارے رنگ سمیٹنے والی شام
شب کی مڑہ پر خواب سجانے والا نہیں

فضا کا پہلا پھول کھلانے والی صبح
ہوا کے سر میں گیت ملانے والا نہیں

باہر بھیر فصل اگانے والا تو
ترے خزانے سدا لگانے والا نہیں

چھتوں پہ بارش، دُور پہاڑی، ہلکی دھوپ
بھیننے والا، پنکھ سنکھانے والا نہیں

چار دشائیں جب آپس میں گھٹل مل جائیں
سنائے کو دُعا بنانے والا نہیں

گھٹے بنوں میں، شکھ بجانے والا تو
تری طرف گھر چھوڑ کے آنے والا نہیں

हरी सुनहरी, खाक उड़ाने वाला मैं
शफ़क़¹ शजर² तस्वीर बनाने वाला मैं

ख़ला³ के सारे रंग समेटने वाली शाम
शब की मिज़ा⁴ पर ख़्याब सजाने वाला मैं

फ़ज़ा का पहला फूल खिलाने वाली सुबह
हवा के सुर में गीत मिलाने वाला मैं

बाहर भीतर फ़सल उगाने वाला तू
तेरे ख़ज़ाने सदा लुटाने वाला मैं

छतों प' बारिश, दूर पहाड़ी, हल्की धूप
भीगने वाला, पंख सुखाने वाला मैं

चार दिशाएँ जब आपस में घुल मिल जाएँ
सन्नाटे को दुआ बनाने वाला मैं

घने बनों में, शंख बजाने वाला तू
तेरी तरफ़ घर छोड़ के आने वाला मैं

چلی ڈگر پر، کبھی نہ چلنے والا نہیں
نئے انوکھے، موڑ بدلنے والا نہیں

تم کیا سمجھو، عجب عجب ان باتوں کو
آگ کہیں ہو - یہاں ہوں جلنے والا نہیں

بہت ذرا سی اوس، بھگونے کو میرے
بہت ذرا سی آنچ، پکھلنے والا نہیں

بہت ذرا سی ٹھیس : تڑپنے کو میرے
بہت ذرا سی موج : اچھلنے والا نہیں

بہت، ذرا سا سفر : بہنکنے کو میرے
بہت، ذرا سا ہاتھ، سنہلنے والا نہیں

بہت ذرا سی صبح؛ بکنے کو میرے
بہت، ذرا سا چاند؛ مچلنے والا نہیں

بہت، ذرا سی راہ؛ نکلنے کو میرے
بہت، ذرا سی آس؛ بہلنے والا نہیں

चली डगर पर, कभी न चलने वाला मैं
 नए अनोखे, मोड़ बदलने वाला मैं

तुम क्या समझो, अजब अजब इन बातों को
 आग कहीं हो—यहाँ हूँ जलने वाला मैं

बहुत जरा सी ओस, भिगोने को मेरे
 बहुत जरा सी आँच, पिघलने वाला मैं

बहुत जरा सी ठेस : तड़पने को मेरे
 बहुत जरा सी मौज : उछलने वाला मैं

बहुत, जरा सा सफ़र : भटकने को मेरे
 बहुत, जरा सा हाथ : सम्भलने वाला मैं

बहुत, जरा सी सुबह; बिकसने को मेरे
 बहुत, जरा सा चाँद; मचलने वाला मैं

बहुत, जरा सी राह; निकलने को मेरे
 बहुत, जरा सी आस; बहलने वाला मैं

تجھے ذرا ڈکھ : اور بسکئے والا منیں
جری اداسی دیکھ نہ سکئے والا منیں

ترے بدن میں چنگاری سی کیا شے ہے
عکس ذرا سا اور چپکنے والا منیں

جرے لہو میں بیداری سی کیا شے ہے
لس ذرا سا اور مہکنے والا منیں

جری ادا میں پرکاری سی کیا شے ہے
بات ذرا سی اور جھجھکنے والا منیں

رگوں کا اک باغ حسین چہرہ تیرا
کیا کیا دیکھوں : آنکھ جھپکنے والا منیں

سنگ نہیں ہوں، بات نہ مانوں موسم کی
ہوا ذرا سی اور لچکنے والا منیں

سفر میں تنہا، قدم اٹھانا مشکل ہو
ساتھ تمہارے کبھی نہ تھکنے والا منیں

तुझे ज़रा दुख : और सिसकने वाला मैं
तेरी उदासी देख न सकने वाला मैं

तेरे बदन में चिंगारी सी क्या शै है
अक्स¹ ज़रा सा और चमकने वाला मैं

तेरे लहू में बेदारी² सी क्या शै है
लम्स³ ज़रा सा और महकने वाला मैं

तेरी अदा में पुरकारी⁴ सी क्या शै है
बात ज़रा सी और झिझकने वाला मैं

रंगों का इक बाग हसीं चेहरा तेरा
क्या क्या देखूँ : आँख झपकने वाला मैं

संग⁵ नहीं हूँ, बात न मानूँ मीसम की
हवा ज़रा सी और लचकने वाला मैं

सफर में तन्हा, कदम उठाना मुश्किल हो
साथ तुम्हारे कभी न थकने वाला मैं

گھنی گھیری رات سے ڈرنے والا میں
سٹائے کی طرح بکھرنے والا میں

جانے کون اُس پار نکاتا ہے مجھ کو
چڑھی ندی کے بیچ اترنے والا میں

زسوائی : تو زسوائی منظور مجھے
ڈرے ڈرے سے پاؤں نہ دھرنے والا میں

مرے لیے کیا چیز ہے تجھ سے بڑھ کر یار
ساتھ ہی جینے، ساتھ ہی مرنے والا میں

سب کچھ کہہ کے توڑ لیا ہے ناطہ کیا
میں کیا بولوں، بات نہ کرنے والا میں

طرح طرح کے ورق بنانے والا تو
جری خوشی کے رنگ ہی بھرنے والا میں

دائم، ابدی، وقت گزرنے والا تو
منظر، سایہ، دیکھ ٹھہرنے والا میں

घनी घनेरी रात से डरने वाला मैं
सन्नाटे की तरह बिखरने वाला मैं

जाने कौन उस पार बुलाता है मुझको
चढ़ी नदी के बीच उतरने वाला मैं

रुसवाई : तो रुसवाई मंजूर मुझे
डरे डरे से पाँव न धरने वाला मैं

मेरे लिए क्या चीज़ है तुझसे बढ़कर यार
साथ ही जीने, साथ ही मरने वाला मैं

सब कुछ कहके तोड़ लिया है नाता क्या
मैं क्या बोलूँ, बात न करने वाला मैं

तरह तरह के वरक बनाने वाला तू,
तेरी खुशी के रंग ही भरने वाला मैं

दाइम¹, अब्दी², वक़्त गुज़रने वाला तू
मंजूर, साया, देख ठहरने वाला मैं

موڑ تھا کیا، تجھے تھا کھونے والا نہیں
 رو ہی پڑا ہوں، کبھی نہ رونے والا نہیں
 کیا جھوٹا تھا، چمک گیا تن من سارا
 پتہ نہ تھا پھر راکھ تھا ہونے والا نہیں
 لہر تھی کیسی - مجھے بھنور میں لے آئی
 ندی کنارے ہاتھ بھگونے والا نہیں
 رنگ کہاں تھا، پھول کی پتی پتی میں
 کرن کرن سی ڈھوپ پر رونے والا نہیں
 کیا دن بیتا، سب کچھ آنکھ میں پھرتا ہے
 جاگ رہا ہوں، مزے میں سونے والا نہیں
 شہر خزاں ہے، زروری ادڑھے کھڑے ہیں بیڑ
 منظر منظر، نظر چھونے والا نہیں
 جو کچھ ہے اس پار، وہی اُس پار بھی ہے
 تاکہ اب اپنی آپ ڈبونے والا نہیں

मोड़ था कैसा, तुझे था खोने वाला मैं
रो ही पड़ा हूँ, कभी न रोने वाला मैं

क्या झोंका था, चमक गया तन मन सारा
पतां न था फिर राख था होने वाला मैं

लहर थी कैसी—मुझे भँवर में ले आई
नदी किनारे हाथ भिगोने वाला मैं

रंग कहाँ था, फूल की पत्ती-पत्ती में
किरण किरन सी धूप पिरोने वाला मैं

क्या दिन बीता, सब कुछ आँख में फिरता है
जाग रहा हूँ, मजे में सोने वाला मैं

शहरे-खिज़ाँ¹ है, ज़र्दी ओढ़े खड़े हैं पेड़
मंजरं मंजर, नजर चुभोने वाला मैं

जो कुछ है इस पार, वही उस पार भी है
नाव अब अपनी आप डुबोने वाला मैं

¹-पतझर रूपी नगर

کہاں تلاش کروں اب افق کہانی کا
نظر کے سامنے منظر ہے بے کرانی کا

ندی کے دونوں طرف ساری کشتیاں غم تھیں
بہت ہی تیز تھا اب کے نشہ روانی کا

میں کیوں نہ ڈوبتے منظر کے ساتھ ڈوب ہی جاؤں
یہ شام اور سمندر اداس پانی کا

پرندے پہلی اڑانوں کے بعد لوٹ آئے
لیک اٹھا کوئی احساس رائیگانی کا

میں ڈر رہا ہوں ہوا میں کہیں بکھر ہی جائے
یہ پھول پھول سا لمحہ تری نشانی کا

وہ ہنستے کھیلتے اک لفظ کہہ گیا باقی
مگر برے لیے دفتر کھلا معانی کا

☆

دوستو کیا ہے تکلف مجھے سر دینے میں
سب سے آگے ہوں میں کچھ اپنی خبر دینے میں

कहाँ तलाश करूँ अब उफुक¹ कहानी का
नज़र के सामने मंज़र है बेकरानी² का

नदी के दोनों तरफ़ सारी कश्तियाँ गुम थीं
बहुत ही तेज़ था अब के नशा खानी का

मैं क्यों न डूबते मंज़र के साथ डूब ही जाऊँ
ये शाम और समुन्दर उदास पानी का

परिन्दे पहली उड़ानों के बाद लौट आए
लपक उठा कोई एहसास रायगानी³ का

मैं डर रहा हूँ हवा में कहीं बिखर ही जाए
ये फूल फूल सा लम्हा तेरी निशानी का

वो हँसते खेलते इक लफ़्ज़ कह गया बानी
मगर मेरे लिए दफ़्तर खुला मआनी⁴ का

दोस्तो क्या है तकल्लुफ़ मुझे सर देने में
सब से आगे हूँ मैं कुछ अपनी ख़बर देने में

پھینک دینا ہے ادھر بھول وہ گا ہے گا ہے
جانے کیا دیر ہے دامن مرا بھر دینے میں

سینکڑوں گم شدہ دنیا میں دکھا دیں اس نے
آگیا لطف اُسے قلم تر دینے میں

شاعری کیا ہے کہ اک عمر گنوائی ہم نے
چند الفاظ کو امکان و اثر دینے میں

بات اک آئی ہے دل میں نہ بتاؤں اُس کو
غیب کیا ہے مگر اظہار ہی کر دینے میں

اُسے مظلوم تھا اک موج مرے سر میں ہے
وہ جھجکتا تھا مجھے حکم سفر دینے میں

میں ندی پار کروں سوچ رہا ہوں باقی
موج مصروف ہے پانی کو بھنور دینے میں

☆

8

سر سبز موسموں کا نشہ بھی مرے لیے
تلوار کی طرح ہے ہوا بھی مرے لیے

फेंक देता है इधर फूल वो गाहे-गाहे¹
जाने क्या देर है दामन मेरा भर देने में

सैंकड़ों गुमशुदा दुनियाएँ दिखा दीं उसने
आ गया लुत्फ़ उसे लुक़मए-तर² देने में

शाइरी क्या है कि इक उम्र गँवाई हमने
चन्द अल्फ़ाज को इम्कानो-असर³ देने में

बात इक आई है दिल में न बताऊँ उसको
ऐब क्या है मगर इज़हार ही कर देने में

उसे मालूम था इक मौज मेरे सर में है
वो झिझकता था मुझे हुक्मे-सफ़र⁴ देने में

मैं नदी पार करूँ सोच रहा हूँ बानी
मौज मसरूफ़⁵ है पानी को भँवर देने में

8

सरसब्ज़ मीसमों का नशा भी मेरे लिए
तलवार की तरह है हवा भी मेरे लिए

1-कभी-कभी 2-तर या रसदार निघाला 3-संभावना एवं प्रभाव 4-यात्रा का आदेश 5-ब्यस्त

میرے لیے ہیں منظر و معنی ہزار رنگ
لفظوں کے درمیاں ہے خلا بھی میرے لیے
شامل ہوں قافلے میں مگر سر میں دُھند ہے
شاید ہے کوئی راہ جدا بھی میرے لیے
میں خوش ہوا کہ مُودہ سفر کا ملا مجھے
پھیلا ہوا ہے دُشیت سزا بھی میرے لیے
دیکھوں میں آئینہ تو دُھواں پھیل پھیل جائے
بولوں تو اجنبی ہے صدا بھی میرے لیے
باتی عجب طرح سے کبھی خوش مقدری
برگِ شفق بھی، برگِ حنا بھی میرے لیے

☆

9

چاند کی اوّل کرن منظر بہ منظر آئے گی
شام ڈھل جانے دو شب زینہ اتر کر آئے گی
میرے بستر تک ابھی آئی ہے وہ خوشبوئے خواب
رفتہ رفتہ بازوؤں میں بھی بدن بھر آئے گی

मेरे लिए हैं मंजरो-मानी¹ हजार रंग
लफ़्जों के दरमियाँ है ख़ला² भी मेरे लिए

शामिल हूँ क़ाफ़िले में मगर सर में धुँद है
शायद है कोई राह जुदा भी मेरे लिए

मैं खुश हुआ कि मुज़्दा³ सफ़र का मिला मुझे
फैला हुआ है दश्ते-सज़ा⁴ भी मेरे लिए

देखूँ मैं आईना तो धुआँ फैल फैल जाए
बोलूँ तो अजनबी है सदा भी मेरे लिए

बानी अजब तरह से खिली ख़ुश-मुक़द्दरी
बर्गे-शफ़क़⁵ भी, बर्गे-हिना⁶ भी मेरे लिए

9

चाँद की अव्वल किरन मंज़र-ब—मंज़र आएगी
शाम ढल जाने दो शब ज़ीना उतर कर आएगी

मेरे बिस्तर तक अभी आई है वो ख़ुशबूए-ख़्वाब
रफ़ता रफ़ता बाजुओं में भी बदन भर आएगी

1-प्रत्यक्ष व प्रछन्न 2-शून्य 3-खुशखबरी 4-सज़ा रूपी जंगल 5-उषा (की लालिमा) रूपी पत्ता 6-मेहंदी का पत्ता

جانے وہ بولے گا کیا کیا اور تیری ہو جائے گا
کچھ سنوں گا میں تو سب تہمت یرے سر آئے گی

وہ کھڑی ہے اک روایت کی طرح دہلیز پر
سیر کا بھی شوق ہے لیکن نہ باہر آئے گی

یوں کہ تجھ سے دور بھی ہوتے چلے جائیں گے ہم
جاننے بھی ہیں صدا تیری برابر آئے گی

کیا کھڑا ندی کنارے دیکھتا ہے دستیں
کیا سمجھتا ہے کوئی موج سمندر آئے گی

کیا عجب ہوتے ہیں باطن راستوں کے سلسلے
کوئی بھی زنداں ہو باقی روشنی در آئے گی

☆

10

شوقِ فخرِ مہسوں کے زبور، نئے نئے سے
دعاؤں کی اوس چلتے منظر، نئے نئے سے

نیکِ نیشلی سدا از فصلیں، نئی نئی سی
انٹی پرندے، گلاب بستر، نئے نئے سے

जाने वो बोलेगा क्या क्या और बरी हो जाएगा
कुछ सुनूँगा मैं तो सब, तोहमत मेरे सर आएगी

वो खड़ी है इक रिवायत¹ की तरह दहलीज़ पर
सैर का भी शौक है लेकिन न बाहर आएगी

यूँ कि तुझसे दूर भी होते चले जाएँगे हम
जानते भी हैं सदा तेरी बराबर आएगी

क्या खड़ा नद्दी किनारे देखता है बसअतें²
क्या समझता है कोई मौजे-समुन्दर आएगी

क्या अजब होते हैं बातिन³ रास्तों के सिलसिले
कोई भी जिन्दों⁴ हो बानी रौशनी दर आएगी

10

शफ़क़ शजर⁵ मौसमों के जेवर नए नए से
दुआओं की ओस चुनते मंज़र नए नए से

नमक नशीली गुदाज फसलें, नई नई सी
उफ़ुक़ परिन्दे, गुलाब बिस्तार, नए नए से

1-परम्परा 2-विस्तार, फैलाव 3-अंदरूनी, भीतरी 4-जेल, कारा 5-उषा रूपी वृक्ष

خلا خلا بازوؤں کو بھرتی تھی ہوائیں
 سفر صدف بادباں سمندر، نئے نئے سے
 یہ دن ڈھلے کس کا فتنہ نہیں، نیا نیا سا
 یہ پھیلتے خواب میرے اندر نئے نئے سے
 خشک ہوا شام کی کہانی، تھی تھی سی
 پرانے غم پھر محبتوں بھر نئے نئے سے

☆

11

تمام راستہ پھولوں بھرا ہے میرے لیے
 کہیں تو کوئی دعا مانگتا ہے میرے لیے
 تمام شہر ہے دشمن تو کیا ہے ہے میرے لیے
 نہیں جانتا ہوں جڑا در کھلا ہے میرے لیے
 وہ ایک عکس کہ پل بھر نظر میں ٹھہرا تھا
 تمام عمر کا اب سلسلہ ہے میرے لیے
 گذر سکوں گا نہ اس خواب خواب بستی سے
 یہاں کی مٹی بھی زنجیر پا ہے میرے لیے

खला खला बाजुओं को भरती नई हवाएँ
सफ़र सदफ़¹ बादबाँ² समुन्दर नए नए से

ये दिन ढले किस का मुन्तज़िर³ मैं, नया-नया सा
ये फैलते ख़वाब मेरे अन्दर नए नए से

ख़ुनक हवा शाम की कहानी, नई नई सी
पुराने ग़म फिर मुहब्बतों भर नए नए से

11

तमाम रास्ता फूलों भरा है मेरे लिए
कहीं तो कोई दुआ माँगता है मेरे लिए

तमाम शहर है दुश्मन तो क्या है मेरे लिए
मैं जानता हूँ तेरा दर खुला है मेरे लिए

वो एक अक्स कि पल भर नज़र में ठहरा था
तमाम उम्र का अब सिलसिला है मेरे लिए

गुज़र सकूँगा न इस ख़वाब ख़वाब बस्ती से
यहाँ की मिट्टी भी जंजीरे-पा⁴ है मेरे लिए

1-सीपी 2-पतवार, पाल 3-प्रतीक्षित 4-पाँव की धेड़ी

یہ حُسن ختم سفر یہ ظلم خانہ جنگ
کہ آنکھ جھپکوں تو منظر نیا ہے میرے لیے

یہ کیسے کوہ کے اندر میں دُن تھا باہی
وہ ابر بن کے برستا رہا ہے میرے لیے

☆

12

کہاں گئے وہ نگر کشادہ
کھلی چھتیں اور گھر کشادہ

وہ رات خوابوں کے جگنوؤں میں
وہ، نورِ اول، سحر کشادہ

وہ آنکھ میں پورے پورے منظر
وہ پورے منظر، نظر کشادہ

افق کو جاتے ہوئے پرندے
فضا کہ پرواز بھر کشادہ

وہ رنگ، گرم و خشک، فراواں
وہ زندگی، زیادہ تر کشادہ

ये हुस्ने-खत्म सफर¹ ये तिलिस्म खानए-रंग²
 कि आँख झपकूँ तो मंज़र नया है मेरे लिए

ये कैसे कोह के अन्दर मैं दफ़न था बानी
 वो अब्र बन के बरसता रहा है मेरे लिए

12

कहाँ गए वो नगर कुशादा³
 खुली छतें और घर कुशादा

वो रात ख़ाबों के जुगनुओं में
 वो नूरे-अव्वल⁴ सहर कुशादा

वो आँख में पूरे-पूरे मंज़र
 वो पूरे मंज़र, नज़र कुशादा

उफ़ुक को जाते हुए परिन्दे
 फ़ज़ा कि परवाज भर कुशादा

वो रंग, गर्मो-ख़ूनक⁵, फ़रावाँ⁶
 वो जिन्दगी, ज़यादातर कुशादा

1-यात्रा के अंत का सौंदर्य 2-रंगों का जादूघर 3-पर्वत खुला हुआ, विस्तृत 4-प्रथम रश्मि 5-गर्भ और शीतल 6-बाहुत अधिक

وہ شہر باہر نکلتی راہیں
حسین اور اس قدر کشادہ

بہت گھنے کُرتوں کے سائے
بہت دل ہم سفر کشادہ
☆

سلسلہ روشن تجتس کا ادھر میرا بھی ہے
اے ستارو! اس خلا میں اک سفر میرا بھی ہے

چار جانب کھینچ دیں اُس نے لکیریں آگ کی
میں کہ چلایا بہت بہتی میں گھر میرا بھی ہے

جانے کس کا کیا چھپا ہے اس دھوئیں کی صف کے پار
ایک لمحے کا افق امید بھر میرا بھی ہے

راہ آساں دیکھ کر سب خوش تھے پھر میں نے کہا
سوچ لیجے، ایک انداز نظر میرا بھی ہے

اب نہیں ہے اس کی کھڑکی کے تناظر میں بھی چاند
ایک پُراسرار موسم سے گذر میرا بھی ہے

वो शहर बाहर निकलती राहें
हसीन और इस क़दर कुशादा

बहुत घने कूर्बतों¹ के साये
बहुत दिले-हमसफ़र² कुशादा ।

13

सिलसिला रौशन तजस्तुस³ का उधर मेरा भी है
ऐ सितारो! इस ख़ला में इक सफ़र मेरा भी है

चार जानिब⁴ खींच दीं उसने लकीरें आग की
मैं कि चिल्लाया बहुत बस्ती में घर मेरा भी है

जाने किस का क्या छुपा है इस धुएँ की सफ़⁵ के पार
एक लम्हे का उफुक उम्मीद भर मेरा भी है

राह आसों देखकर सब ख़ुश थे फिर मैंने कहा
सोच लीजे, एक अन्दाजे-नज़र⁶ मेरा भी है

अब नहीं है उसकी खिड़की के तनाज़ुर⁷ में भी चाँद
एक पुरअसार⁸ मौसम से गुज़र मेरा भी है

1-समीपता 2-सहयात्री का दिल 3-तलाश 4-चार तरफ़ 5-रेखा, पाँत 6-दृष्टिकोण 7-परिपार्श्व
8-रहस्यमय

یہ بساط آرزو ہے اس کو یوں آساں نہ کھیل
مجھ سے وابستہ بہت کچھ داؤ پر میرا بھی ہے

جینے مرنے کا جنوں دل کو ہوا، پائی بہت
آساں اک چاہیے مجھ کو، کہ سر میرا بھی ہے

☆

14

علی بن منشی رویا
وہی چپ تھا، وہی رویا

عجب آشوب عرفاں میں
نضا غم تھی، کہ جی رویا

یقینیں ہمارے موسم کا
کھنڈر خود سے تھی رویا

ازاں زینہ اتر آئی
سلوٹ باطنی رویا

خلا ہر ذات کے اندر
سنا جس نے وہی رویا

ये बिसाते-आरजू¹ है इसको यूँ आसाँ न खेल
मुझसे वाबस्ता² बहुत कुछ दाव पर मेरा भी है

जीने मरने का जुनूँ दिल को हुआ बानी, बहुत
आसमाँ इक चाहिए मुझको, कि सर मेरा भी है

14

अली बिन मुत्तकी रोया
वही चुप था, वही रोया

अजब आशोबे-इरफ़ाँ³ में
फ़जा गुम थी, कि जी रोया

यकीं मिसमार⁴ मौसम का
खण्डर ख़ुद से तही⁵ रोया

अजाँ जीना उतर आई
सुकूते-बातनी⁶ रोया

ख़ला हर ज़ात के अन्दर
सुना जिसने वही रोया

1-इच्छा रुपी बिसात 2-संबंधित 3-ज्ञान का उपद्रव 4-विध्वंस 5-छाती 6-अन्तर की लुप्पी

ندی پانی بہت روئی
عقیدہ روشنی رویا

سحر دم کون روتا ہے
علی دن مٹھی رویا

☆

15

ادھر آ اور ان نعیموں کے اندر دیکھ
وہ سوئے ہیں شکوں فردوس بستر دیکھ

انہی کے لب پہ شب کی حمدِ اول تھی
انہی کے بخت میں خوابوں کے دفتر دیکھ

عجب ابھی ہوئی آندھی چلی شب بھر
یہاں ٹوٹا نہیں کس شے کا محور دیکھ

فصیلی شہر کے پتھر ہوا میں تھے
مگر قائم رہی خیمے کی چادر دیکھ

اندھیرا اور اندھیرے میں پاپا محشر
مگر ان کے شکوں کو ردّ محشر دیکھ

नदी पानी बहुत रोई
अकीदा रौशानी रोया

सहर दम¹ कौन रोता है
अली बिन मुत्तकी रोया

15

इधर आ और इन खेमों के अन्दर देख
वो सोये हैं, सुकूँ फिरदौस बिस्तर² देख

इन्हीं के लब पे शब की हम्दे-अव्वल³ थी
इन्हीं के बख्त⁴ में ख्वाबों के दफ़्तर देख

अजब उलझी हुई आँधी चली शब भर
यहाँ दूटा नहीं किस शै का मिहवर⁵ देख

फ़सीले-शहर⁶ के पत्थर हवा में थे
मगर कायम रही खेमे की चादर देख

अन्धेरा और अन्धेरे में बपा महशर⁷
मगर इनके सुकूँ को रद्दे-महशर⁸ देख

1-भोर बेला 2-जन्त रूपी बिस्तर 3-पहली प्रशस्ति 4-भाग्य 5-धुरी 6-शहर की चारदीवारी 7-रंगामा
बरपा होना 8-रंगामे की प्रतिक्रिया

حصارِ حمد کے اندر پڑے سوائے
صفا و صدق کے بیٹوں کے لشکر دیکھ

ہلاکتِ خیزیوں کے درمیاں باقی
ابھرتی صبح کا محفوظ منظر دیکھ

☆

16

صدِ سوغات، سکوں فردوسِ ستمبر آ
اے رنگوں کے موسم، منظر منظر آ

آدھے اذھورے لمس نہ میرے ہاتھ پہ رکھ
کبھی سپردِ بدن سا مجھے میسر آ

کب تک پھیلائے گا دُھند مرے خون میں
جھوٹی سچی نوا میں ڈھل کر لب پر آ

مجھے پتہ تھا اک دن لوٹ کے آئے گا تُو
زکا ہوا دلہیز پہ کیوں ہے اندر آ

اے پیہم پرواز پرندے، دم لے لے
نہیں اترتا آنگن میں تو چھت پر آ

हिसारे-हम्द¹ के अन्दर पड़े सोए
सिफ़ा-ओ-सिद्क² के बेटों के लश्कर देख

हलाक़त-ख़ेज़ियों³ के दरमियाँ बानी
उभरती सुब्ह का महफूज़⁴ मंज़र देख

16

सद⁵ सौगात, सुकूँ फ़िरदौस⁶ सितम्बर आ
ऐ रंगों के मौसम, मंज़र मंज़र आ

आधे-अधूरे लम्स⁷ न मेरे हाथ प' रख
कभी सुपुर्द बदन⁸ सा मुझे मयस्सर आ

कब तक फ़ैलाएगा धुंद मेरे छूँ में
झूठी सच्ची नवा⁹ में ढलकर लब पर आ

मुझे पता था इक दिन लौटके आएगा तू
रुका हुआ दहलीज़ प' क्यों है अन्दर आ

ऐ पैहम-परवाज़ परिन्दे¹⁰, दम ले ले
नहीं उतरता आँगन में तो छत पर आ

1-तारीफ़ (खुदा की) रूपी अहाता 2-सच्चाई 3-क़त्लो-ग़ारत, मार-काट 4-सुरक्षित 5-सी 6-स्वर्ग 7-स्पर्श
8-समर्पित शरीर 9-आवाज़ 10-हरदम उड़ते रहने वाले पंछी

اُس نے عجب کچھ پیار سے اب کے لکھا ہائی
 بہت دنوں پھر گھوم لیا، واپس گھر آ

☆

17

غائب ہر منظر میرا
 ڈھونڈ پندے گھر میرا

جنگل میں غم فصل میری
 ندی میں غم پتھر میرا

دُعا میری غم صر صر میں
 بھنور میں غم محور میرا

ناف میں غم سب خواب میرے
 ریت میں غم بستر میرا

سب بے نور قیاس میرے
 غم سارا دفتر میرا

کبھی کبھی سب کچھ غائب
 نام، کہ غم اکثر میرا

उस ने अजब कुछ प्यार से अबके लिखा बानी
बहुत दिनों फिर घूम लिया, वापस घर आ

17

गायब हर मंज़र मेरा
ढूँड परिन्दे घर मेरा

जंगल में गुम फ़स्ल मेरी
नदी में गुम पत्थर मेरा

दुआ मेरी गुम सरसर¹ में
भँवर में गुम मिहवर² मेरा

नाफ³ में गुम सब ख़्वाब मेरे
रेत में गुम बिस्तर मेरा

सब बेनूर क़यास⁴ मेरे
गुम सारा दफ़्तर मेरा

कभी कभी सब कुछ ग़ायब
नाम; कि गुम अक्सर मेरा

1-रेगिस्तानी हवा 2-घुरी, केन्द्र 3-नाभि 4-अनुमान

میں اپنے اندر کی بہار
 باقی کیا باہر میرا

☆

18

منظر گیر نظر تیری
 چاروں سمت خبر تیری

چار دیے روشن تیرے
 رات کے بعد سحر تیری

لبے کوس سفر تیرا
 چھاؤں شجر شجر تیری

موسم شفق شفق تیرے
 فصلیں شمر شمر تیری

آگے عکس سفر تیرا
 پیچھے یاد سفر تیری

کیا کیا افق دکھاتی ہے
 باتیں خواب اثر تیری

मैं अपने अन्दर की बहार
बानी क्या बाहर मेरा

18

मंजुरगीर नजर¹ तेरी
चारों समत खबर तेरी

चार दीये रौशन तेरे
रात के बाद सहर तेरी

लम्बे कोस सफ़र तेरा
छाँव शजर शजर² तेरी

मीसम शफ़क शफ़क³ तेरे
फसलें समर समर⁴ तेरी

आगे अक्से-सफ़र⁵ तेरा
पीछे यादे-सफ़र तेरी

क्या क्या उफुक दिखाती है
बातें ख़वाब असर⁶ तेरी

1-मुश्य को फ़ैद करने वाली वृष्टि 2-पेड़ दर पेड़ 3-उषा-धर-उषा 4-हर फल में 5-सफ़र की, छाया
6-छाया की तरह असर करनेवाली

تھا دیکھنے والا میں
ایک ادائے دگر تیری

☆

19

رہی ملاقات زو بہ زو کی
ڈھواں بدن کا، مہک لہو کی

میں تپتی درمیاں نہ لادوں
فضا رکھوں سبز گنگو کی

چمک رہی ہے کوئی عجب شے
قیاس سے آگے جستجو کی

وہ لمحہ کیا خامشی کا ٹوٹا
نوا ہوئی زعمہ چار سو کی

وہ لمس زاہد فصل بہاہ بستر
شگفتہ شب فصل آرزو کی

☆

तन्हा देखने वाला मैं
 एक अदाए-दिगर¹ तेरी

19

वही मुलाक़ात रू-ब-रू की
 धुआँ बदन का, महक लहू की

मैं तिश्नगी दरमियों न लाऊँ
 फज़ा रखूँ सब्ज़ गुफ़्तगू की

चमक रही है कोई अजब शै
 कयास² से आगे जुस्तजू की

वो लम्हा क्या ख़ामुशी का टूटा
 नवा³ हुई ज़िन्दा चार सू की

वो लम्सज़ारे-बहारे-बिस्तर⁴
 शगुफ़्ते-शब⁵ फ़स्ल आरजू की

1-असग, अनोखी अदा 2-अनुमान 3-आवाज़ 4-बिस्तर के आनंद का स्पर्श-स्वल्प 5-रात की मुस्कान

اک زیاں فردا بہ فردا ہے، یہاں کیا جاگے
بس کہ ہیں منظر کا حصہ، لاکھ تنہا جاگے

ڈھوپ ٹم کر دے گی سب کچھ ساعتِ اول کے بعد
ناف میں رکھ لیجیے، پچھلے کا تارا جاگے

کم نہ ہوگی خواب اندر خواب اندھی لنگھی
کچھ نہ کچھ اوجھل رہے گا، خواہ کتنا جاگے

اک کرن کھڑکی سے بستر تک شفق مڑوہ ہوئی
اور اُترا صحن میں روشن پرندا جاگے

آنکھ میں بھر لیجیے پہلا ساں آکاش کا
پل میں ہو جائے گا باقی سب پرانا جاگے

دہی محور پرانے
دلوں کے ڈر پرانے

इक ज़ियाँ¹ फ़र्दा-ब-फ़र्दा² है, यहाँ क्या जागिए
बस कि हैं मंज़र का हिस्सा, लाख तन्हा जागिए

धूप गुम कर देगी सब कुछ साअते-अव्वल³ के बाद
नाफ़⁴ में रख लीजिए, पिछले का तारा जागिए

कम न होगी ख़वाब अन्दर ख़वाब अन्धी तिशनगी
कुछ न कुछ ओझल रहेगा, ख़ाह⁵ कितना जागिए

इक किरन खिड़की से बिस्तर तक शफ़क़ मुज़दा⁶ हुई
और उत्तरा सहन में रौशन परिन्दा जागिए

आँख में भर लीजिए पहला समों आकाश का
पल में हो जाएगा बानी सब पुराना जागिए

वही मिहवर⁷ पुराने
दिलों के डर पुराने

1-नुकसान 2-आने वाला कल दर कल 3-पहली घड़ी 4-नाभि 5-चाहे 6-उषा का शुभ सदेश 7-धुरी

کہیں سے لا وہی پھول
وہی پتھر پرانے

وہی اُچلے سے آگن
وہی سب گھر پرانے

وہی تڑی، وہی چاند
وہی منظر پرانے

وہی ہر شب نئے خواب
وہی بستر پرانے

وہی آرائش صبح
وہی زیور پرانے

وہی باہر نئے سے
وہی اندر پرانے

☆

بدن بیدار اُس کا
نشہ ہشیار اُس کا

कहीं से ला वही फूल
वही पत्थार पुराने

वही उजले से आँगन
वही सब घर पुराने

वही नद्दी, वही चाँद
वही मंज़र पुराने

वही हर शब नए ख़्वाब
वही बिस्तर पुराने

वही आराइशे-सुब्ह¹
वही ज़ेवर पुराने

वही बाहर नए से
वही अन्दर पुराने

बदन बेदार² उसका
नशा हुशयार उसका

شفق تحریر اُس کی
ہوا اظہار اُس کا

ابھی رکتا وہاں نہیں
نہ تھا اصرار اُس کا

وہ کوتاہی ذرا سی
سفر دُشوار اُس کا

کوئی تو خطر ہے
ندی کے پار اُس کا

جو شام اب ڈھل رہی ہے
میں شب بردار اُس کا

کہیں اک میں نہیں ہوں
یہ سب گھر بار اُس کا

शफ़क़ तहरीर¹ उसकी
हवा इज़हार उसका

अभी रूकता वहाँ मैं
न था इसरार² उसका

वो कोताही ज़रा सी
सफ़र दुश्वार उसका

कोई तो मुन्तज़िर³ है
नदी के पार उसका

जो शाम अब ढल रही है
मैं शब बरदार⁴ उसका

कहीं इक मैं नहीं हूँ
ये सब घर बार उसका

خلیل الرحمن اعظمی کی یاد میں

دلوں میں خاک سی اڑتی ہے کیا، نہ جانے کیا
تلاش کرتی ہے پل پل ہوا، نہ جانے کیا

ذرا سا کان لگا کے کبھی سنو گئے رات
کہیں سے آتی ہے غم صم صدا، نہ جانے کیا

مسافروں کے دلوں میں عجب خزانے تھے
زیاں سفر تھا مگر راستہ، نہ جانے کیا

وہ کہہ رہا تھا نہ جھانکوں گا آج صبح اس میں
مجھے دکھائے یہی آئینہ، نہ جانے کیا

دُعا کے پھول کی خوشبو سا پھیلنے والا
وہ خود میں ڈھونڈتا تھا، غم ہدہ، نہ جانے کیا

نہیں ہے کس کی نظر میں افق کوئی نہ کوئی
اُس آنکھ میں تھی کوئی شے جدا، نہ جانے کیا

ख़लीलुर्हमान आजमी की याद में

दिलों में खाक सी उड़ती है क्या, न जाने क्या
तलाश करती है पल पल हवा, न जाने क्या

जरा सा कान लगाके कभी सुनो गए रात
कहीं से आती है गुमसुम सदा, न जाने क्या

मुसाफ़िरोँ के दिलों में अजब ख़ज़ाने थे
ज़ियाँ सफ़र¹ था मगर रास्ता, न जाने क्या

वो कह रहा था न झाँकूँगा आज सुबह इसमें
मुझे दिखाए यही आईना, न जाने क्या

दुआ के फूल की खुशबू सा फैलने वाला
वो खुद में ढूँडता था, गुमशुदा, न जाने क्या

नहीं है किसकी नज़र में उफ़ुक² कोई न कोई
उस आँख में थी कोई शै जुदा, न जाने क्या

تمام شہر میں گاڑھے دھوئیں کا منظر ہے
 لکھا ہوا تھا یہاں جا بہ جا، نہ جانے کیا
 وہی پھڑتے دلوں کی فضائے اشک آلود
 وہی سفر کہ پُرانا، نیا، نہ جانے کیا
 نکل گیا ہے خلاؤں کی سمت اے باہی
 نواح جاں سے گذرتا ہوا، نہ جانے کیا

☆

خواب میں کوئی خبر رکھ دینا
 شب کے ہونٹوں پہ سحر رکھ دینا
 راستہ ختم جہاں ہوتا ہے
 اک سفر اور ادھر رکھ دینا
 اب کے ملنا تو میرے سینے میں
 موج رکھ دینا، بھنور رکھ دینا
 ٹانگ دینا میرے رستے میں شفق
 شاخ پر برگ و ثمر رکھ دینا

तमाम शहर में गाढ़े धुएँ का मंज़र है
लिखा हुआ था यहाँ जा-ब-जा,¹ न जाने क्या

वही बिछड़ते दिलों की फजाए-अशकआलूद²
वही सफ़र कि पुराना, नया, न जाने क्या

निकल गया है झालाओं की सम्त³ ऐ बानी
नवाहे-जाँ⁴ से गुज़रता हुआ, न जाने क्या

24

ख़्वाब में कोई ख़बर रख देना
शब के होंटों प' सहर रख देना

रास्ता ख़त्म जहाँ होता है
इक सफ़र और उधर रख देना

अबके मिलना तो मेरे सीने में
मौज⁵ रख देना, भँवर रख देना

टाँक देना मेरे रस्ते में शफ़क़⁶
शाख़ पर बर्गों-समर⁷ रख देना

1-जगह-जगह 2-औसुओं से भरत माहील 3-शून्य की ओर 4-आला के निकट 5-सहर 6-उषा की लालिमा 7-फल-पात

بے پناہی کا سفر دینا بھی
 دل میں تھوڑا سا خطر رکھ دینا
 بھیجنا تحفہ امکاں مجھ کو
 اور عبارت میں اثر رکھ دینا
 اب کے وہ خواب دکھانا باقی
 اوس کے دل میں شر رکھ دینا
 ☆

اے بچے رنگوں کی شام، اب تک دُھواں ایسا نہ تھا
 آج گھر کی چھت سے دیکھا آسماں ایسا نہ تھا
 کب سے ہے گرتے ہوئے پتوں کا منظر آنکھ میں
 جانے کیا موسم ہے، خوابوں کا زیاں ایسا نہ تھا
 کوئی شے لہرا ہی جاتی تھی فصیلِ شب کے پار
 دُور اُفق میں دیکھنا، کچھ رانگاں ایسا نہ تھا
 بیڑ تھے، سائے تھے، پگڈنڈی تھی اک جاتی ہوئی
 کیا یہ سب کچھ خواب تھا، سچ سچ یہاں ایسا نہ تھا

बेपनाही का सफ़र देना भी
दिल में थोड़ा सा ख़तर¹ रख देना

भेजना तोहफ़ए-इमकाँ² मुझको
और इबादत में असर रख देना

अबंके वो ख़बाब दिखाना बानी
औस के दिल में शरर³ रख देना

25

ऐ बुझे रंगों की शाम, अब तक धुआँ ऐसा न था
आज घर की छत से देखा आसमाँ ऐसा न था

कब से है गिरते हुए पत्तों का मंज़र आँख में
जाने क्या मौसम है, ख़ाबों का ज़ियाँ⁴ ऐसा न था

कोई शै लहरा ही जाती थी फ़सीले-शब⁵ के पार
दूर उफ़ुक में देखना, कुछ रायगाँ⁶ ऐसा न था

पेड़ थे, साये थे, पगडण्डी थी, इक जाती हुई
क्या ये सब कुछ ख़ाब था, सचमुच यहाँ ऐसा न था

1-आसका 2-संभाषनाओं का उपहार 3-विंगारी 4-क्षति 5-रात की चारदीवारी 6-व्यर्थ

فاصلہ کم کرنے والے راستے شاید نہ تھے
اب تو لگتا ہے، سفر ہی درمیاں ایسا نہ تھا

دل کہ تھا مائل بہت، ویراں جزیروں کی طرف
یہ ہوا ایسی نہ تھی، یہ بادباں ایسا نہ تھا

کوئی گوشہ خواب کا سا ڈھونڈ ہی لیتے تھے ہم
شہر اپنا شہر باقی بے اماں ایسا نہ تھا

☆

عجب تھا ذائقہ اُس ایک لمسِ لرزاں کا
کھلا دیا ہے بدن میں گلاب اماں کا

نواحِ جاں سے شفق تک ہوائیں چلنے لگیں
وہی ہے دل، وہی موسمِ اسیدِ آساں کا

کہاں سے ایسا کوئی حرفِ منتخب لائیں
کہ ہم پہ سہل ہو اظہارِ دردِ انساں کا

ذرا سی بے خبری کا گذر نہ تھا اس میں
سفر کے ساتھ عجب سلسلہ تھا ارماں کا

फ़ासला कम करने वाले रास्ते शायद न थे
अब तो लगता है, सफ़र ही दरमियाँ ऐसा न था

दिल कि था माइल¹ बहुत, वीरों जज़ीरों² की तरफ़
ये हवा ऐसी न थी, ये बादबाँ³ ऐसा न था

कोई गोशा⁴ ख़्वाब का सा ढूँड ही लेते थे हम
शहर, अपना शहर बानी बेअमाँ⁵, ऐसा न था

26

अजब था ज़ायका उस एक लम्से-लज़ा⁶ का
खिला दिया है बदन में गुलाब इम्काँ⁷ का

नवाहे-जों⁸ से शफ़क़ तक हवाएँ चलने लगीं
वही है दिल, वही मौसम, उमीदे-आसाँ का

कहाँ से ऐसा कोई हफ़े-मुंतख़ब⁹ लाएँ
कि हम पे सहल¹⁰ हो इज़हार दर्दे-इंसाँ का

ज़रा सी बेख़बरी का गुज़रना था उसमें
सफ़र के साथ अजब सिलसिला था अरमाँ का

1-प्रवृत्त 2-क्षीप, टापू 3-मतधार 4-कोना 5-असुरक्षित 6-कम्पित स्पर्श 7-संभावना 8-प्राणों के निकट
9-चुना हुआ शब्द 10-आसान

مجھے بھی یاد تو ہوگی ہوائے دل داری
سرک گیا تھا کنارے ترے گریباں کا

کہیں کہیں سے کوئی بات یاد آتی ہے
کتنا پھٹا سا ورق ہوں کتابِ نسیاں کا

پھنڑ گیا وہ کسی موجِ مست کی مانند
مگر کہ ہوش مجھے بھی نہیں تھا پیاں کا

فضیل جعفری تم نے یہ شعر لکھوائے
تمہارا خط تھا کہ دشمن ہوا دل و جاں کا

☆

خط کوئی پیار بھرا لکھ دینا
مشورہ لکھ دینا، دُعا لکھ دینا

کوئی دیوار شکستہ ہی سہی
اُس پہ تم نامِ مرا لکھ دینا

کتنا سادہ تھا وہ امکاں کا نشہ
ایک جھونکے کو ہوا لکھ دینا

तुझे भी याद तो होगी हवाए-दिलदारी
सरक गया था किनारा तेरे गिरेबाँ का

कहीं. कहीं से कोई बात याद आती है
कटा फटा सा वरक हूँ किताबे-निसुयों¹ का

बिछड़ गया वो किसी मौजे-मस्त की मानिन्द
मगर कि होश मुझे भी नहीं था पैमों² का

फुजैल जाफरी तुमने ये शेर लिखवाए
तुम्हारा खत था कि दुश्मन हुआ दिलो-जाँ का

27

खत कोई प्यार भरा लिख देना
मशुविरा लिख देना, दुआ लिख देना

कोई दीवारे-शिकस्ता³ ही सही
उस प' तुम नाम मेरा लिख देना

कितना सादा था वो इम्कों⁴ का नशा
एक झोंके को हवा लिख देना

1-भूली हुई किताब 2-चादा 3-टूटी हुई दीवार 4-संभावना

کچھ تو آکاش میں تصویر سا ہے
مُسکرا دے تو خدا لکھ دینا

برگِ آخر نے کہا لہرا کے
مجھے موسم کی آنا لکھ دینا

ہاتھ لہراتا ہوا میں اُس کا
اور پیغامِ جانا لکھ دینا

سبز کو سبز نہ لکھتا ہائی
فصل لکھ دینا، نضا لکھ دینا

कुछ तो आकाश में तस्वीर सा है
मुस्करा दे तो छुदा लिख देना

बर्गे-आखिर¹ ने कहा लहराके
मुझे मौसम की अना² लिख देना

हाथ लहराना, हवा में उसका
और पैगामे-हिना लिख देना

सब्ज को सब्ज न लिखना बानी
फुसल³ लिख देना, फ़ज़ा लिख देना



بانی کا شمار اردو کے اہم ترین شعرا میں ہوتا ہے۔ جدید اردو غزل گو یوں میں بانی اپنے لب و لہجے کی بنا پر دور سے پہچانے جاتے ہیں۔ ان کے شعری مجموعے 'حرفِ معتبہ'، 'حسابِ رنگ' اور 'شفقِ شجر' کے نام سے شائع ہوئے ہیں۔ ان تینوں مجموعوں کو بہت سراہا گیا۔ بانی کے یہ اشعار تو ضرب المثل کی حیثیت اختیار کر چکے ہیں۔

پیہم موجِ امکانی میں
 اگلا پانوئے پانی میں
 وہ اپنے ٹوٹے رشتوں کا حسنِ آخر تھا
 کہ چپ سی لگ گئی دونوں کو بات کرتے ہوئے
 چلی ڈگر پر کبھی نہ چلنے والا میں
 نئے انوکھے موڑ بدلنے والا میں

ان کا نام 'ابنٹی غزل' کے تجربے سے بھی وابستہ رہا ہے۔ مگر بانی کی شاعرانہ حیثیت اس تجربے سے وابستگی کی محتاج نہیں۔ وہ جدید نظم گو یوں میں بھی امتیازی حیثیت رکھتے ہیں۔ ان کا کلیات پروفیسر گو بند پر شاد نے ترتیب دیا ہے، جو سنر آف انڈین لٹریچر، جواہر لال نہرو یونیورسٹی میں ہندی کے پروفیسر ہیں۔ ان کی اردو ادب میں بھی گہری دلچسپی ہے۔ وہ فراق کی کتاب 'اردو کی عشقیہ شاعری' کا ہندی میں ترجمہ کر چکے ہیں۔ ان کی کئی کتابیں شائع ہو چکی ہیں جن میں 'کوئی ایسا شہد دو' میں نہیں تھا لکھتے سے، 'ورتمان کی دھول' (شعری مجموعے)، 'کویتا کے سمکھ'، 'کیدار ناتھ سنگھ کی کویتا'، 'دب سے آکھیم تک'، 'آلاپ اور اترنگ'، 'مزا لوچن کے بارے میں' اور 'اردو کا ابتدائی زمانہ' (ترجمہ) خصوصی اہمیت کی حامل ہیں۔

ISBN: 978-93-87510-00-5



9 789387 510005



₹ 180/-

قومی کونسل برائے فروغِ اردو زبان
 وزارت ترقی انسانی وسائل، حکومت ہند
 فروغِ اردو بھون، ایف سی، 33/9،
 انسٹیٹیوٹل ایریا، جسولا، نئی دہلی۔ 110025